रोशनी संयम की

(शासनश्री साध्वी सूरजकुमारी 'जयपुर' का जीवन वृत्त)

साध्वी रायकंवर
साध्वी मनीषाप्रभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रोशनी संयम की

शासनश्री साध्वी सूरजकुमारी 'जयपुर'
जीवन वृत्त

शासनश्री साध्वी रायकंवर
साध्वी मनीषाप्रभा

प्रकाशन : जैन विश्व भारती

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ाब्दी का महाचरण, बीदासर

शासनगौरव साध्वीकमलूजी के
5 भगिनी ए

रण, बीदासर में इतिहास सम्राट महातपस्वी
ारीजी अमृतवर्षण का वरदान मांग रही है।

उल्लासनगर चातुर्मास में प्रवचन करती साध्व
साध्वी रायकुमारीजी, साध्वी ज

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रोशनी संयम की
(शासनश्री साध्वी सूरजकुमारी 'जयपुर' जीवन वृत्त)

लेखन :
शासनश्री साध्वी रायकंवर
साध्वी मनीषाप्रभा

सम्पादन :
महेन्द्र जैन
राजेन्द्र बांठिया

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं 341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : 01581-226080/224671
फैक्स : 01581-227280
e-mail : jainvishvabharati@yahoo.com

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

ISBN - 81-7195-287-9

प्रथम संस्करण : 2015

मूल्य : ₹ 80 (अस्सी रुपया मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर
फोन : 294-2418482

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रोशनी : संयम की
(साध्वी सूरजकुमारी 'जयपुर' जीवनवृत्त)

अनुक्रम

1.	गुलाबीनगर में सुनहरी भोर	1
2.	संयम के पथ पर	9
3.	स्वतन्त्र कार्यभार	12
4.	उल्लासनगर का प्रभावी प्रवास	34
5.	पंजाब से दिल्ली तक	62
6.	आचार्यश्री महाश्रमणजी का मंगल सान्निध्य	73
7.	पूज्यवरों व साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रेरक संदेश	78
8.	परिशिष्ट तालिका	96

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संदेश

जन्म लेना एक सामान्य बात है, परन्तु गुणसंपन्न जीवन जीना विशेष बात होती है। जो व्यक्ति संयम और परोपकार का जीवन जीता है, वह स्वयं धन्य बन जाता है।

साध्वी सूरजकुमारीजी (जयपुर) ने तेरापंथ धर्मसंघ के चार आचार्यों की सन्निधि प्राप्त की। उन्हें शासनश्री सम्बोधन से सम्बोधित किया गया। उन्होंने लम्बे काल तक धर्मसंघ की सेवा की, धर्म प्रभावना की। उनका जीवनवृत्त पाठक को आध्यात्मिक प्रेरणा देने वाला बने, आध्यात्मिक शुभाशंसा।

विराटनगर (नेपाल) **आचार्य महाश्रमण**

16 अगस्त 2015

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्राक्कथन

स्थानांग सूत्र के अनुसार कुछ व्यक्ति श्रुत संपन्न होते हैं, पर आचार संपन्न नहीं होते हैं। कुछ आचार संपन्न होते हैं, किन्तु श्रुत संपन्न नहीं होते हैं। कुछ आचार और श्रुत दोनों से संपन्न होते हैं। साध्वी सूरजकुमारीजी का जीवन चतुर्थ भंग के तुल्य था। बाह्य व्यक्तित्व के तुल्य उनका अंतरंग व्यक्तित्व भी प्रभावी था। नवीन और प्राचीन जीवन शैली का अद्‌भुत संगम उनके जीवन में था।

संयम अपने आपमें महान् पुरुषार्थ है। साध्वी सूरजकुमारीजी ने संयमी जीवन में जिस पुरुषार्थ और तपोमय चर्या के दर्शन किए अद्‌भुत और साहस से परिपूर्ण है। आत्मविश्वास इतना प्रबल कि कभी पीछे पैर हटाने का नाम नहीं लिया। कठिनाई का पहाड़ कितना ही विशाल हो, पगडण्डी कितनी ही कंटकाकीर्ण हो, उनके पैर नहीं रुके। अनेक बार दुर्दांत व्यक्तियों को आपने अपने बुलन्द पौरुष से स्तब्ध कर दिया।

संघनिष्ठा, पूज्यवरों के इंगित की आराधना, नए-नए अनजान क्षेत्रों में निर्भीकता के साथ प्रभावी प्रवास और अनूठा जनसम्पर्क करना आपने कब, कहां, किससे सीखा, कहा नहीं जा सकता। औपचारिक शिक्षा भले ही आपने अधिक नहीं ली; किन्तु बुद्धि की प्रखरता और सूझबूझ नैसर्गिक रूप से आपको प्राप्त थे। कुछ ही समय में अग्रगण्या साध्वियों की पंक्ति में खड़े होकर आपने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।

सदैव स्वयं व्यस्त रहना और दूसरों को व्यस्त रखना उनका स्वभाव था। उनके कलात्मक हाथों से लिखे गए अक्षरों को देखकर लगता है कि मानो वे मुद्रित हों।

पूज्यवरों की प्रेरणा और समय-समय पर प्रदान किए गए वात्सल्यपूर्ण आशीर्वचन उनके जीवन की मूल्यवान थाती हैं। हमारा सौभाग्य है कि हमें उनके मार्गदर्शन में जीवन को संवारने का सुयोग मिला।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरापंथ धर्मसंघ की गरिमा और महिमा अपार है। यशस्वी आचार्यों की गौरवमयी परम्परा के साथ अनेक महान् तपस्वी, दृढ़ संयमी, साधु–साध्वियों की यशस्वी गाथाएं सबके लिए पठनीय हैं। उसी कड़ी में साध्वी सूरजकंवर की संयम-यात्रा हमारे लिए दीपशिखा तुल्य है। उनका प्रेरक व्यक्तित्व निरन्तर हमारा मार्गदर्शन करता रहे।

अध्यात्म् जगत के सुमेरु, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति हम कृतज्ञ हैं जिनके वरदहस्त से हमें निरन्तर कार्य करने की ऊर्जा प्राप्त होती रही।

हम चिर ऋणी हैं संघ महानिदेशिका साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के जिनकी वात्सल्य वर्षा सदैव हमें उत्साह से आपूरित करती रही। मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी का भी हमें मंगल मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अनुजा साध्वीश्री पानकुमारीजी का आत्मीय सहयोग सतत् प्राप्त होता रहा। विदुषी साध्वीश्री जिनप्रभाजी के बहुमूल्य सुझावों से कृति में सौष्ठव का संचार हुआ। विदुषी साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी ने कृति का आद्योपांत परिष्कार कर इसे पठनीय बनाया। साध्वी द्वय के प्रति विशेष कृतज्ञता। समय–समय पर समाधि केन्द्र में विराजित व्यवस्थापिका साध्वियों एवं उनकी सहवर्तिनी साध्वियों का भी हमें पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। सबके प्रति विशेष अहोभाव।

इसकी पांडुलिपि तैयार करने में कुमारी रश्मि बैंगानी एवं प्रेक्षा बैंगानी का श्लाघनीय श्रम रहा।

बीदासर **शासनश्री साध्वी रायकंवर (जयपुर)**

माघशुक्ला त्रयोदशी, 2071 **साध्वी मनीषाप्रभा (आसोतरा)**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

: 1 :

गुलाबीनगर में सुनहरी भोर

भारत के मानचित्र में

जयपुर शहर वास्तुकला का अद्‌भुत नमूना है। महाराजा मानसिंह ने इसकी सुन्दरता को और अधिक वृद्धिंगत किया। यह गुलाबी नगर के नाम से जाना जाता है। चारो दिशाओं में चार दरवाजे इस शहर की सुरक्षा हेतु मानो पहरेदार हैं। ये चाँदपोल, सूरजपोल, आमेर दरवाजा और सांगानेरी दरवाजा के नाम से प्रख्यात हैं। चारो दरवाजों के मध्य 'चौपड़' के नाम से प्रख्यात विशाल चौराहे शहर की सुषमा को शतगुणित कर रहे हैं। 'सांगानेरी दरवाजा' विशेष रूप से शुभ माना जाता है। महाराजा की सवारी प्रायः इसी दरवाजे से निकलती थी। गुलाबी रंगों के महलनुमा मकान आज भी शहर के गौरव को गौरवान्वित कर रहे हैं। शहर की सीधी गलियाँ, चौड़े रास्ते किसी भी अनजान व्यक्ति को भ्रमित होने से बचाते हैं। रामनिवास बाग की सुषमा मनोहारी है। हर आगंतुक इसकी भव्यता से सम्मोहित होता है।

जौहरियों एवं धनाढ्य सेठों की हवेलियाँ स्वर्गोपम दृश्यों को साकार करने वाली हैं। इसलिये यह कहावत प्रचलित है कि "जै नहीं देख्यो जयपुरियो, तो कुल में आके के करियो"। सांगानेरी दरवाजा और बड़ी चौपड़ के बीच (जौहरी बाजार) 'जंवरी बाजार' वह बाजार है जहाँ देश-विदेश के व्यापारी व्यापार हेतु आया-जाया करते हैं। इसी बाजार में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सैकड़ों दुकानें और ऊंचे मकानों के बीच एक बिल्डिंग है – 'बांठिया बिल्डिंग'। विगत 150 वर्षों से यहाँ बांठिया परिवार रहता है।

बांठिया परिवार

सेठ भागचन्द बांठिया अपने परिवार के साथ बांठिया बिल्डिंग में रहते थे। वि.सं. 1910 में चूरू (राजस्थान) से जयपुर रियासत के तत्कालीन मंत्री हाथीबाबू के अत्यधिक आग्रह से वे जयपुर आए। हाथीबाबू (बंगाली) और भागचन्दजी घनिष्ठ मित्र थे। इसी मित्रता के कारण तत्कालीन महामंत्री (दिवान) ने सेठ भागचन्दजी के बड़े पुत्र छोगमल बांठिया को कस्टम विभाग में 'हाकिम' पद पर प्रतिष्ठित किया एवं छोटे पुत्र बींजराज बांठिया को बैंक में 'खजांची पद' पर नियुक्त किया। बंगाल की 14 बैंकों की देख–रेख वे किया करते थे। बांठिया बन्धुओं ने अच्छी नौकरियों के साथ-साथ अपना व्यापार भी प्रारम्भ किया। अनेक चाय बागानों के मालिक बन वे नगर के प्रतिष्ठित सेठों की पंक्ति में अग्रणी गिने जाने लगे।

सेठ भागचन्दजी के एक पुत्री थी 'इचरज'। युवा अवस्था में इचरज का विवाह जयपुर में ही एक स्थानकवासी जैन परिवार में हुआ। सेठ भागचन्दजी आचार्य भिक्षु के अनुयायी तेरापंथी श्रावक थे। आने वाले समय में बहिन इचरज ने भी अपने पूरे परिवार को तेरापंथी बना दिया।

वि.सं. 1922 में सेठ छोगमलजी का देहावसान हो गया। उस समय जयपुर में साध्वी रायकंवरजी आदि साध्वियाँ विराजमान थीं। तब एक चमत्कारी घटना घटी। रात्रि को सहसा तेज प्रकाश हुआ। साध्वीजी ने तेज प्रकाश में देखा कि श्रावक छोगमलजी दर्शन कर रहे हैं। तब, साध्वी रायकंवरजी ने पूछा – "कौन? क्या श्रावक छोगमलजी हैं?" उत्तर मिला – "तहत् महाराज !" और वापस चले गये। श्रावक बींजराजजी बांठिया उस समय साध्वियों की सेवा में मौजूद थे जो छोगमलजी के छोटे भाई थे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

समाज में सहभागिता

बींजराजजी के पाँच पुत्र थे। उन्होंने अपने दूसरे नम्बर के पुत्र सूरजमल को छोगमलजी के गोद दे दिया । सरकारी महकमे में रहते हुए भी श्रावक छोगमलजी की धार्मिक कार्यों में अच्छी रुचि थी। उन्हीं के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुये दत्तक पुत्र सूरजमलजी भी आध्यात्मिक एवं तात्विक ज्ञान के अच्छे ज्ञाता बन गए। आध्यात्मिक सूरजमलजी ने बच्चों को संस्कारी बनाने हेतु अपनी भावना स्थानीय तेरापंथ समाज के सामने व्यक्त की। उनके सुझाव की सभी ने सराहना की। योजनाबद्ध तरीके से जमीन व स्कूल का निर्माण कार्य शीघ्र सम्पन्न हुआ। आज भी वह स्कूल मोतीसिंह भोमियों के रास्ते में भव्य इमारत के रूप में सभी को आकर्षित कर रही है। हजारों-हजारों बालक–बालिकाओं ने उस विद्यालय में अध्ययन कर अपने व्यक्तित्व को संवारा है। आज वह विद्यालय जैन श्वेताम्बर तेरापंथ उच्च विद्यालय के नाम से जाना जाता है। सूरजमलजी ने अपने ही परिवार के सौभागमलजी के बड़े पुत्र मोतीलालजी को गोद लिया।

संघ के प्रति समर्पण

मोतीलालजी बांठिया अध्यात्मविद्, सत्संस्कारी एवं कर्मठ श्रावक थे। धर्म और धर्मगुरु के प्रति अगाध श्रद्धा थी। लाडनूं के प्रसिद्ध श्रावक ताराचन्दजी फूलफगर की सुपुत्री मनसुखी के साथ वे परिणय सूत्र में बंधे। दोनों ही परिवार धार्मिक व संस्कारी होने से इस जोड़ी में धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा और समर्पण था।

समयानुसार जयपुर में वयोवृद्ध तत्त्वज्ञानी मुनि श्री पूनमचंदजी (पचपदरा) का विराजना हुआ। संतों की प्रेरणा श्रावक मोतीलालजी एवं श्राविका मनसुखी देवी के जीवन में तत्त्वज्ञान की विशेष अभिवृद्धि करने वाली हुई। उनके पाँच पुत्रियाँ और दो पुत्र – युगल रूप में हुए, जिनके नाम क्रमशः भंवरी, कमला, माणक, पुखराज, सुखराज, पन्नालाल तथा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

धनराज रखे गए। बड़ी पुत्री भंवरी का विवाह चूरू निवासी तिलोकचन्दजी सुराणा के छोटे पुत्र श्रीमान् हुलासचन्दजी सुराणा के साथ हुआ। शेष चार पुत्रियों ने तेरापंथ धर्मसंघ के गौरव को गौरवान्वित करने हेतु संयम जीवन स्वीकार किया।

शासन गौरव साध्वीश्री कमलूजी ने वि.सं. 1983 लाडनूं में एवं साध्वीश्री सूरजकंवरजी ने वि.सं.1990 आषाढ़ शुक्ला 1 को अष्टमाचार्य कालूगणी के करकमलों से संयम रत्न स्वीकार किया। साध्वी पानकँवरजी एवं साध्वी रायकँवरजी ने वि.सं. 1999 को तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी के चरणों में चूरू चातुर्मास में संयम जीवन स्वीकार कर अपने आपको धन्य बनाया।

अष्टमाचार्य कालूगणी के शासनकाल में

तेरापंथ धर्मसंघ गौरवशाली धर्मसंघ है। आचार्य भिक्षु ने अपने श्रम से इस शासन को सींचा है। उत्तरवर्ती सभी आचार्यों ने इसकी नींव को अपने पुरुषार्थ से सुदृढ़ बनाया है। अष्टमाचार्य कालूगणी का शासनकाल चल रहा था। उनके शिष्य मुनि श्री पूनमचन्दजी स्वामी जयपुर में लम्बे समय से विराजमान थे। 27 वर्षों तक जयपुर श्रावक समाज ने मुनिश्री द्वारा प्रदत्त तत्त्व-ज्ञान से अपनी अंतःचेतना को प्रकाशित किया। संत दर्शन एवं प्रवचन श्रवण के प्रति सब में विशेष आकर्षण था। यथा समय श्रद्धालु श्रावक समाज संतों के प्रवास से पूरी तरह लाभान्वित होता रहता था।

'माणक' (सूरजकंवर) का आगमन

सेठ मोतीलालजी बांठिया की धर्मपत्नी मनसुखी देवी की कुक्षि से वि.सं. 1979 फाल्गुन शुक्ला पूनम को कन्या का जन्म हुआ। नाम रखा गया 'माणक'। पिता की लाड़ली, मां के आंचल में पारिवारिक जनों के साए में 'माणक' बड़ी होने लगी। सौम्यमुद्रा, चमकती आंखें, वर्चस्वी एवं तेजस्वी बदन प्रतिदिन चन्द्रमा की तरह बढ़ने लगा। चार वर्ष की अवस्था में मां अपनी पुत्री माणक को राजस्थान का परिवेश लहंगा और घाघरा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पहनाकर, गहनों से सजाकर संतों के स्थान पर दर्शनार्थ लेकर गईं। पूनमचंदजी स्वामी ने बालिका को देखते ही कहा – "कानां में कुंडल जल हरै, गले में नवसर हार"। सबने सुना, कोई कह रहा था – बालिका को कोई म्यूजियम की डौल (गुड़िया) बता रहे थे तो कोई कुछ और । कुछ ही समय में बालिका ज्वराक्रांत हो गई और उस ज्वर ने निमोनिया का रूप धारण कर लिया । जयपुर के प्रसिद्ध लच्छीरामजी वैद्य के उपचार से अंततः बालिका स्वस्थ हुई।

बालिका माणक छोटी अवस्था में भी समझदार और विवेकशील थी। बड़नगर निवासी कनकमलजी चौधरी, जो मोतीलालजी के बहनोई थे, उनके कोई संतान नहीं थी। उन्होंने मोतीलालजी से कहा – कमला (माणक की बड़ी बहन) को हमारे साथ भेज दो। बच्चे के बिना तुम्हारी बहन का घर में मन नहीं लगता। कमला रोने लगी, क्योंकि वह माँ से उसे दूरी अप्रिय लग रही थी । तत्काल माणक ने आगे आकर कहा – "मैं चली जाऊँगी" । बालिका इतनी पुण्यवान् थी कि बड़नगर के चौधरी परिवार में संतान न होने का दुःख 'माणक' के जाते ही समाप्त हो गया। उनको संतान का सहज योग मिल गया और क्रमशः भाग्य भी फलने लगा।

पुत्रियाँ रतन समान

कहते हैं, जब संतों के दर्शन हेतु बांठिया परिवार जाता, तो उनके भाग्य की सराहना हर कोई करने लगता, क्योंकि उनकी एक पुत्री तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षा ले अपने जीवन को अध्यात्म से ओत-प्रोत कर रही थीं। लाला चंपालालजी सींघड़ की धर्मपत्नी (लालीजी) ने एक दिन कहा – "ए के तो रतन जनमै छै, एनै बेट्यां क्यूं दोरी लागै?"- अर्थात् पांच कन्याओं के पिता होने पर भी मोतीलालजी बांठिया को चिन्ता क्यूं हो, उनके तो पुत्रियों के रूप में रतन ही जन्मे हैं। उनकी वाणी फली। चार पुत्रियों ने दीक्षा स्वीकार कर ली।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वैराग्य का अंकुर

बालिका माणक को बचपन से चारित्रात्माओं की सेवा का अवसर मिलता रहा। कभी-कभी रात्रि में सतियों के यहां नींद आ जाती और वापस घर जाने के लिये जगाया जाता तो अबोध बालिका सोचती – 'यदि मैं साध्वी होती तो लोग मेरे ही पास आते, मुझे घर नहीं जाना पड़ता। जब किशोर अवस्था आने लगी तो लड़कियों को विवाह के पश्चात् विदा होते देखती तो उसे आश्चर्य होता, यह कैसा विचित्र रिवाज है कि एक सर्वथा अपरिचित व्यक्ति के साथ लड़कियां घर छोड़कर चली जाती हैं।' इस प्रकार बालिका माणक के हृदय में चिन्तन चलता रहता।

सं. 1988 में साध्वीश्री सुन्दरजी (लाडनूं) जो 'माणक' की ममेरी बहिन थीं, का चातुर्मास फतेहपुर में था। प्राग् दीक्षित साध्वी कमलूजी (बड़ी बहन) उनके साथ में थीं। बालिका माणक अपने घरवालों के साथ साध्वियों की सेवा में गई। वहां सगाई सम्बन्ध हेतु देखने के लिये कहीं बुलाया गया तो उन्होंने तत्काल उत्तर देते हुये कहा – "मुझे विवाह नहीं करना, मैं तो दीक्षा लूंगी।" वे वहां से अपनी मां के साथ लाडनूं अपने ननिहाल चली गईं। मां लाडनूं थोड़े दिन रहकर फिर वापस जयपुर आ गई और माणक अपनी नानी के पास रह गई। पूज्य आचार्यश्री कालूगणी शेषकाल में लाडनूं पधारे तो माणक अपनी नानी के साथ सुजानगढ़ गई। नानीजी दर्शन करके पुनः लाडनूं चली गईं, माणक सुजानगढ़ में ही अपनी बुआ के पास रह गई। माणक ज्यादातर साध्वियों के ही ठिकाने दर्शन-सेवा में रहती। उसकी इतनी भक्ति देखकर सतियों ने पूछा – "इतनी सेवा करती है, दीक्षा लेगी क्या?" तब माणक ने कहा – "भाव तो है।" – "फिर गुरुदेव को अरज क्यों नहीं करती?" माणक ने भोलेपन से कहा – "इच्छा तो करती है, पर मुझे अरज करना नहीं आता।" तब सतियों ने कहा कि तुम गुरुदेव के पास जाकर बस इतना कह देना कि "गुरुदेव! मुझे तारो।" तब, माणक ने व्याख्यान समाप्त होने पर गुरुदेव के पास जाकर अरज की – गुरुदेव! मुझे तारो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरुदेव ने बालिका की ओर देखा और पूछा – "कौन है?" पास में साध्वी झमकूजी आदि सतियां थीं, उन्होंने उसका पूरा परिचय दे दिया। फिर बुआजी दोपहर को सतियों के ठिकाने दर्शन के लिये गईं तो सतियों ने कहा – "तुम्हारी भतीजी ने तो दीक्षा की अरज की है।" बुआजी को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि यह बात उनके ध्यान में नहीं थी। उन्होंने कहा – "नहीं, महाराज, ऐसी कोई बात नहीं है। हम तो उसकी सगाई कर रहे हैं।" उन्होंने घर जाकर माणक से पूछा तो माणक ने बता दिया कि उसने दीक्षा की अरज की है। बुआजी ने यह सारी जानकारी एक चिट्ठी में अपने भाई अर्थात् माणक के पिता मोतीलालजी को लिखकर भेज दी। उन्होंने अपनी बहिन को चिट्ठी के द्वारा उत्तर में कहा – "अभी तो माणक बच्ची है। उससे कह दो कि दीक्षा की अरज ना करे। गुरुदेव अभी चूरू पधारेंगे, मैं भी चूरू आऊँगा। माणक को भी चूरू उसकी बड़ी बहन या मेरे बुआजी के पास भेज देना।"

सुजानगढ़ से गुरुदेव का विहार हो गया तो माणक पुनः लाडनूं अपनी नानी के पास चली गई। लाडनूं से फिर माणक को चूरू भेज दिया। वहां चूरू में मोतीलालजी भी पहुंच गये। माणक ने दीक्षा की स्वीकृति के लिये पिताजी से निवेदन किया तो पिताजी ने डांट दिया और कहा – दीक्षा शादी के बाद ले लेना। माणक की बड़ी बहिन (साध्वीश्री कमलूजी) भी संघ में दीक्षित थीं । अतः उनके मन में माणक की दीक्षा की बात से यह संकोच था कि लोग कहेंगे, इतनी छोटी उम्र में दहेज के डर से दीक्षा दिला दी।

दीक्षा के लिये पुनः अर्ज

माणक की दीक्षा की भावना प्रबल थी। अतः उन्होंने व्याख्यान में ही गुरुदेव से दीक्षा की पुनः अर्ज की। व्याख्यान के बाद गुरुदेव ने निर्देश किया – मोतीलालजी से दर्शन करने के लिये कहो। व्याख्यान के बाद मोतीलालजी जाने लगे तो भाइयों ने कहा – "आचार्यश्री आपको याद फरमा रहे हैं।" मोतीलालजी ने गुरुदेव के दर्शन किये। गुरुदेव ने माणक की तरफ इशारा करते हुए पूछा – "यह क्या कह रही है?" मोतीलालजी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ने कहा – "गुरुदेव, अभी तो मेरा इसे पढ़ाने का भाव है।" तभी मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी ने कहा – "पढ़ाई तो बाद में भी होती रहेगी। और, आपने गुरुदेव से प्रतिक्रमण सीखने के लिये आज्ञा देने की अर्ज कर दी।" गुरुदेव ने आदेश फरमा दिया। माणक पिताजी के साथ जयपुर आ गई।

जयपुर में माणक को संस्कृत पढ़ाने के लिये अध्यापक की व्यवस्था की गई । मोतीलालजी प्रायः एक वर्ष तक माणक को दीक्षा न लेने के लिए समझाते रहे पर माणक अपने संकल्प पर दृढ़ रही।

■■■

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

: 2 :

संयम के पथ पर

वि.सं. 1990 में गुरुदेव पुनः लाडनूं पधारे। वहां दीक्षा समारोह का आयोजन हो रहा था। तभी लोगों ने अर्ज की। गुरुदेव! दीक्षा एक और होनी चाहिए। गुरुदेव ने पूछा कि और किसी को भी प्रतिक्रमण का आदेश दिया गया है क्या ? फिर जयपुर में मोतीलालजी के पास माणक के लिये पत्र पहुंचा – ''आप आएँ तो दीक्षा हो सकती है।" मोतीलालजी ने पुनः पुत्री माणक से विवाह के लिये आग्रह किया, पर माणक तो दीक्षा के लिए कृत संकल्प थी। उसने उसी दृढ़ता से कहा – "नहीं, मैं तो दीक्षा लूंगी।"

वि.सं. 1990 को आषाढ़ शुक्ला एकम् के शुभ दिन आचार्यश्री कालूगणी के कर-कमलों से माणक की दीक्षा सम्पन्न हुई। नाम रखते समय गुरुदेव ने साध्वियों की तरफ देखा और पूछा – "क्या नाम रखना चाहिये?" साध्वियों ने निवेदन किया – "चांदकंवर नाम तो साध्वियों के हैं, सूरजकंवर नाम अभी तक नहीं है।" साध्वियों की भावना को स्वीकार करते हुए वही नाम दे दिया। उसी समय मंत्री मुनि मगनलालजी ने आचार्य श्री कालूगणी से निवेदन किया – "यह तो इसके दादा का नाम है।" इस पर आचार्य प्रवर ने फरमाया – "तब तो और भी ठीक है, यह अपने दादा के नाम को भी अपने नाम के साथ चमकाएगी।" इस प्रकार उन्हें अनायास गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त हो गया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दीक्षित होने के पश्चात् पूज्यवर ने ठिकाने पधार कर करुणा दृष्टि बरसाते हुए सभी नवदीक्षितों को 'कवल' बखशाया। उसी दिन सायंकाल विहार हो गया। साध्वीश्री झमकूजी ने सूरजकंवरजी से पूछा – "तुम विहार अभी करना चाहती हो या सुबह?" नवदीक्षित साध्वी ने निवेदन किया – "मैं आपके साथ ही जाना चाहती हूं, फिर आपकी जैसी मर्जी।" उसी दिन विहार कर जसवंतगढ़ पधारे। आषाढ़ शुक्ला 3 को सुजानगढ़ में भव्य जुलूस के साथ पूज्य कालूगणीजी ने प्रवेश किया। महासती कानकुमारीजी सुजानगढ़ में विराजमान थीं, क्योंकि आपके आंखों की ज्योति कम हो गई थी, पेट में एक ट्यूमर भी थी, जो पेट में लटकती दिखाई पड़ती थी। शारीरिक अस्वस्थता के कारण सारा कार्य, संघीय व्यवस्थाओं का कार्यभार साध्वीश्री झमकूजी ही संभालती थीं। साध्वी सूरजकंवरजी पर सभी साध्वियों की, विशेषतः साध्वी झमकूजी की विशेष कृपा थी।

साध्वीश्री झमकूजी की कृपा

साध्वी सूरज का शरीर कोमल था। उस समय दीक्षा के समय माथे पर तारों का टीका लगाने का रिवाज था। टीके के चेप से ललाट पर फफोले होने से पस पड़ गई थी। स्वयं साध्वीश्री झमकूजी, जो बाद में साध्वीप्रमुखा बनीं, अपने हाथों से उनकी मरहम-पट्टी करतीं। करुणा और वात्सल्य के साये में साध्वी जीवन का बचपन पल्लवित एवं पुष्पित होता रहा।

रात्रि में सोते समय बाल साध्वी कभी-कभी नींद में, संभवतः सर्दी के कारण लुढ़ककर साध्वीप्रमुखाश्री जी के बिस्तर पर चली जाती। तब आपने कृपा कर साध्वी सूरज को अपने पास ही सुलाना शुरू कर दिया। प्रायः साध्वीप्रमुखा कानकंवरजी आहार के पश्चात् साध्वी सूरजकंवरजी के हाथ का सहारा लेकर टहला करते और अक्सर फरमाते – "इसके हाथ कितने कोमल हैं।" टहलते वक्त साध्वीप्रमुखाश्री जी साध्वियों को पुरानी बातें बताते और चर्चा-पूछा करते थे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लुंचन के उपलक्ष्य में मिला पारितोषिक

जैन साधु हर छह महीने में एक बार बालों का लुंचन करते हैं। इसके पीछे अनेक कारण हैं – सौन्दर्य शालीनता में बदल जाये, सहनशीलता का विकास हो। इसके अतिरिक्त जीव हिंसा से बचाव। अल्प आयु, नवदीक्षित, भाद्रव मास, लुंचन का समय। कृपा बरसाते हुए महासती झमकूजी ने स्वयं लुंचन किया। गोद में मस्तक टिका लिया, नींद आ गई। पता ही नहीं चला कि लुंचन कब सम्पूर्ण हो गया।

आचार्यश्री कालूगणी के दर्शनार्थ स्थान पर पहुंचे तो आचार्यश्री ने लुंचन की बात पूछते हुये फरमाया – "कैसा लगा लोच?" साध्वी सूरजकंवरजी ने कहा – "नींद आ गई, पता ही नहीं चला।" आचार्य प्रवर को आश्चर्य हुआ एवं पुरस्काररस्वरूप 72 कल्याणक प्रदान किए।

उन्हें तीन वर्षों तक गुरुकुलवास में रहने का दुर्लभ अवसर मिला। गुरुदेव की कृपा से 51–51 कल्याणक प्रत्येक लुंचन पर पुरस्कारस्वरूप प्राप्त हुए।

कृपादृष्टि की व्याख्या शब्दों में बयां नहीं की जा सकती। बीदासर मर्यादा महोत्सव का समय। अचानक सिर में वेदना बढ़ी तो इतनी कि असहनीय हो गई। संकोचवश किसी से नहीं कहा। सिर को घुटनों के बीच टिका कर बैठ गई। रात का समय था। एक साध्वी ने पूछा – "नानकी! इयां कियां बैठी है? रात होगी, सो जा।" जैसे ही साध्वी ने सुना, तत्काल आज्ञा का पालन करने हेतु उठी। बस फिर क्या था, इतना वमन हुआ कि सारे कपड़े एवं रजोहरण खराब हो गये। साध्वियों ने तुरन्त बाल साध्वी के कपड़े बदलवाए। प्रातः होते ही सारे वस्त्रों का प्रक्षालन साध्वियों ने किया। तेरापंथ धर्मसंघ में आज भी वृद्ध एवं रोगी की सेवा अग्लानभाव से की जाती है।

■■■

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

: 3 :

स्वतन्त्र कार्यभार

अग्रणी पद की वन्दना

साध्वी सूरजकंवरजी 18 वर्ष तक साध्वी सुन्दरजी के साथ रहीं। वि0सं0 2010 के राणावास मर्यादा महोत्सव पर साध्वीश्री सूरजकंवरजी का सिंघाड़ा बना कर सं0 2011 का चातुर्मास नोहर फरमाया।

महोत्सव के बाद साध्वीश्री कमलूजी मस्से का इलाज करवाने जाणुन्दा गए। आचार्यश्री से प्रार्थना की कि साध्वी सूरजकंवरजी कुछ दिन मेरे साथ रह जाएंगी। आचार्यश्री ने फरमाया – ठीक है। और साध्वी सूरजकंवरजी, कमलूजी के साथ चली गईं। साध्वी सुन्दरजी ने अर्ज की कि "यह कभी अकेली नहीं गई है, अतः थली से जो सतियां आई हैं, उनका साथ करा देवें।" महोत्सव के बाद आचार्यश्री गुड़ा पधारे। थली से पधारी सतियां आचार्यश्री के पास शिक्षा लेने गईं और कहा कि, "हम विहार कर रहे हैं।" आचार्यश्री ने साध्वी सुन्दरजी की प्रार्थना को ध्यान में रखते हुए फरमाया कि सूरजकंवरजी को साथ ले जाओ। दूसरी सतियों को कमलूजी की सेवा में भेज दिया और कहा कि सूरजकंवरजी को जल्दी भेज दो। सतियों ने आकर सिर्फ यह कहा कि गुरुदेव ने आपको जल्दी बुलाया है। यह सुनकर साध्वी सूरजकंवरजी और साध्वी कमलूजी घबरा गईं और कमलूजी ने सूरजकंवरजी से जल्दी विहार करने को कहा और उसी समय विहार करवा दिया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्यश्री के गुड़ा में दर्शन किये तब गुरुदेव ने फरमाया, "सुन्दरजी ने कहा था थली में सतियों के साथ भेज देना।" सूरजकंवरजी ने गुरुदेव से प्रार्थना की कि मेरे सेवा नहीं हुई। गुरुदेव ने कहा – "फिर तुम्हारा साथ नहीं होगा।" सूरजकंवरजी ने थली विहार करने वाली सतियों को दो दिन रुकने के लिए कहा। दूसरी सतियों ने कहा कि इनको जाने की जल्दी है, इन्हें लम्बा विहार करना है, अतः इन्हें मत रोको। सूरजकंवरजी ने गुरुदेव से प्रार्थना की कि, "सतियों को जाने की जल्दी है। आप के दर्शन के लिए आते हैं तो सर्दी होती है। अब तो गर्मी आ गई है, इतना विहार करना मुश्किल होगा।" गुरुदेव को कोई एतराज न था।

गुरुदेव ने कहा, "सुन्दरजी ने निवेदन किया, इसलिए मैंने तुम्हें कहा। तुम तो सुन्दरजी के साथ विचरण की हुई हो, क्या डर है? कल हम जोजावर जाएंगे, वहां आ जाना।" गुरुदेव की कृपा दृष्टि भूली नहीं जा सकती। फिर तीन दिन वहां सेवा हुई। महोत्सव के बाद सिंघाड़े मेवाड़ गए और घाटे चढ़े। जब आचार्यश्री वापस जाणुन्दा पधारे तब प्रत्येक सिंघाडे में से एक दो सतियां जागुन्दा गुरुदेव के दर्शन करने वापस गईं। आचार्यश्री ने कहा, "अभी–अभी तो गए थे, फिर वापस आ गए।" गुरुदेव ने उपालम्भ देते हुए कहा और सभी को विहार करने का आदेश दे दिया। साथ ही साध्वी सूरजकंवरजी को भी विहार करने के लिए फरमा दिया। फिर सूरजकंवरजी को नजदीक बुलाकर 15-20 मिनट तक शिक्षा फरमायी। अयाचित गुरुकृपा से वे गद्‌गद् हो गईं ।

गुरुदेव ने साध्वीश्री को हिन्दी में व्याख्यान देने को कहा। उस समय तक सब मारवाड़ी में ही व्याख्यान देते थे। गुरुदेव ने फरमाया, "हिन्दी में बोलना, डरना नहीं और रास्ते में सावधानी रखना। नोहर तुम्हारा चातुर्मास है, वहां लोगों में मकान की खींचातानी है। तुम तातेड़ों की हवेली में रह जाना।" दूसरे दिन आचार्यश्री ने प्रसन्नचित्त होकर मंगलपाठ सुनाया। मंगलपाठ सुन उत्साहपूर्वक साध्वियों ने वहां से विहार किया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सूरजकंवरजी के साथ पानकंवरजी, सजनाजी और जयकंवरजी ये तीन साध्वियाँ थीं। पाँचवी साध्वी के लिए आचार्यप्रवर ने कहा "दीपांजी के पास सुगनाजी हैं, उनको ले लेना।" पहले तो साध्वीश्री बड़ी साध्वियों के साथ निश्चिन्त थीं, पर अब तो सारी जिम्मेवारी स्वयं पर थी।

स्वतंत्र विहार की प्रथम यात्रा

एक बार एक गांव को छोड़ उन्होंने दूसरे गांव का रास्ता ले लिया । रास्ता इतना लम्बा हो गया कि पहुँचते–पहुँचते दो बज गए। सभी साध्वियों को बहुत तेज प्यास और भूख लगी थी। घरों में गोचरी गए और जो कुछ मिला, वही लाकर के भूख शान्त की। गांव में रहने के लिए जगह नहीं मिली। गांव के बाहर नोहरे में ठहराया। वहां एक चारे का कोठा था और एक बरामदा। बाहर निकलने के लिए एक दरवाजा था। उसका कपाट भी टूटा हुआ था। शाम के चार–पांच बजे भयंकर आंधी आई। चारों ओर अंधेरा छा गया। साथ ही जोरों से बरसात शुरू हो गई। ऐसे में ना ही कुछ सुनाई और ना ही कुछ दिखाई दे रहा था। पहुंचाने वाला आदमी बाहर बैठा था। उसे आवाज देकर अन्दर बुलाया और नोहरे के मालिक के पास जाकर वहां की स्थिति बताने को कहा। हमने उससे यह भी कहने को कहा कि साध्वियों को वहां डर लग रहा है। उसकी अनुमति हो तो वे उसके मकान में ठहर जाएंगी और स्थान की कमी होगी तो बैठ-बैठे रात निकाल देंगी। परन्तु, नोहरे के मालिक ने मना कर दिया। फिर साध्वीश्री ने हिम्मत जुटाई और सतियों से कहा कि दरवाजे के आगे जो लक्कड़ है, उसे किवाड़ पर लगा दो ताकि कोई आए तो उस लक्कड़ के गिरने की आवाज से पता चल जाए।

सभी 'विघ्नहरण' का उच्चारण करने लगी। 21 बार ही उच्चारण किया था कि तूफान शान्त हो गया। बादल फंटने लगे और आकाश में दो–तीन तारे दिखने लगे। साध्वीश्री ने सतियों से कहा कि लोगों ने तो लालटेन नहीं दी, पर प्रकृति ने रोशनी की व्यवस्था कर दी, आकाश में तारे चमकने लगे हैं। थोड़ी ही देर में आकाश साफ हो गया। इस तरह रास्ते में बहुत–सी कठिनाइयां आईं। कहीं जगह मिली, कहीं नहीं मिली। पर आगे बढ़ते रहे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ऐसे में एक और समस्या आ गई। सूरजकंवरजी के सिंघाड़े में साध्वी जयकंवरजी नवदीक्षिता थीं। उनकी गर्दन पर फोड़ा हो गया। दर्द बहुत था, पर ठहरने के लिए कहीं उपयुक्त स्थान उपलब्ध नहीं था। सुजानगढ गए। तीन दिन रुके। उपचार करवाया। पर साध्वीजी को आराम नहीं हुआ। फोड़ा प्रायः वैसे का वैसा था।

विहार करके साध्वियाँ सुजानगढ़ से सरदारशहर गईं। वहां साध्वीश्री कमलूजी (चूरू) थे। उनके पास पहुंचने पर साध्वीश्री सूरजकंवरजी की चिंता मिटी। उन्होंने बहुत उपचार करवाया पर फोड़ा नहीं फूटा। एकदम लाल चक्के जैसा हो गया था। वहां सुजानु नाम के वैद्य का इलाज चला। एक महीना हो गया, पर फोड़ा ठीक नहीं हुआ। उसने कहा कि फोड़े में चीरा लगाना पड़ेगा। उस समय डाक्टर से इलाज नहीं करवाते थे। सुजानुजी की देखरेख में साध्वी मघूजी ने चाकू लेकर अंदर डाला पर खून जम गया था। वैद्यजी ने कहा 'चाकू और अंदर डालो।' मघूजी का हाथ कांपने लगा। सूरजकंवरजी ने तुरन्त उनके हाथ से चाकू लिया और एक इंच तक अंदर डाल दिया तब जाकर थोड़ी पीप निकली। फिर उसके ऊपर लुपरी बांधी तब धीरे–धीरे पीप निकलने लगी। कई दिनों बाद जाकर वह फोड़ा ठीक हुआ।

सं. 2011 नोहर

साध्वियां नोहर चातुर्मास करने जा रही थीं। रास्ते में दो सतियां सरसा से मोहनांजी (डीडवाना) लिछमांजी (राजलदेसर) को लेकर आईं। आचार्यश्री का आदेश मिला कि लिछमांजी को रख लें और सजनाजी को भेज देवें। साध्वी सूरजकंवरजी अवाक् रह गई कि यह क्या हुआ ! सजनाजी को रामायण पूरी आती थी और उन्हें नहीं आती थी। चातुर्मास में रामायण का वाचन किया जाता था। तब उन्होंने कहा – सजनाजी को रख लें और सुगनाजी को भेज देवें, आचार्यश्री को मालूम करवा देना। सतियां सजनाजी को लेकर सरसा चली गईं और सूरजकंवरजी नोहर आ गईं। लोग अपने-अपने मकानों की अर्ज करने लगे। आचार्यश्री ने जिस घर का संकेत दिया वो नाम सूरजकंवरजी भूल गईं। फिर उन्होंने गुरुदेव

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

का स्मरण किया। लोगों को पूछने से पता चला कि तातेड़ों की हवेली बीच में है। तब साध्वीश्री ने कहा, अभी तो तातेड़ों के ठहरने का भाव है। तीन महीने निकल गए। दीपावली से कुछ दिन पहले संतोषचन्दजी बरड़िया आचार्यश्री से आज्ञा लेकर आए। उन्होंने गुरुदेव से प्रार्थना की कि सतियों के मेरी हवेली में विराजने से मेरी सेवा हो जाएगी। आचार्यश्री ने आदेश फरमा दिया। अतः साध्वियां फिर उनकी हवेली में आ गईं। उन्होंने सूरजकंवरजी को उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन करवाया। उनके छठे भाई मन्नालाल हिन्दी सिखाते थे। संतोषचन्दजी मिल में मैनेजर थे। उनकी तनख्वाह भी अच्छी थी। उनकी दो बहिनें तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित हुईं।

साध्वीश्री सूरजकंवरजी ने प्रातःकालीन प्रवचन में उत्तराध्ययन सूत्र और अंतुकारी भट्टा का आख्यान चलता था। अंतुकारी भट्टा के प्रसंग में साध्वी श्री ने एक दिन कहा कि लोगों ने ईर्ष्यावश राजा के पास जाकर अंतुकारी भट्टा के पति के सम्बन्ध में कहा – यह तो अपनी पत्नी की आज्ञा पर चलता है। उसी संदर्भ में साध्वीश्री ने कहा कि लोग दूसरों की उन्नति को सहन नहीं कर सकते और ईर्ष्या करते रहते हैं। तब एक भाई रूठ गया। उसने सोचा महाराज ये सारी बातें उसके ऊपर कह रहे हैं। उसने आना ही छोड़ दिया। साध्वीश्री को जब यह पता चला तो वे स्वयं उस भाई के घर गईं और कहा कि मैं तो व्याख्यान की बात कर रही थी, अपने ऊपर क्यों लेते हो? अगर आपको मेरी बात कठोर लगी हो तो मैं खमत–खामणा करती हूं। फिर आप आ गईं। वो भाई भी फिर व्याख्यान में आने लगा।

चातुर्मास में बहिनों की हर महीने दो-तीन पंचरंगी होती। भाइयों ने भी कोशिश की पर एक-दो धोकड़ा घटता रहा। पंचरंगी पूरी नहीं हुई। कार्तिक का महीना आ गया। भाइयों ने कहा, "चौमासे में सब ठीक हुआ, बस भाइयों में पंचरंगी नहीं हुई।" फिर बहुत कोशिश की। कई लोग परदेश विदा होने वाले थे, उनको रोका। पंचरंगी पूरी की। जब पचखने का दिन आया तो एक भाई ने मना कर दिया। पंचोला करने वाला दूसरा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कोई नहीं था। सब लोगों ने मिलकर संगोष्ठी की । सावन–भादवा में पूर्ण नहीं होने वाली पंचरंगी कार्तिक में पूर्ण हो गई। इससे सबको अंतस्तोष हुआ।

सं. 2012 : सादुलपुर

2012 का चातुर्मास सादुलपुर में किया। सादुलपुर के भाई केसरीमलजी ने अपने मकान की अर्ज की। मांजी महाराज ने उनसे कहा – ठीक है। सूरजकंवरजी को उनके मकान में चातुर्मास में प्रवास करने को कहा। हमेशा सुराणा की जगह में चातुर्मास होता था। सूरजकंवरजी केसरीमलजी सेठिया के गेस्ट हाऊस में चातुर्मास के लिए चली गईं, इससे सुराणा परिवार नाराज हो गया। लोगों ने भी कहा – गेस्ट हाऊस के पास जो खेजड़ा है, उसमें सात भूतनियाँ रहती हैं पर साध्वियों ने निर्भीकता से उस गेस्ट हाऊस में प्रवास किया। चातुर्मास बहुत ही अच्छे तरीके से बीता। दोनों समय उपस्थिति अच्छी हो जाती। रात्रि में रामायण, भजन गोष्ठी, अन्त्याक्षरी आदि चलती थी।

पर्युषण के दिन आए। पर्युषण में चतुर्दशी के दिन भाइयों ने सामायिक का सौदा किया। उस दिन हजारों सामायिकें हुईं। अन्य जातियों में भी प्रचार किया गया। उन्होंने भी सामयिकें कीं। संवत्सरी के दिन हरिजन जाति में सौ सामायिकें हुईं।

वि.सं. 2014 : पुर

वहां के बैरवा जाति के भाइयों ने अपना पैतृक काम छोड़ दिया था। उनके बच्चे पढ़-लिखकर नौकरी करने लग गए थे। कानमलजी स्वामी पुर के ही थे। उन्होंने अपने पुर चातुर्मास में बैरवा भाइयों को समझाकर गुरुधारणा करवाई। उनका खान-पान सुधारा। वे रोजाना व्याख्यान सुनने आने लगे। एक बार ओसवालों और उन भाइयों में झगड़ा हुआ और मनमुटाव हो गया। गांव वालों ने उन लोगों को सौदा देना तक बंद कर दिया। वे दूसरे गांव जाकर सामान लाते थे। व्याख्यान सुनने भी नहीं आने देते थे। साध्वीश्री के चातुर्मास के दौरान उनके संसारपक्षीय भाई श्रावक श्री पन्नालालजी बांठिया दर्शन करने आए। उनको सारी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्थिति ज्ञात हुई। उन्होंने दोनों पक्षों को बुलाया। समझाने की बहुत कोशिश की। साध्वीश्रीजी ने भी दोनों पक्षों को समझाया। आखिर दोनों पक्षों ने आपस में क्षमायाचना कर ली। व्याख्यान सुनने भी पुनः आने लगे। पन्नालालजी ने एक हजार रुपये का साहित्य भी पुर समाज की लाइब्रेरी के लिए दिया।

चातुर्मास के दौरान ही एक बार वहां एक छोटा–सा बन्दर आ गया। वह केवल आदमी से डरता और किसी से नहीं। उसका नाम लोगों ने 'मोती' रखा। एक बार साध्वीश्री सूरजकंवरजी छत पर खड़ी थीं। उन्हें देखकर बन्दर उधर आने लगा। साध्वीश्री नीचे की तरफ भागी। इतने में वह बन्दर साध्वीश्री जी के कंधे पर आकर बैठ गया। उनके कपड़े फाड़ दिए। साध्वीश्री ने भाइयों को आवाज लगाई। भाई आवाज सुनकर आए। बन्दर को भगाया। एक बार फिर ऐसा ही हुआ। उस बन्दर ने साध्वियों को देख लिया। साध्वीश्री सूरजकंवरजी ने तो जल्दी से अन्दर जाकर कमरा बंद कर लिया पर बन्दर साध्वी रायकंवरजी, जो कि सूरजकंवरजी की संसारपक्षीया बहिन है, के पैर पकड़कर पैरों पर बैठ गया। छुड़ाने की बहुत कोशिश की गई पर बन्दर पैर छोड़ ही नहीं रहा था। रायकंवरजी पैर घसीटते-घसीटते पोल तक गईं और भाइयों को आवाज लगाई। भाइयों की आवाज सुनकर बन्दर भाग गया। इस प्रकार चातुर्मास में बन्दर का बहुत उपद्रव रहा।

चातुर्मास उतरते ही साध्वीश्री सुन्दरजी और सूरजकंवरजी दोनों बहिनों ने आचार्यश्री के दर्शन किए। सं. 2015 का चातुर्मास गुरुदेव ने साध्वीश्री का भगवतगढ़ फरमाया। आचार्यश्री कलकत्ता पधार रहे थे। जयपुर तक साध्वियां गुरुदेव के साथ ही थीं। कुछ दिन जयपुर रहीं, फिर चातुर्मास हेतु विहार किया। रास्ते में एक गांव में जगह नहीं मिली। एक छोटा–सा कमरा ही मिल पाया। वहां पर इतनी गर्मी थी कि दिन भर पसीने से तर रहे। शाम को जब पंचमी समिति गए तो देखा कि एक मंदिर पहाड़ी के ऊपर है। उस मन्दिर के बाहर एक चबूतरा और एक छोटी तिबारी थी। ऊपर छत नहीं थी। शाम को साध्वियां अपनी वस्तुएं लेकर, पुजारी से पूछकर वहां आ गईं। शाम को प्रतिक्रमण किया। तब

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तक सब कुछ शान्त था। अचानक भयंकर तूफान शुरू हो गया। तूफान भी ऐसा कि सारे कपड़े उड़ने लगे। साध्वियां अपने कपड़े पकड़कर एक जगह बैठ गईं। इतने में देखा कि कहीं आग जल रही है। हवा के प्रभाव से वह आग फैल सकती थी। सूरजकंवरजी भिक्षु स्वामी का स्मरण और 'विघ्नहरण' की ढाल का उच्चारण करने लगीं। धीरे–धीरे तूफान शान्त हो गया।

वि.सं. 2015 : भगवतगढ़

भगवतगढ़ में लोग अच्छे पढ़े–लिखे थे। वहां ज्यादातर लोग अध्यापक थे। उन्हें तत्त्वज्ञान की अच्छी जानकारी थी। चातुर्मास सम्पन्न करने के बाद साध्वियां सुनारी गांव पहुंची। वहां श्रद्धा के केवल तीन घर थे। लोगों ने बताया कि साधु-साध्वियां वहां प्रायः एक दिन का ही प्रवास करती हैं पर लोगों की श्रद्धा–भक्ति से प्रभावित होकर हम वहां एक महीने ठहरीं। चार साध्वियों ने एकान्तर तप भी वहीं किया । वहां का प्रवास अच्छा रहा। फिर वहां से विहार कर साध्वियों को सवाईमाधोपुर जाना था। बीच में साहू शान्ति प्रसादजी की सीमेन्ट की फैक्ट्री थी। फैक्ट्री की बाउण्ड्री के पास ही सड़क के किनारे पांच प्लाट आटूण गांव वालों को दिए गए थे। उनके पीछे लगभग 25 छोटे मकान बने हुए थे। वहां एक दिन ठहरकर साध्वियां सवाईमाधोपुर चली गईं। वहां एक महीने रुककर वापस आईं तो जो छोटी-सी बस्ती थी, जिसे आदर्शनगर कहते थे, वहां कुछ दिन के लिए ठहरीं। सामने रात में सदैव फैक्ट्री में दिवाली जैसी रोशनी रहती थी। एक तरफ फैक्ट्री एक तरफ स्टेशन और एक तरफ कलैक्टरी। इस प्रकार चारों तरफ रोशनी दिखाई देती थी और बीच में आदर्शनगर। वहां की रौनक अच्छी लगी तो साध्वीश्री ने वहां कुछ दिन ठहरने का मन बनाया। फैक्ट्री में छोटे-बड़े हजारो बंगले थे। एक गांव जैसा बसा हुआ था।

फैक्ट्री के परिसर में कुछ अनाज की दुकानें तेरापंथी भाइयों की थीं। उन तेरापंथी भाइयों ने अर्ज की कि फैक्ट्री के क्लब में व्याख्यान करवाओ। साध्वियों ने कहा – कौन आएगा सुनने? उन्होंने कहा, "हम सब

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बंगलों में जाकर कह देंगे।" साध्वियां वहां गईं। वहां प्रवचन की पूरी व्यवस्था थी। पर कोई सुनने नहीं आए। साध्वियां वापस आ रही थीं तब रास्ते में एक पंजाबी भाई मिला जो फैक्ट्री की तरफ आ रहा था। वह बिजली का फोरमैन था। उस भाई ने साध्वीश्री से पूछा, "आप कहां के हैं?" सूरजकंवरजी ने कहा – "हमारा जन्म स्थान जयपुर है। हम जगह-जगह घूमते, विचरण करते हैं। हमारे गुरु आचार्य श्री तुलसी हैं। वे अभी कलकत्ता यात्रा पर हैं। उनका अणुव्रत आन्दोलन चल रहा है।"

इस प्रकार सारी जानकारी ले ली। हमने उसका परिचय पूछा। उसने कहा, "मेरा नाम चरणदास है। मैं बिजली का काम करता हूं। मैं यहां पर फोरमैन हूं और मेरे नीचे 500 आदमी काम करते हैं।" उस भाई ने फिर पूछा, "आप कहां ठहरे हुए हैं?" साध्वीश्री ने कहा, "हम आदर्श नगर में ठहरे हुए हैं।" भाई बोला – "पर आप लोग भिक्षा के लिए तो नहीं आते? आपके बहुत सारे जैन परिवार है।" साध्वीश्री ने कहा, "परन्तु हम जानते नहीं हैं।" तो उस भाई ने कहा, "आप मेरे साथ चलिए, मैं परिचय करवाता हूं।" और, फिर दो साध्वियां उस भाई के साथ गईं। जैनों के घर बतलाए। स्थानकवासी, मन्दिरमार्गी सभी ने गोचरी के लिए पधारने की अर्ज की। साध्वी श्री ने कहा, "पर आपके घर बंद रहते हैं।" तो उन लोगों ने कहा कि जब फैक्ट्री की विशल बजती है, हमारे खाने का समय होता है, उस समय हम दरवाजा खुला रखेंगे।

प्रतिदिन साध्वियां वहां गोचरी के लिए जाने लगीं। एक किलोमीटर की दूरी थी, पैर धूप में जलते थे, तो भी साध्वियां जाती थीं। जिस भाई ने घर बताए थे वह भी शाम के समय रोज आता और चर्चा करता। धर्म के विषय में जानकारी करता। एक दिन उसने पूछा, "क्या आप किसी दूसरी जगह व्याख्यान कर सकते हैं?" साध्वीश्री ने 'हां' कहा। तब उसने कहा कि आप मेरे घर पर सत्संग करो तो वहां सत्संग में काफी बहिनें आएंगी। साध्वीश्री ने उसका निवेदन स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार दूसरे दिन दूसरे घर में व्याख्यान की मांग आई। वहां पर व्याख्यान देने गए तो और नए व्यक्तियों से परिचय हुआ। इस तरह रोज नए-नए घरों में सत्संग की मांगें आने लगीं। वहां हर घर मे सत्संग चलता है। वहां

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जाकर व्याख्यान देते और वे लोग भी अपने भजन साध्वियों को सुनाते। लोगों से काफी सम्पर्क बढ़ा। गोचरी की भावना भी लोग भाने लगे।

एक दिन एक स्कूल में प्रवचन रखा। पहले तो हैडमास्टर ने मना कर दिया कि समय नहीं है, फिर आधे घंटे का समय दिया। उसमें अणुव्रत, आचार्यश्री तुलसी, साधुओं की दिनचर्या आदि के बारे में बताया। फिर स्वर्ग–नरक के पन्ने दिखाए। सूक्ष्म अक्षरों की लिपि देखकर सब प्रसन्न तो थे ही, आश्चर्यचकित भी थे। सवा घंटा लग गया। बच्चों ने अपने–अपने घरों में जाकर कहा, "आज साध्वी जी आई थीं। उन्होंने स्वर्ग-नरक के पन्ने, सूक्ष्म अक्षर, आदि दिखाए। इस तरह और परिचय हुआ। धर्म का काफी प्रचार हुआ। बहुत लोग आने लगे।

क्रमशः सत्संग की मांग बढ़ने लगी। काफी लोगों से परिचय हो गया, फिर घर–घर में सत्संग करना साध्वियों ने बंद कर दिया तथा अपना स्थान व समय बता दिया। करीबन 50-60 औरतें व्याख्यान सुनने के लिए गर्मी में भी आ जातीं। अधिकतर पंजाबी थीं। उन्हें भजनों का शौक था। वहां साध्वियों का धर्म प्रचार का कार्य अच्छा जम गया। फोरमैन भाई साध्वियों के इस कार्य में बहुत सहयोगी बना। वह आर्य समाजी था; परन्तु जैन धर्म में भी उसकी बहुत जिज्ञासा थी। जो बात उसकी समझ में नहीं आती, उसका पीछा नहीं छोड़ता। दो घंटे वज्रासन की मुद्रा में बैठता। नए-नए लोगों को लाता। खुद समझाता – ये जैन साधु हैं, त्यागी हैं। अपने पास पैसे नहीं रखते। एक दिन पूछा, "आप जैनों के घर से ही भिक्षा लेते हैं, अन्य घरों से नहीं।" साध्वीश्री ने कहा कि जिन घरों का खानपान शुद्ध होता है, हम वहीं से भिक्षा लेते हैं। उसने कहा, "आप मेरे घर गोचरी के लिए नहीं आए?"

साध्वीश्री ने कहा, "आपने भावना कब भाई?" उसने कहा– "हमने सोचा, आप जैनों के सिवाय अन्य घरों में नहीं जाते। अब मैं भी भावना भाता हूं।" सतियां उसके घर गोचरी जातीं। कभी पानी से हाथ धो लिया, कभी कच्चा पानी भोजन के छू जाता, कभी घर असूझता हो जाता, तो सतियों को खाली आना पड़ता। उसको यह अच्छा नहीं लगता। फिर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उसकी पत्नी रसोई बना एक तरफ रख देती और इन्तजार करती रहती। उसके भैंस थी। दूध, दही आदि सभी चीजें बहराती थी।

आचार्यश्री का आदेश आया कि कोटा तथा बकाणी की यात्रा करनी है। आदर्श नगर के लोग कहने लगे चातुर्मास यहीं पर करें। साध्वीश्री ने कहा – "चातुर्मास करना हमारे हाथ में नहीं है। गुरुदेव जहां फरमाते हैं, हम वहीं चातुर्मास करते हैं।" आखिर वहां से विहार कर साध्वियां कोटा बाकाणी की तरफ गए। लोग पहुंचाने के लिए आए। एक युवक जो दिगम्बर जैन था, काफी अच्छा पढ़ा हुआ था, कविताएं लिखता था, वह बहुत भावुक हो गया और कहने लगा कि मैं तो साध्वियों के साथ ही जाऊंगा। मुझे व्याख्यान सुनना बहुत अच्छा लगता है। उसे मुश्किल से समझाकर भाइयों के साथ वापिस भेजा। घर आने के बाद लोगों से पता कर उस युवक ने चातुर्मास कराने के लिए अनेक पत्र गुरुदेव के पास भेजे।

कोटा-बकाणी यात्रा

2016 का चातुर्मास सीमेन्ट फैक्ट्री आदर्श नगर में फरमाया। साध्वियां एक महीना कोटा रहीं। वहां से विहार कर बकाणी गए। वहां के लोग भी चातुर्मास करने के लिए प्रार्थना करने लगे।

साध्वियां सीमेन्ट फैक्ट्री से कोटा-बकाणी की तरफ गए तो 160 मील पड़ा और पुनः 160 मील की दूरी तय कर सीमेन्ट फैक्ट्री पहुंचे। जाते समय सड़क का रास्ता लिया। सड़क से एक–एक किलोमीटर गांव दूर पड़ते थे। आते समय रेलवे का रास्ता लिया। कोटा वाले लोगों ने कहा, "हम तो सड़क के रास्ते से ही आते-जाते हैं। वह रास्ता हमारा परिचित है। रेलवे का रास्ता हमारा परिचित नहीं है। पर साध्वीश्री का मन रेलवे का रास्ता लेने का था, इसलिए वही रास्ता ले लिया।

लगभग सभी स्टेशनों पर ठहरने की व्यवस्था मिल गई। एक–दो स्थानों पर कुछ कठिनाई उठानी पड़ी।

लखारा गांव । पास में ही फैक्ट्री परिसर। सेवार्थी साध्वीश्री जी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

को गांव में ले जाना चाहते थे, पर साध्वीश्री बड़ी सीमेंट फैक्ट्री के परिसर को देख उधर पधार गईं। स्थान की समुचित व्यवस्था नहीं मिल पाई । आखिर एक व्यक्ति आया, वह दिगम्बर जैन था। उस व्यक्ति ने कहा, "मैं एक जैन साहब को फोन करता हूं, वह आपकी ठहरने की व्यवस्था कर देंगे।" दूसरे जैन स्थानकवासी, जामनगर के रहने वाले थे। उन्होंने अपनी पत्नी को फोन किया – महासतीजी आए हुए हैं, विश्रामगृह में ठहरे हुए हैं। जैन साहब की पत्नी को पता लगा और फौरन आई और बोली, "महासतीजी, आप यहां क्यों रुके? मेरा बंगला यहां से एक किलोमीटर पीछे रह गया। आप वहां पधारें।" साध्वियां उनके साथ गई। गर्मी, धूप इतनी गहरी कि पैर जलने लगे, पर उस बहिन की भक्ति इतनी थी कि वापिस एक कि.मी. चलकर साध्वियां उसके घर गई। उसने कहा, "महासतीजी, पानी तो नहीं है, ठण्डा दूध है। फिर दूध लाए, सबने पीया, प्यास भी लगी हुई थी। फिर पन्नालालजी, जो सेवा में थे आए और बोले कि हम तो वहीं ठहरे हुए हैं। रसोई बनाई है, आप वहां पधारें। आहार तो और घरों में भी मिल जाता, पर पानी के लिए जाना पड़ा। एक मील गए और वहां से गोचरी-पानी सब लेकर के आए। एक मील जाना और वापस आना। आषाढ़ का महीना, दोपहर के एक बजे का समय। गर्मी इतनी भयंकर कि पैरों में छाले हो गए। आहार किया।

जैन साहब की फैक्ट्री से छुट्टी हुई। वे घर आए। उनकी दो बेटियां जो जयपुर में डॉक्टरी पढ़ रही थीं, वे भी आई हुई थीं। "आप कहां से आए हैं?" – उन्होंने पूछा। साध्वीश्री ने कहा, "कोटा से आए हैं। सवाईमाधोपुर हमारा चातुर्मास है।" साध्वीश्री ने परिचय दिया, हम तेरापंथी हैं, हमारे गुरु आचार्यश्री तुलसी हैं। 600 साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में हैं। तेरापंथ की मर्यादाएं आदि बताईं। पन्ने दिखाए, सूक्ष्म अक्षर आदि दिखाए। वे बड़े खुश हुए।

कॉलोनी ऐसी बसी हुई थी कि बीच में एक टेकड़ी थी, उसमें बगीचा लगा हुआ था, कुर्सियां लगी हुई थीं, बच्चों के झूले थे और बगीचे के चारों तरफ अफसरों के बंगले थे। बड़ा ही रमणीय स्थान था। एक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हरियाणा का तेरापंथी परिवार भी वहां रहता था। हमारी सेवा में भाई थे और दूसरे भाई भी सवाईमाधोपुर से आ गए। इस तरह सेवा में बहुत भाई हो गए। वे सब अपना काम निपटाकर जहां साध्वियां ठहरी हुई थीं, वहां आ गए। रात्रि में व्याख्यान हुआ। कॉलोनी के सब लोग आए। उनको व्याख्यान अच्छा लगा। सब लोगों ने निवेदन किया – यहां कुछ दिन और रुकिए। उनको समझाया समय कम है। चातुर्मास शुरू होने वाला है। अब हम नहीं रुकेंगे। पर उन लोगों की भावना इतनी थी कि वे रुकने के लिए आग्रह करने लगे। रात्रि में बारिश इतनी अधिक हुई कि दूसरे दिन वहां रुकना ही पड़ा। उन लोगों की भावना पूरी हो गई। वे लोग खुश हो गए और बोले पुनः कृपा करवाना ।

फिर एक स्टेशन पर जगह नहीं मिली। वहां का स्टेशन मास्टर कुछ अड़ियल स्वभाव का था । साध्वियों ने उसे बहुत समझाया पर उस पर इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। आखिर पुलिस थाने में ठहरने को स्थान मिला। पुलिस वाले कमरा साफ कर रहे थे। दरवाजे के पास एक कोटड़ी थी, उसमें चोरों को रखा जाता था। साध्वियों को इसका पता नहीं था। साध्वियों ने कहा – "आप कमरा खाली न करें, हम यहाँ रह जाएंगे।" थानेदार ने कहा – "यह तो चोरों को रखने का स्थान है। आप अभी तो कमरे में रहें। शाम को दफ्तर खाली कर देंगे। वहां सो जाना, वहां गर्मी नहीं रहेगी।"

थोड़ी देर बाद पुलिसवाले चोरों को पकड़कर लाए। तब भाई जो साथ थे, बोले – "ये कैसी जगह पर आ गए हैं? यहां चोरों को मारेंगे, हम लोग कैसे देख सकते हैं?" फिर साध्वीश्री थानेदार के पास गई। उनसे कहा – "आप इन लोगों को मारेंगे?" उसने हाथ जोड़कर कहा, "आप डरो मत, आराम से रहो। आज कुछ भी नहीं करेंगे।" दिन में सब लोग आए, व्याख्यान हुआ, पन्ने दिखाए। शाम को दफ्तर खाली कर थानेदार बोला, "अब आप यहां आ जाओ। अब मैं जा रहा हूं। सुबह आप लोग कितने बजे जाएंगे?'' ''सूरज उदय होते ही यहां से चले जाएंगे।" – साध्वीश्री ने कहा। जाते समय पुलिस वालों से कहा, ध्यान रखना। सुबह सूर्य उदय से पहले थानेदार साहब आ गए। विहार करवाने के लिए थोड़ी दूर साथ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चले। जाति से मुसलमान होते हुए भी उन्होंने जैन साध्वियों के प्रति बड़ा आदर भाव दर्शाया ।

इन दो घटनाओं से हमें सीख मिल गई कि स्थान की पूर्व गवेषणा करके ही यात्रा करनी चाहिए, जिससे स्थान सम्बन्धी अनावश्यक कठिनाई न उठानी पड़े ।

सं. 2016 : आदर्श नगर

यात्रा करती हुई चातुर्मास करने साध्वियां आदर्श नगर पहुंची। वह एक नई बस्ती थी। तीन घर वाले तो अपने अपने घरों में बस गए थे। एक मकान खाली था। पूरा बना नहीं था। चार दुकानें और बरामदा था। साध्वियां वहां पर ठहरीं पर वहां बस्ती पूरी नहीं थी, जंगल था, चारों तरफ हरियाली हो गई। जो सीमेन्ट के गड्ढे थे, वे सब पानी से भर गए। उनमें मेंढ़क बोल रहे थे, सांप चल रहे थे। शाम को पंचमी समिति के लिए गए तो वहां भी दो मील तक घूमकर आए, पर जगह नहीं मिली। सब जगह हरियाली हो गई थी। साध्वियों ने सोचा, अब क्या करें? कैसी जगह आ गए? शाम को फोरमैन आया। उसने कहा, "अब कैसे रहोगे? सब जगह कीचड़ ही कीचड़ है, पानी भरा है और कोई जगह नहीं है, अंधेरा है, बत्ती भी नहीं है।" वहां के रहने वाले लोग साधारण थे। वे कोई व्यवस्था कर भी नहीं सके।

दूसरे ही दिन फोरमैन आया। उसने सोचा, ये लोग कैसे आएंगे, तो उसने साध्वियों के स्थान के सामने के जो गड्ढे थे उन्हें अपने फैक्ट्री के सामान, जैसे – सीमेन्ट, पत्थर आदि से भरकर ठीक करा दिया। अब रही दूसरी बात, अंधेरे की। बाहर तो वह बिजली लगा नहीं सकता था। उसने फैक्ट्री की बाउण्ड्री के अन्दर 1000 वाट का बल्ब लगा दिया जिससे सम्पूर्ण आदर्श नगर में रोशनी हो गयी। अन्धेरा मिट गया। खुली जगह पर तिरपाल लगा दिया गया। पंचमी समिति के लिए फैक्ट्री का जहाँ कचरा डाला जाता था, वह स्थान बता दिया। वह स्थान प्रायः निरवद्य था । सचमुच, एक विवेकवान् व्यक्ति अनेक समस्याओं का समाधान कर देता है ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एक दिन उसने कहा – "हमारे आर्य समाज का एक मकान है, वहां सत्संग करें। वहां भाई लोग काफी लाभ ले सकते हैं।" हमने स्वीकृति दे दी। पर उसके मन में विश्वास नहीं था कि हम लोग दूसरे समाज के लोगों के बीच जाएंगे, व्याख्यान करेंगे। वहां उनके सन्त भी थे। दो बजे का समय दिया। हमने दो बजे तक इन्तजार किया। वह भाई नहीं आया। अचानक साध्वियों को अपने घर में देख वह हड़बड़ा गया। उसने कोई व्यवस्था नहीं कर रखी थी। वह साइकिल लेकर आगे दौड़ा और साध्वियों के साथ में अपने बेटे को भेज दिया। फिर सब लोगों को सूचना देकर बुलाया और सारी व्यवस्था की। साध्वियों ने वहां व्याख्यान किया। लोग बड़े खुश हुए और आर्य समाजी सन्त भी बड़े प्रसन्न हुए। साध्वियाँ पुनः स्थान पर आ गईं। शाम को जब वह आया तो उसने सारी बात बताई कि उसे विश्वास नहीं था कि आप लोग दूसरे समाज के बीच व्याख्यान करेंगे, इसलिए मैंने कोई व्यवस्था नहीं की । आप समय पर पहुंच गईं, यह सचमुच आपकी महानता है।

सावन–भाद्रव में बरसात होती ही है। एक दिन इतनी बारिश हुई कि पूरे दिन होती रही। उस दिन फोरमैन घर में नहीं था, इसलिए उसे पता नहीं चला। हम सबने उस दिन उपवास किया। दूसरे दिन भी वर्षा नहीं रुकी। कुछ साध्वियों के बेला (दो दिन का उपवास) हो गया। भगवतगढ़ से भाई दर्शन करने के लिए आया। उसके पास कुछ परांठे आदि थे। जिनसे बेला नहीं हुआ, उन्होंने कुछ आहार किया। अब जब फोरमैन की छुट्टी हुई तो वह घर पर आया और पूछा – क्या साध्वियाँ आई थीं ? उसकी पत्नी ने कहा – नहीं आईं। फिर वह तुरन्त हमारे स्थान पर आया, पूछा – आज आप भिक्षा के लिए नहीं आए? हमने कहा, "वर्षा में कैसे आएं?" वह बोला, कल भी बरसात थी। हां, कल तो सबके ही उपवास था। हमने फिर कहा– "आज एक भाई भगवतगढ़ से आया, उसके पास टिफिन था, हमने कुछ आहार उससे ले लिया। दो साध्वियों ने आहार किया है और तीन के बेला है।" तब उस भाई ने कहा – हम भी टिफिन ले आएंगे और यहीं खा लेंगे। हमने कहा, "हमारे लिए लाना नहीं है। वह भाई तो सवाई माधोपुर जा रहा था। रास्ते में दर्शन करने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

के लिए रुका था । अतः हमने उसके टिफिन में से कुछ ले लिया।

"बरसात तो आती रहेगी, कितने दिन भूखे रहेंगे ? हमें दोष लगेगा। हम खाते हैं, आप भूखे रहें।" साध्वीश्री ने समझाया – आपको दोष नहीं लगेगा। हमारी मर्यादा है। हम बरसात में भिक्षा लेने के लिए नहीं जाते हैं। फोरमैन बोला – हम छींटे नहीं लगाएंगे, मोटर में लेकर आ जाएंगे। पर ऐसे भी नहीं लाना। साध्वीश्री की बात उसके गले नहीं उतरी, उसने सब जैन भाइयों से जो फैक्ट्री में थे, पूछा। सबने अलग–अलग विधियां बताईं। एक भाई जामनगर के मन्दिर मार्गी परिवार से था। उसने कहा, जिसके उपधान तप किया हुआ है, वह ले जाकर दे तो ले सकते हैं।" तब फिर वह आया और कहा – जैन साहब की पत्नी उपधान की हुई है, वह लाकर दे तब तो आप ले सकते हैं ? साध्वीश्री ने कहा – हमारी यह मर्यादा नहीं है। दूसरे जैन समाज के लोग ले लेते हैं। फोरमैन भाई को समझाना कठिन हो गया। तीसरे दिन बारिश रुकी तब उसके घर गए।

संवत्सरी पर्व के दिन आदर्श नगर के परिपार्श्व के लोग आए। उनके ठरहने की व्यवस्था फोरमैन ने की। इस प्रकार चातुर्मास में प्रायः सभी व्यवस्थाओं में उसका सक्रिय सहयोग रहा । वह प्रतिदिन स्वामीजी के सिद्धान्तों की जानकारी करता रहता था। चातुर्मास सम्पन्न होने पर हमने तेरापंथी भाइयों से पूछा – हम शाम को विहार करके बाहर रुकेंगे, कोई जगह है क्या? उन्होंने कहा – धर्मशाला है। हम विहार करके गए। धर्मशाला इतनी गंदी थी कि हर जगह कचरा और पीक थुका हुआ था। फर्श टूटी-फूटी थी। यह देखकर फोरमैन भाई बोला – ऐसी जगह में ये साध्वियां कैसे रहेंगी? वह हमको पेट्रोल पम्प पर छोड़ स्वयं स्थान की तलाश करने निकला। इधर सूर्यास्त की तैयारी उधर उसकी ड्यूटी का समय। वह साइकिल लेकर दौड़ा और पास में कलेक्ट्री के एक बंगले में गया। वहां पूछा – आप का यह बाहर का कमरा खाली है क्या? उन्होंने कहा – हां। कक्ष को शीघ्र खाली करने का निर्देश दे वह हमारे पास आया। वह हमें छोड़कर ड्यूटी पर चला गया। वहां रहने वाले लोग यू. पी. के थे। वे साधु की चर्या से सर्वथा अनभिज्ञ थे । वे हमें देखकर घबरा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गये और अपना कमरा अन्दर से बंद कर लिया। हम अपना प्रतिक्रमण करने लग गए। बोलने का समय नहीं था। वे कपाट के छिद्रों से देख रहे थे कि हम क्या कर रहे हैं। हमारा प्रतिक्रमण पूरा हो गया, फिर वह फोरमैन भी ड्यूटी से आ गया। तब मकान वालों को साधुओं की सारी चर्या बताई। वे बड़े खुश हुए। रात्रि में उपदेश, भजन सुन उन्होंने विशेष तोष का अनुभव किया ।

दूसरे दिन विहार किया तो वे भी अपना टिफिन लेकर आ गए। आचार्य प्रवर की सन्निधि में दस दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर में सम्भागी हो धन्य–धन्य हो गया । सभी ने तेरापंथ की गुरुधारणा की। उनका एक लड़का बम्बई में नौकरी करता था। लोगों से कहा यहां साध्वी सूरजकुमारीजी आएं तो मुझे सूचना कर देना। हम बम्बई यात्रा में जब पनवेल गए तो भाइयों ने उसे सूचना भेजी। वो भी अपना टिफिन लेकर आ गया। पूरे दिन सेवा की। इस प्रकार अच्छे संस्कार सब बच्चों में भरे। जहां कहीं भी उसको मौका मिलता, वह साधु-संतों के दर्शन करने चला जाता।

सं. 2023 : थामला

2023 का चातुर्मास थामला फरमाया गया। इस तरह दो चातुर्मास मेवाड़ में करके फिर आचार्यवर के दर्शन बीदासर मर्यादा महोत्सव में किए। महोत्सव के बाद आचार्यश्री को दक्षिण यात्रा में जाना था। कई साधु–साध्वियों के चातुर्मास भी दक्षिण की तरफ फरमाए गए। सूरजकंवरजी का भी मन था, लेकिन उन्होंने अर्ज नहीं की। मन की बात कौन जाने? पहले से ही मन में था कि आचार्यश्री दक्षिण की तरफ जाएंगे तो मैं भी वहां जाऊंगी। जिन्होंने अर्ज की, उन चार ग्रुपों – साध्वीश्री विजयश्रीजी, गौरांजी, कंचनकंवरजी और सोनाजी के चातुर्मास दक्षिण की ओर घोषित कर दिए। साध्वीश्री सूरजकंवरजी का चातुर्मास कहीं भी नहीं फरमाया।

बीदासर मर्यादा महोत्सव के बाद आचार्यश्री लाडनूं पधारे। वहां से दक्षिण की तरफ विहार होना था। सब विहार की तैयारियाँ कर रहे थे। सूरजकंवरजी का चातुर्मास जब नहीं फरमाया गया तो एक दिन शाम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

को उन्होंने आचार्यश्री के दर्शन किये। आचार्यश्री डायरी लिख रहे थे। अर्ज की – "गुरुदेव ! कृपा करके मुझे भी दक्षिण यात्रा में साथ रखावें।" आचार्यश्री ने इनकी अर्ज ध्यान से सुनी, फरमाया, "तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता।" साध्वीश्री ने कहा, "गुरुदेव! यहां भी तो विचरते ही रहते हैं।" उस समय तो आचार्यश्री ने कुछ नहीं फरमाया। फिर सुबह वन्दना करने के लिए गए तब फरमाया, "सूरजकंवरजी, दक्षिण आ जाओ।" सभी को आश्चर्य हुआ कि सूरजकंवरजी को दक्षिण के लिए कैसे फरमा दिया। सूरजकंवरजी को तो इतनी प्रसन्नता हुई कि वर्षों से संजोया हुआ स्वप्न साकार हो गया।

जब लाडनूं से विहार होने वाला था, उस समय जिस सिंघाड़े को मध्यप्रदेश भेजना था, उनको खानदेश भेजना पड़ा। तब आचार्यश्री ने दक्षिण जाने वाली साध्वियों से पूछा – मध्यप्रदेश चातुर्मास करने कौन जा सकता है? सबने अपनी-अपनी कठिनाई बताई। फिर साध्वीश्री सूरजकंवरजी को निर्देश किया, "अब की साल तुम पेटलावद चली जाओ।" सूरजकंवरजी ने कहा, "गुरुदेव! मैं चली तो जाऊंगी, पर आप मुम्बई पधारें तब मुझे बुलाने की कृपा करवाना।'' आचार्यश्री मुस्कुरा दिए।

कल्याणमलजी बरड़िया पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष उस समय वहीं थे। सूरजकंवर जी ने उनसे कहा, आप गुरुदेव को याद दिला देना। सूरजकंवर जी का 2024 का चातुर्मास पेटलावद घोषित कर दिया।

सं. 2024 : पेटलावद

वहां से विहार करके कुछ दिन रतलाम रुके फिर आसपास के गांवों में विचरण करते हुए पेटलावद पहुंचे। फिर साध्वीश्री ने भाइयों से पूछा कि सूरत जाने का रास्ता कौनसा है, तो भाइयों ने बताया कि रतलाम से बड़ौदा और बड़ौदा से सूरत रेलवे पटरी है। तब साध्वीश्री ने सोचा आचार्यश्री का चातुर्मास अहमदाबाद है, अहमदाबाद से सूरत जाते हैं तो बड़ौदा आता है। तब सोचा कि बड़ौदा दर्शन हो जाएं तो अच्छा है; क्योंकि गुरुदेव के भी बीच में बड़ौदा आता था और मेरे भी। अतः

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वीश्री ने मन में संकल्प किया कि गुरुदेव का बड़ौदा में दर्शन हो जाए। पर हो कैसे? गुरुदेव के रास्ता छोटा पड़ता था और साध्वीश्री के 20 कोस अधिक था। आचार्यश्री के विहार लम्बे-लम्बे हो रहे थे।

गुरुदर्शन की उत्कट अभिलाषा

साध्वीश्री के मन में खाते-पीते, उठते-बैठते, सोते-उठते, एक ही विचार रहता था कि गुरुदेव के दर्शन कैसे हो? लोगों से कहा– आचार्यश्री को अर्ज करो, हमें दर्शन करने हैं। भाइयों ने कहा – मालवा में साधु-सतियों को दो साल से पहले बुलाते नहीं हैं। यहां दो साल का टैक्स चुकाना पड़ेगा। भाइयों से कहा – आप इसकी चिंता मत करिए, हमारी अर्ज करो। भाइयों ने अर्ज की। आचार्यश्री ने कृपा करके दर्शनों का आदेश फरमा दिया।

चातुर्मास उतरते ही विहार किया। दो बहिनें, एक भाई, एक काशीद साथ में था। रास्ता रेलवे पटरी का था। कंकड़ बहुत बिछी हुई थी। पैर छिल गए। पहले पद-त्राण नहीं पहनते थे। दिन भर यही चिन्तन था कि बड़ौदा दर्शन करने हैं, फिर सूरत तक आचार्यश्री के दर्शन नहीं होंगे। साध्वियों के लिए रास्ता नया था। अंधाधुंध चलते गए। जिस दिन गुरुदेव बड़ौदा से छह किमी दूर छावनी में विराजे, वह गांव साध्वियों के 12 किमी पड़ता था। उस दिन जो भाई-बहिन साथ थे, उन्होंने कहा कि बीच में कोई स्टेशन नहीं है, आप सीधा ही विहार कर छावनी में पधार जाएं। साध्वियों ने हां भर ली। बहिनें छावनी पहुंची, तो गुरुदेव को पता चल गया कि सूरजकंवरजी पहुंचने वाली हैं। साध्वियों को पता नहीं था कि आचार्यश्री वहां पहुंचने वाले हैं। रास्ते में साध्वियों के पैर इतने घायल हो गए थे कि चला ही नहीं जा रहा था। सूरजकंवरजी ने सोचा कि वे बीच में ही रुक जाएंगी। फिर रायकंवरजी ने कहा कि कोई साधन नहीं है, वो लोग हमें कहां ढूंढेंगे। आप धीरे-धीरे पधारें। हम जल्दी–जल्दी जाकर पानी लेकर आपके सामने आ रहे हैं। उधर भाई-बहिनों ने आचार्यश्री के दर्शन किए, उन्हें साध्वियों का पता लग गया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

व्याख्यान हो गया। गोचरी हो गई। आहार-पानी हो गया, तब भी साध्वियां नहीं पहुंचीं। उस समय शासनगौरव साध्वीश्री कमलूजी प्रमुखाश्री जी के विकल्प के रूप में कार्य कर रही थी। दो साध्वियों को सामने भेजा। साध्वियाँ एक किमी तक आ गईं, फिर भी सूरजकंवरजी आदि नहीं पहुंचे। उन्होंने राह चलते लोगों से कहा – यदि हमारे जैसे कोई दिखाई दे तो कहना कि साध्वियाँ आपका इन्तजार कर रही हैं। रास्ते में एक भाई साध्वी श्री को मिला और बोला, "जल्दी कीजिए, आप जैसी सतियां आपका रास्ते में इंतजार कर रही हैं।" साध्वियों ने सोचा कि हमारे साथ एक बहिन थी जिसने सफेद ओढ़ना पहना हुआ था, वही होगी। फिर थोड़ा और आगे चले तो एक भाई और मिला। उसने भी यही कहा कि जल्दी कीजिए। कोई आप जैसे हैं, वे आपका इंतजार कर रहे हैं। फिर भी साध्वियों ने सोचा कि यहां पर तो किसी भी सिंघाड़े का चौमासा नहीं है। साध्वियों को तब तक भी आभास नहीं हुआ कि गुरुदेव वहां पधारे होंगे और कोई साध्वियां हमारा इंतजार कर रही होगीं। फिर नजदीक पहुंचे तो देखा कि बहिन तो एक ही थी, यहां दो कौन खड़े हैं। पास गए तो पता चला कि सचमुच साध्वियां इंतजार कर रही थीं। उन्होंने कहा, "कितनी देर कर दी, हम तो कबसे आपका इंतजार कर रही हैं। आचार्यश्री का विहार होने वाला है।" साध्वियों को इतना आश्चर्य हुआ कि आचार्यश्री वहां पर विराज रहे हैं। सतियों के पास से पानी पीया और जल्दी-जल्दी चल पड़े। गुरुदेव के इस तरह दर्शन हो जाएंगे, सोचा भी नहीं था। साध्वियों को इतनी खुशी हुई कि पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। वर्ष भर का सपना जीवन्त रूप लिए हुए था। हृदय खुशी से फूला नहीं समा रहा था। उस प्रसन्नता को शब्दों में व्यक्त करना सम्भव नहीं।

जब वहां पहुंचे तो देखा सतियां नांगला लिए खड़ी थीं, विहार करने के लिए। सूरजकंवरजी आदि साध्वियों के कंधे से बोझ उतार लिया और कहा, जल्दी जाओ, आचार्यश्री का विहार हो जाएगा। साध्वियां जल्दी से आचार्यश्री के पास पहुंचीं। वहां भी विहार की आवाज हो गई थी। आचार्यश्री भी साध्वियों का इंतजार ही कर रहे थे। गुरुदेव ने पूछा – आ गए? सुखसाता है? हम बड़ौदा जा रहे हैं। तुम कल आ जाना। उधर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सतियों ने पात्रे खोलकर उनमें आहार-पानी आदि रख दिया। साध्वियों ने पहुंचकर दर्शन किये, इतने में विहार हो गया। उस दिन वहीं पर रुके। विश्राम हो गया। दूसरे दिन विहार करके बड़ौदा पहुंच गए। साध्वीश्री का संकल्प फलित हो गया।

बम्बई : आचार्यश्री के साथ-साथ

आचार्यश्री अहमदाबाद चातुर्मास सम्पन्न कर पांच दिन उपनगरों में रुक गए, इसलिए साध्वियों ने बड़ौदा में दर्शन कर लिए। फिर सूरत और बम्बई महोत्सव तक साथ में ही रहे। बम्बई में पंचमी की बड़ी दिक्कत थी। साध्वियां प्रतिदिन साध्वीश्री कमलूजी के साथ नेपेन्सी रोड़ जातीं, वहीं आहार-पानी करतीं। रात में वहीं रहतीं, सुबह पंचमी जाकर, नाश्ता-पानी करके पुनः आ जाते। फिर दिन में व्याख्यान सुनते, सेवा करने जाते। गोचरी, पानी, आहार आदि करते। शाम को पुनः नेपेन्सी चले आते। इस प्रकार रास्ते में बहुत आनन्द आया। रास्ते में सूरत से बम्बई तक रेलवे पटरी पर चलते थे। रेल आती तब कभी इधर जाते, कभी उधर जाते। एक बार साध्वियां आचार्य श्री के साथ हो गईं। समुद्र के किनारे चल रहे थे, पानी आ गया। आचार्य श्री आगे-आगे, हम उनके पीछे चलते रहे।

मर्यादा महोत्सव के आसपास साध्वीश्री सूरजकंवरजी के पैर में अंगूठे पर रसौली हो गई। डॉक्टरों ने कहा बढ़ गई तो दिक्कत हो जाएगी। वह रसौली सुपारी जितनी बड़ी हो गई थी। उसका ऑपरेशन शासनगौरव कमलूजी ने अस्पताल में जाकर किया। तीन टांके आए। डॉक्टर ने आश्चर्यचकित हो कहा – "आपने कहां से सीखा?" साध्वीश्री कमलूजी ने कहा, "हमने तो कहीं नहीं सीखा, देखकर सीख लिया।" उसने कहा – हम तो वर्षों पढ़ते हैं और आप ऐसे ही सीख गईं। सचमुच आपकी कार्यकुशलता व प्रतिभा विलक्षण है।

मर्यादा महोत्सव सर्कस पण्डाल में हुआ। मर्यादा महोत्सव पर सिंघाड़ों के चातुर्मास फरमा दिए। साध्वी सूरजकंवरजी और विजयश्रीजी का चातुर्मास नहीं फरमाया। हमें पूरा विश्वास हो गया कि आचार्यश्री उन्हें

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दक्षिण में ले जाएंगे। मर्यादा महोत्सव के बाद आचार्यश्री उपनगरों को परसते हुए ठाणा पधारे। साध्वीश्री भी साथ में ही थीं। सूरजकंवरजी के पैर में ऑपरेशन की वजह से कुछ दर्द था। बुखार भी हो गया। 103^0 बुखार में भी आचार्यश्री से कोई निवेदन नहीं किया। आचार्यश्री के पीछे-पीछे चलते रहे। सोचा कि अगर कहेंगे तो हमें यहीं रहना पड़ेगा। सोचा, अपने आप ठीक हो जाएंगे।

ठाणा में उल्लासनगर के नारायण भाई ने आचार्यश्री से अर्ज की – "सिन्धी कैम्प उल्लासनगर में साधु-साध्वियों को भेजें। मेरे जैसे पापी लोग बहुत हैं, उनका भी उद्धार हो जाएगा।" आचार्यश्री ने सूरजकंवरजी को याद फरमाया। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा – "उनको बुखार है, वो आई नहीं।" दूसरे दिन वन्दना में गए तब फरमाया – "तुम उल्लासनगर जाओ वहां सिन्धी लोगों को समझाना।" साध्वीश्री की दक्षिण यात्रा पर विराम लग गया।

■■■

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

: 4 :

उल्लासनगर का चमत्कारी प्रवास

बम्बई का उपनगर

उल्लासनगर प्रायः सिन्धी लोगों की बस्ती थी। भारत विभाजन के समय यहाँ मिलिट्री की छावनी थी। वहां से उन लोगों को उठा सिन्धी लोगों को बसाया गया था। करीब पाँच लाख लोग थे और पाँच कैम्प थे। एक-एक कैम्प में हजारों-हजारों घर थे। अनेक धर्मगुरुओं के प्रवचन, भण्डारे आदि वहाँ चलते थे। कुछ दिन ठाणा ठहरकर साध्वीश्री उल्लासनगर चार नम्बर कैम्प पहुँची। वहाँ साध्वियों को जो स्थान उपलब्ध हुआ, वहाँ दो कमरे सड़क पर आगे खुलते थे। खुले स्थान पर वहाँ पण्डाल बाँध दिया। आचार्यश्री की फोटो आदि लगा दी। आने जाने वाले लोग पूछते, क्या होगा? क्या कोई शादी है? साध्वियों के वहाँ पहुँचने से पूर्व ही प्रचार हो गया। सतियों ने सोचा यहां इतने धर्मगुरु हैं, हम पांच ही सतियां हैं, क्या कर सकेंगे? पर गुरुदेव के प्रताप से जाते ही दो घटनाएं ऐसी घटित हुईं कि सबके दिलोदिमाग में साध्वियाँ छा गईं।

एक चमत्कार

चमत्कार सभी को प्रिय होते हैं। चमत्कार को सभी नमस्कार करते हैं। चमत्कार वह चुम्बक है जो व्यक्ति को अपनी ओर खींच लेता है। हमारे जाते ही परसराम भाई के छह भाइयों में से एक भाई परसराम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ने मांस छोड़ दिया। आगे का कमरा साध्वियों को दे दिया, पीछे छहों भाइयों का परिवार रहता था। भाई दुकान चले गये, घर में बहिनें थीं। साध्वियों ने सोचा, "माँस पकेगा, तो हम कैसे रह सकेंगे ?" साध्वियाँ उन लोगों को समझाने उनके घर गईं। उन्होंने वन्दना की। साध्वियों ने कहा, "हम आपके घर आए हैं। आप हमें क्या भेंट देंगी ? आपके घरों में माँस-मच्छी पकेगी तो हम यहाँ कैसे रह सकेंगे ?" उन्होंने कहा, "महाराज आप इतने त्यागी संत आए हैं तो हम नहीं पकाएंगे। भाई लोग माँगेंगे तो उन्हें कहेंगे कि होटल में जाकर खाओ।" सचमुच बहिनों ने बहुत बड़ी हिम्मत की। साध्वियाँ वहाँ रहीं और शाम को प्रवचन करतीं। चित्रमय पन्ने दिखातीं और उन लोगों को समझातीं। धीरे-धीरे परिषद् बढ़ती गई। बच्चों ने पन्ने देख अण्डा, माँस-मच्छी आदि खाना छोड़ दिया। उन्हें देख बड़े भी माँस छोड़ने लगे।

हमें आए दो ही दिन हुए थे। परसराम भाई के चार दिवसीय पुत्र को पीलिया हो गया। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। यहां इलाज नहीं होगा, बम्बई या ठाणा ले जाओ। सब घबरा गए, क्योंकि इससे पहले जो बच्चा हुआ था वह भी 6 दिन के पोलियो में खत्म हो गया था।

घर के सभी लोग चिन्तित थे कि क्या किया जाए? उस समय वयोवृद्ध महिला जो परसराम की मां थी, उसने कहा, "आज अपने घर त्यागी संत पधारे हुए हैं, उनके पैर धोकर वह पानी बच्चे को पिला दो। मुझे लगता है, बच्चा ठीक हो जाएगा।" वास्तव में उल्लासनगर के लोगों की श्रद्धा-भक्ति बेजोड़ थी।

पारिवारिक जन बम्बई वाले कान्तिभाई जो उस समय उल्लासनगर में सतियों की व्यवस्था में जुड़े हुए थे, के पास आए। उन्होंने साध्वीश्री से निवेदन किया – आप हॉस्पिटल में बच्चे और उसकी माँ को मंगलपाठ सुना दें ।

सभी मिलकर हमारे पास आए, वन्दना की तथा निवेदन किया – "साध्वीजी, हमारा बच्चा बीमार है, कृपा करके उसे दर्शन दिलाएं।"

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्ज सुनकर साध्वी सूरजकुमारीजी एक साध्वी को साथ में लेकर हॉस्पिटल गईं। बच्चे को दर्शन दिये, मंगल पाठ सुनाया, अनायास मुँह से निकल गया – चिन्ता की बात नहीं है, बच्चा तो ठीक ही लगता है।"

इस बात को उन्होंने गहराई से पकड़ा व दृढ़ श्रद्धा से उसे स्वीकार करते हुए डॉक्टर से कहा – हम बच्चे को बम्बई नहीं ले जाएंगे, आप यहीं पर इलाज शुरू करें। श्रद्धा और आस्था का अद्‌भुत चमत्कार हुआ कि बच्चा ठीक हो गया।

यह छोटी-सी बात पूरे उल्लास नगर में पानी में तेल-बिन्दु की तरह फैल गयी। मुंह-मुंह पर एक ही चर्चा – त्यागी संतों का कमाल देखो, बच्चा ठीक हो गया। अनेक लोग अपनी अपनी कठिनाइयों को ले हमारे पास आने लगे। कुछ महिलाएं बीमार बच्चों को लेकर हमारे चरणों में लिटा देतीं तथा निवेदन करतीं दया करो– यह बच्चा आपका ही है। इसे ठीक कर दो। एक दिन उन लोगों को समझाया – हम कोई वैद्य नहीं हैं, डॉक्टर नहीं हैं। हमारे पास तो केवल धर्म का मंत्र है। उसका जप करो। हम तुम्हें सिखा देते हैं। प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र की एक माला का श्रद्धा से जाप करो, आत्मा में शान्ति मिलेगी। सिन्धी भाषी लोगों ने तत्काल मंत्र को सिन्धी भाषा में लिख लिया। इस प्रकार सैकड़ों लोगों ने नमस्कार महामंत्र को बिना प्रेरणा के याद कर लिया।

जैसे-जैसे नमस्कार महामंत्र का जप लोगों ने शुरू किया, संयोग से उनकी कठिनाइयों पर विराम लगने लगा । सबकी श्रद्धा द्विगुणित हो गई । सचमुच श्रद्धा का बल विलक्षण है। घर-घर में एक ही चर्चा – मंत्र का प्रभाव रंग दिखाने लगा है। नमस्कार महामंत्र को चमत्कारी मंत्र के रूप में उस उल्लासनगर वासियों ने स्वीकार किया । यह हमारे लिए बहुत अच्छा हुआ। अनभिज्ञ क्षेत्र, जहाँ जैनों के ही नहीं, शाकाहारी तक लोग नहीं, वे बिना बुलाए हमारे पास धर्माराधना के लिए आने लगे ।

एक और संयोग

मंत्र के प्रभाव को सुनकर एक भाई हमारे पास आया। उसने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

निवेदन किया – "साध्वी जी, मेरा एक भाई अमेरिका में रहता है। वहां से संवाद मिला है कि उसका हाथ मशीन में आ गया, जहर फैल गया। डॉक्टरों का कहना है, हाथ काटना पड़ेगा। हम पारिवारिक जन अत्यन्त चिन्तित हैं। यदि हाथ कट जाएगा तो मेरा भाई बेकार हो जाएगा। किसी ने हमें दुःखी देखकर बताया कि यहां जैन साध्वीजी पधारे हुए हैं, इसलिए मैं आपके पास आया हूं। कृपा कर कोई ऐसा मंत्र करें कि मेरा भाई ठीक हो सके।

साध्वीजी ने उस भाई को समझाते हुए कहा कि हम कोई तांत्रिक-मांत्रिक नहीं हैं, फिर भी उसके हृदय को ठेस न लगे ऐसा सोचकर मैंने उसे मंगल पाठ सुनाया कि यह मंत्र तुम्हारे भाई को यहीं से सुना रही हूं। नमस्कार महामंत्र सुना कर मंत्र का जप करने के लिए कहा। उसको बताया कि तुम्हारे भीतर में शान्ति व आनन्द लौट आएगा। उस भाई ने तत्काल महामंत्र को अपनी भाषा में लिख लिया। पांच दिन निरन्तर जप किया। पाँचवें दिन अमेरिका से शुभ समाचार मिला। दौड़ा-दौड़ा वह हमारे पास आया व कहा – साध्वीजी, आपका मैं जीवनभर श्रावक बना रहूंगा, अमेरिका से समाचार आ गया है – डॉक्टरों ने जांचकर कहा है – तुम्हारे तो जादू हो गया, हाथ ठीक है। खून का संचार होने लगा है। तुम्हें बधाई है कि हाथ नहीं काटना पड़ेगा। यह बात पूरे उल्लासनगर में फैल गयी। इस घटना से सबको चमत्कार-सा प्रतीत हुआ। दूर से लोग अपनी शारीरिक-मानसिक समस्याएं लेकर आने लगे। लोगों को वस्तुस्थिति से अवगत कराते और यह स्पष्ट समझाते कि हमारे पास कोई चमत्कार नहीं है, यह तुम्हारी श्रद्धा व मंत्र का बल है।

सायंकालीन प्रवचन में अच्छी संख्या में लोग उपस्थित होते थे। एक भाई दुभाषिए का काम करता और सब लोगों तक हमारे उपदेश को पहुँचाता । यद्यपि आहार–पानी की कठिनाई थी, पर संघ की प्रभावना का हमें तोष था।

कुछ समय बीता। हमारे पास में ही एक सार्वजनिक स्थान 'कृष्णा मण्डल' था। वहां के लोगों ने प्रवचन करने की प्रार्थना की। वहां

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हम प्रवचन करने गए। अधिकतर लोग वहां प्रबुद्ध थे। कोई वकील, कोई जज, कोई इन्स्पेक्टर आदि। उन लोगों को प्रवचन देते हुए हमने गुरुदेव श्री तुलसी के विषय में भी उन्हें बताया कि मानवता के मसीहा आचार्यश्री तुलसी हमारे गुरु हैं। उन्होंने मानव जाति के उत्थान हेतु अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया । ये छोटे–छोटे नियम प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यंत उपयोगी बिन्दु हैं। हमारे आने का उद्देश्य नैतिकता का प्रचार-प्रसार करना व व्यसन मुक्त जीवनशैली समझाकर उसे अपनाने की विधि बताना है। साधु जीवन की चर्या का भी प्रवचन में प्रासंगिक रूप में उल्लेख किया गया । उन्हें बताया गया कि हम यहाँ इसलिए आए हैं कि आप हमें नोट और वोट की नहीं, बल्कि अपनी खोट की भेंट दें। हमारा आहार शुद्ध व सात्विक बने। मांसाहार मनुष्य का आहार नहीं है। मरे हुए मुर्दों को पेट में डालकर हम अपने ही पेट को कब्रिस्तान बना रहे हैं। क्या हमारा पेट, हमारा शरीर कब्रिस्तान है? जरा चिन्तन करें। हमें अपने मन को मंदिर बनाना है। माँसाहार से वह कतई संभव नहीं है। प्रवचन सुन प्रबुद्ध वर्ग काफी प्रभावित हुआ। कई व्यक्तियों ने व्यसन मुक्त जीवन जीने का संकल्प किया। कुछ लोग प्रतिदिन व्याख्यान सुनने के लिए आने लगे।

एक दिन एक वकील भाई ने पूछा – प्रवचन से पहले आप जो मंत्र पढ़ते हैं उसका क्या अर्थ है? साध्वीश्री ने कहा – इस मंत्र में किसी व्यक्ति विशेष की स्तुति या वन्दना नहीं है, इसमें विशुद्ध आत्मा की स्तुति की गई है । यह विशुद्ध आत्मा किसी भी समाज की हो। इस पर किसी भी समाज का लेबल नहीं है। उस भाई ने कहा – "आप नमस्कार महामंत्र का अर्थ सभी लोगों को प्रवचन में समझाएं। मेरे अकेले के जानने से क्या होगा?" फिर हमने प्रवचन में सभी लोगों को महामंत्र का अर्थ व इसकी महिमा समझाई। इसमें महान् आत्मा के गुण बताए गए हैं कि महान् आत्मा कौन होती है। जो आत्मा किसी एक विशिष्ट वर्ग, जाति, समाज या देश से जुड़ी नहीं है, वो ही महान् है। उन्हीं आत्माओं को नमस्कार किया गया है। धीरे–धीरे आसपास के सभी लोग प्रवचन में आने लगे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हमने देखा हमारे स्थान से एक घर छोड़ तीसरा मकान बंगले की तरह का था। उस घर का कोई सदस्य प्रवचन में नहीं आता था। साध्वी सूरजकंवर जी ने साध्वियों से कहा – "तुम उनके घर जाकर जानने का प्रयत्न करो ।" साध्वियों ने कहा – "हम उस घर में जा रहे थे, पर भाइयों ने मना कर दिया। वह घर प्रायः चारों तरफ से बंद ही रहता है, हम कैसे जाएँ?'' मैंने कहा – जब भी तुम्हें घर खुला दिखे, एक बार अन्दर चले जाना।

एक दिन एक बच्चा पढ़कर घर के अन्दर जा रहा था। साध्वियाँ उसके साथ गईं। सब लोग देखकर खुश हुए। सबने हाथ जोड़े। साध्वियों ने कहा – "प्रवचन आपके इतना नजदीक होता है, आप लोग प्रवचन नहीं सुनते?" उन्होंने कहा – "आपका प्रवचन बहुत अच्छा लगता है। हम सब लोग बरामदे में बैठकर पूरा सुनते हैं। भजन भी सुनते हैं। आप बहुत अच्छा गाते हैं। हम लोग बाहर कम निकलते हैं, इसलिए वहां नहीं आए।" फिर दूसरे दिन वे लोग आए और कहा, "हमारे घर से भिक्षा लें।" हमने कहा – हम तो शुद्ध घरों की भिक्षा लेते हैं जो माँस-मच्छी आदि नहीं खाते हैं। उन्होंने कहा – मेरी बहिन तो हमेशा से शुद्ध है। उसके घर भी आप नहीं आते। हमने कहा, आपने कब कहा? उन्होंने कहा, कल पधारना। दूसरे दिन जब हम गए तो हॉल में सब परिवार के लोग थे। उन्होंने कहा – बैठो। हम वहां बैठे और उनको समझाया उनका पूरा परिवार – (60 वर्ष की माँ सहित जो हमेशा आमिष खाने वाली थी) तीन भाई, तीन बहिनें और पूरा परिवार, सभी ने कहा, "महाराज अब हम नहीं खाएंगे।" फिर उनकी बहिन के घर से भिक्षा ग्रहण की। हमारे विहार के दो दिन पहले ही वे लोग सम्पर्क में आए थे।

मार्मिक मनुहार

हम वहाँ 23 दिन रह गुरुदेव के आदेशानुसार खानदेश के लिए विहार करने वाले थे। खानदेश में जिन साध्वीजी का चातुर्मास था, उनका एक्सीडेन्ट हो गया था। जबरदस्त एक्सीडेन्ट हुआ, वो आगे जा नहीं सकते थे, इसलिए हमें आदेश हुआ। उल्लासनगर के लोगों की प्रार्थना

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

थी कि आपको यहीं रुकना है। हम जाने नहीं देंगे। शाम के प्रवचन के बाद सब खड़े हो जाते, अन्दर नहीं जाने देते, कहते कि आपको यहां रुकने का कहना पड़ेगा। हमने उनको समझाया कि हम गुरुदेव की आज्ञा के बिना रुक नहीं सकते। उन्होंने कहा, "हम आज्ञा मंगवा लेंगे।" चार सौ लोगों ने हस्ताक्षर करके आचार्यश्री के पास पत्र भेज दिया कि सतियों को यहीं प्रवास की आज्ञा प्रदान करवाएँ । वे बराबर आग्रह करते रहे कि जब तक आज्ञा नहीं आए, आपको नहीं जाना है। हमने कहा– "आचार्यश्री दूर हैं, हम कब तक आज्ञा का इंतजार करेंगे? हमें दूर जाना है। गर्मी बढ़ रही है। रविवार तक प्रतीक्षा कर लेंगे। उसके बाद हमें विहार करना होगा।"

रविवार तक समाचार नहीं आया तो साध्वीश्री ने वहां से विहार कर दिया। सब लोगों के मुख से एक ही स्वर निकल रहा था – "आप जाएँ भले ही, वापस तो यहीं आना पड़ेगा।" सुबह विहार करने लगे तो लोग कहने लगे कि हमारे घर में पैर घुमाओ। साध्वीश्री ने कहा, "विहार करना है, यहीं पैर घुमाते रहेंगे तो आगे विहार कैसे करेंगे?" तो भी लोग छोड़ते नहीं। बहिनों ने हाथ पकड़ लिया। इतनी श्रद्धा थी। बड़ी मुश्किल से वहां से विहार किया। लगभग 60-70 व्यक्ति, छोटे बड़े सब, जो कभी पैदल चले ही नहीं थे, वे भी 7-8 किमी. तक हमारे साथ पैदल चले।

रास्ते में सर्वप्रथम डोम्बीवली क्षेत्र आया। साथ में 60-70 सिन्धी भाई थे। डोम्बीवली में केवल एक तेरापंथी घर था। बाकी सारे मंदिरमार्गी जैन भाइयों के घर थे। इतने सारे सिन्धी भाइयों को देखकर उन्होंने साध्वियों को भी सिन्धी समझ लिया। पर, जब उन्हें बताया गया कि हम तेरापंथी हैं तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। यह जानकर उन्हें बहुत खुशी हुई कि इतने सारे लोगों ने, जो जन्म से ही माँस आदि का सेवन कर रहे थे, इतने परिवर्तित हो गए कि प्रवचन मात्र से माँस खाना छोड़ दिया। मंदिरमार्गियों के उपाश्रय में हमें ठहराया गया। जेठ का महीना। इतनी दूरी तय करके आए। सभी लोगों का प्यास से हाल–बेहाल था। जब उन्हें इक्षुरस की ग्लासें दी गई तो कंठ सूखने के बावजूद उन्होंने साध्वियों से आग्रह किया कि महाराज पहले आप हमारे में से थोड़ा लें तब ही हम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पीएंगे। सब गिलासें लेकर खड़े हो गए। जब साध्वियों ने सबसे थोड़ा-थोड़ा लिया, तब जाकर सबने रस पीया और प्यास शान्त की। यह दृश्य देखकर सभी लोग प्रसन्न और आश्चर्यचकित थे।

डोम्बीवली में एक दिन ही ठहरे। वहां से फिर कल्याण में आए। वहां पर भी वे सिन्धी भाई-बहिनें और बच्चे दर्शन करने आते। आते तो एक ही रट लगाते कि वापस चलो। दो दिनों के बाद आचार्यश्री के यहां से पत्र आया, जिसमें लिखा था – "कुछ दिन ठहर सकते हैं।" वे लोग कहने लगे, चलो, अब तो आदेश आ गया है। साध्वियों ने कहा, "दो तीन दिनों के लिए वापस जाकर क्या करेंगे। इतनी मुश्किल से तो आए हैं। आगे हमें दूर जाना है। फिर धूप चढ़ जाएगी।" ऐसे लोगों को समझाने की कोशिश की, पर वो तो जिद पर ही अड़ गए। कहने लगे कि नहीं, आपको तो चलना ही पड़ेगा। बातों-बातों में ही वे यह भी कहने लगे कि आप यहां चातुर्मास फरमाओ। बम्बई से कान्ति भाई आए हुए थे। उन्होंने कहा, ऐसी जगह पर चातुर्मास थोड़े ही फरमाया जा सकता है, जहां एक भी जैन परिवार नहीं है। चातुर्मास छोटी अवधि का नहीं है, लम्बा काल है। ऐसे ही थोड़े चातुर्मास फरमाया जाता है? बातों में ही सूरजकंवरजी के मुंह से निकल गया कि भावना हो तो चातुर्मास क्यों नहीं हो सकता? सिन्धी भाइयों ने सुना और इस बात को पकड़कर ही बैठ गए और कहने लगे, अपना चातुर्मास यहीं फरमाओ। साध्वीश्री ने उन्हें समझाया कि "हम आचार्यश्री के आदेश के बिना कहीं भी इस तरह ठहर नहीं सकते।" उन भाइयों में से एक भाई रेलवे का गार्ड था। उसने कहा – "मुझे टिकट की आवश्यकता नहीं है। मैं ट्रेन में बिना टिकट के भी यात्रा कर सकता हूं।"

उसी रात तीन भाई आचार्यश्री के दर्शनार्थ रवाना हो गए। आचार्यश्री के पास पहुँचकर अर्ज की कि सूरजकंवरजी का चातुर्मास हमारे यहां फरमाओ। बस उन लोगों ने तो रटन लगाए रखी। वहां पर जितने भी बड़े लोग मौजूद थे, उनसे भी गुरुदेव को प्रार्थना करने को कहा। उनकी भावना देखकर गुरुदेव ने फरमाया – साध्वियों की इच्छा हो तो हो सकता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वे लोग आए। सब जगह यह प्रसारित कर दिया कि आचार्यश्री ने चातुर्मास फरमा दिया है। इस बात से बम्बई वाले नाराज हुए और कहा कि ऐसे कैसे चातुर्मास फरमा दिया? हम आचार्यश्री के पास निवेदन करेंगे। साध्वियों ने कहा, "आचार्यश्री ने आज्ञा तो दी नहीं है। देखेंगे, क्या करना है।'' वहाँ से एक नम्बर उल्लासनगर गए। सारे नए लोग, क्या करें? फिर साध्वियाँ चार नम्बर उल्लासनगर में कुछ दिन रुकीं। सब लोग खुश हो गए।

बहिनों ने दिखाया साहस

उस समय विवेकशील तीन बहिनें सर्वप्रथम साध्वियों के पास आईं। उनके नाम थे लाजवंती बहिन, परमेश्वरी बहिन और देवी बहिन। तीनों सहेलियां थीं। उनका संकल्प था कि हम जब भी अपना गुरु बनाएंगे तो तीनों एक साथ और एक स्त्री को अपना गुरु बनाएंगी। वे बहिनें सूरजकंवरजी के पास आकर कहने लगीं – "साध्वीजी, हम गुरु बनाना चाहते हैं, क्या आप हमारी गुरु बनेंगी?" सूरजकंवरजी ने कहा, "हमारे गुरु आचार्यश्री तुलसी हैं, वे ही आपके गुरु बनेंगे।'' सारी विधि समझाकर तीनों बहिनों को गुरुधारणा करवाई।

उल्लासनगर में सर्वप्रथम तीन बहिनों ने गुरुधारणा की। अनेक लोगों ने उनका अनुकरण किया । उल्लासनगर में साध्वीश्री ने लक्ष्य बनाया कि बच्चों को संस्कारी बनाना है। इसलिए हम अधिक श्रम बच्चों के संस्कार निर्माण के लिए करने लगे। बच्चों को अपने स्थान पर आने की प्रेरणा देते, हाथ से निर्मित पन्ने (स्वर्ग–नरक के) दिखाते। बच्चों को विशेष प्रेरणा हमने इस बात की दी कि माँस खाना शारीरिक दृष्टि से हानिकारक है । यह हमारा मूल भोजन नहीं है। दूसरी बात, सभी जीव जीना चाहते हैं। हमें किसी को मारने का अधिकार नहीं है। जो माँस खाते हैं, अगले जन्म में यमदूत उन्हें स्वयं उनका माँस खिलाते हुए कहते हैं – पहले तुमने दूसरों का माँस खाया, अब अपना माँस खाओ। बच्चों ने साध्वियों की बातों को गहराई से समझा। कई बच्चों ने पूरे परिवार को समझा दिया। बच्चों से प्रेरणा ले अनेक परिवार शुद्ध शाकाहारी बन गये।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बहुत से लोगों ने जुआ, शराब आदि त्याग दिया।

यद्यपि कठिनाइयां द्रौपदी के चीर की भांति बढ़ती गईं, पर हमारे कार्य ने अपना रंग दिखाया। संघ की बहुत प्रभावना हुई। प्रसन्नता की अनुभूति इसलिए हो रही थी कि जिस लक्ष्य से गुरुदेव ने हमें भेजा, वह लक्ष्य पूरा हो रहा था।

डाकू से श्रावक : नारायण भाई का हृदय परिवर्तन

प्रतिदिन प्रवचन में सैकड़ों लोग प्रवचन सुनते। यथाशक्ति संकल्प ग्रहण कर धन्यता का अनुभव करते। एक दिन एक भाई प्रवचन सुनने आया उसका नाम था नारायण। नारायण भाई का उपनाम था "चिन्ना"। लोग उसे "चिन्ना" नाम से ही पुकारते थे। चिन्ना भाई निकृष्ट व अधम कार्य करने वालों में अग्रणी था। अपराधियों की लिस्ट में प्रथम नम्बर का था । जब कोई भी अपराध जनित घटना होती, सर्वप्रथम "चिन्ना" को ही पकड़ा जाता। सबको यही अनुमान होता कि चिन्ना के अतिरिक्त यह कार्य कोई नहीं कर सकता। संयोग से एक भाई की प्रेरणा से चिन्ना ने प्रवचन में आना प्रारम्भ किया। कभी–कभी प्रवचन के विशेष प्रसंगों में वह फफक-फफक कर रोने लगता। वह दूर खड़े-खड़े प्रवचन सुना करता था। एक दिन प्रवचन समाप्त होने पर सब लोग जा चुके थे, वह वहीं पर खड़ा रहा। साध्वियों ने उसे देखा तो पूछा – यह भाई कौन है? उत्तर मिला – साध्वीश्री ! यह व्यक्ति एक नम्बर का बदमाश है। इससे आप बात मत करना। साध्वीश्री ने कहा – "हमारा तो काम ही है बुरे व्यक्तियों को अच्छा बनाना। उसे आगे बुलाकर दर्शन करवाओ।"

वह आया और पूरा जमीन पर झुक गया। साध्वियों ने पूछा– कौन हो भाई? भारी गले से कहा – "साध्वी जी! मैं पापी हूं। आपका प्रवचन मेरे जीवन में नया बदलाव ला रहा है। मेरे भीतर का देव जागा है, कृपया मुझे प्रतिबोध दें।"

साध्वीश्री ने उसे व्यसन छोड़ने की प्रेरणा दी। उसने कहा– "साध्वीजी ! कुछ दिनों के अभ्यास के बाद ही मैं आपसे संकल्प ग्रहण

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करूंगा।" ऐसा कह वह वन्दना करके चला गया। इसके बाद वह प्रवचन में प्रतिदिन आता रहा तथा कुछ दिन पश्चात् नारायण ने भी मार–काट, जुआ, चोरी, शराब, मांस सभी का त्याग कर दिया। सभी लोगों को महान् आश्चर्य हुआ कि क्या नारायण त्याग का पालन कर सकेगा? सबकी दृष्टि संशयात्मक बनी हुई थी। एक बार फिर उल्लासनगर में "चिन्ना का त्याग" आश्चर्य कारक एवं संघ प्रभावक बना।

नारायण का जीवनवृत्त लोगों ने साध्वीश्री को बताया। जब वह पाकिस्तान से आया था, तबसे ही उसके माता-पिता नहीं थे। उनकी मृत्यु हो चुकी थी। अंकुश नहीं रहा। पेट भरने की समस्या सामने आई और गलत संगति में पड़ गया। कहीं किन्हीं भाइयों में झगड़ा होता तो इसे भेज देते, बदला लेने के लिए। वह तैयार रहता, क्योंकि रुपये मिलते थे। इस प्रकार उसने अपनी जिन्दगी में चालीस लोगों को मौत के घाट उतार दिया। हिंसा, शराब आदि के त्याग लेने के बाद कुछ दिन तो उसने त्यागों का यथावत् पालन किया, पर कुसंगति से सभी त्याग टूट गये। एक दिन एक व्यक्ति ने चिन्ना को शराब पिलाकर अपने दुश्मन के पास भेजा। वहां भयंकर लड़ाई–झगड़ा हुआ। उस खींचातानी में चिन्ना का हाथ टूट गया। लोगों को पता चला, तत्काल कहने लगे – इसने स्वीकृत त्याग तोड़े हैं, इसलिए हाथ टूटा है।

उल्लास नगर (चार नंबर) में साध्वियां चंदर भाई के घर ठहरी हुई थीं। उसकी बहिन एक शिक्षिका थी। उसने अपने विद्यालय में अन्य शिक्षिकाओं में यह बात की कि हमारे घर बहुत बड़ी त्यागी साध्वियाँ आई हुई हैं। उन्होंने तो कभी ऐसे संत देखे नहीं थे। वैसे भी सिन्धी लोगों में किसी भी नई बात के प्रचार–प्रसार की आदत–सी है। इसी प्रकार अन्य लोगों को भी पता लगा। उसकी बात से प्रभावित होकर तीन नम्बर में रहने वाली एक शिक्षिका, जिसे गोपी दादी कहते थे, आई। उसने सोचा, यदि इनके घर में ठहरे हैं तो मेरे घर में भी ठहर सकते हैं। वैसे तो संत मंदिरों में, मठों में रहते हैं। इसलिए गोपी दादी ने चन्दर की बहिन से पूछा – मेरे घर में भी ठहर सकते हैं क्या? तब उसने कहा – महाराज

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

से पूछो। उसने साध्वीश्री से कहा – आप तीन नम्बर में आओ तब, मेरे घर में भी रुकना। अब साध्वियों ने सोचा, कुछ प्रचार-प्रसार करना है तो तीन नम्बर में भी जाना होगा, पर जगह कहां मिले? साध्वियों ने उत्तमचन्द भाई से कहा कि तीन नम्बर में स्थान मिल जाएगा क्या? तब उसने कहा – मैं तलाश करके कहूँगा। उसने बताया कि पुस्तकालय है, वहाँ आप ठहर सकते हैं।

साध्वियाँ वहाँ से विहार कर तीन नम्बर में आईं। वहाँ कोई भी साधुओं से परिचित नहीं थे। साध्वियों को देखकर वे डर गए और पुस्तकालय वालों से पूछने लगे – ये कौन हैं? वो भी नहीं जानता था, क्या बताए। उसने कहा – मैं तो नहीं जानता, कौन है? आसपास वालों ने अपने घर बंद कर लिए कि बच्चों को पकड़ने वाले आए हैं। फिर वहां साध्वियों ने पानी की बहुत तलाश की, पर पानी नहीं मिला। फिर, गुजराती लोग मिले जो हिन्दुस्तान-पाकिस्तान विभाजन के समय करांची से आए थे। वे लोग सिन्धी लोगों के साथ में आए थे। वे लोग माँसाहारी नहीं थे। उन्हें समझाया कि आपके गर्म पानी है तो हम ले सकते हैं। उनके बम्बों में गरम पानी था। अग्नि जल रही थी। सतियों ने समझाया – आप अलग बर्तन में डालकर रख देना, सतियाँ आएँ तो दे देना। वो लोग समझते नहीं थे। वापस गए तब तक उन्होंने पानी जमीन पर बिखेर दिया। एक घण्टे तक घूमते रहे। कहीं पानी नहीं मिला। चार नम्बर जाकर लेकर आए। जहाँ साध्वियाँ ठहरी थीं, वहाँ छत टिन की थी, दोपहर के वक्त इतनी गर्मी हुई कि बैठना भी मुश्किल हो गया। फिर धीरे–धीरे सामने वाले घरों में गए। उन्हें समझाया, बातचीत की और कहा – थोड़ी देर तुम्हारे घर में बैठ जाएं क्या? साधुओं की रीति-भांति बताई तो वे मान गए। साध्वियों ने कहा– हम बच्चों को पकड़ने वाले नहीं हैं। हम तो जैन साधु हैं। वे लोग यह सब जानकर खुश हो गए।

शाम को उत्तमचन्द भाई आया। उसने कहा – रात को गुरुद्वारे में प्रवचन करें, वहाँ लोग आएंगे। मैं सबसे कह दूंगा। शाम को काम निपटाकर साध्वियाँ सोने के लिए गुरुद्वारे चली गईं। रात को प्रवचन में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तमचन्द भाई आ गए। गुरुद्वारे में आने वाले लोगों को समझाया। वे प्रवचन सुनने बैठ गए। प्रवचन के बाद वह सारी बातें सिन्धी में अनुवाद करके बताता। साधु का आचार-विचार बताता। अणुव्रत के संबंध में उन लोगों को जानकारी दी। तीन-चार दिन वहां रुके। जैस-जैसे लोगों को पता चला, आसपास के लोग प्रवचन में आने लगे।

खेमचन्द भाई ने जुआ छोड़ा

विहार करने से एक दिन पहले रात के प्रवचन में एक भाई अपनी पत्नी की प्रेरणा से आया। उसकी पत्नी उसे रोज प्रवचन में जाने को कहती। पर वह नहीं आया । जिस दिन आया, उस दिन वहाँ अंतिम प्रवचन था। जब वह आया तो प्रवचन समाप्त हो चुका था। साध्वीश्री ने सब लोगों से कहा – हमें भेंट दो, क्या दोगे? लोग बोले नहीं तो साध्वीश्री ने कहा – सिन्धी लोग ऐसे तो बहुत उदार हैं, पर हमें भेंट देने में कंजूसी कर रहे हैं। उस भाई को यह सुनकर बहुत बुरा लगा। सबको कहने लगा – भेंट दो। महाराज ! हमें कंजूस कह रहे हैं। मुझे तो पता नहीं था। मैं तो ऐसे ही अचानक आ गया। पैसे और कुछ लेकर नहीं आया। तब उत्तमचन्द भाई ने कहा – इनको पैसे नहीं आपकी खोट चाहिए। संयोग से वह एक नम्बर का जुआरी था। जितना कमाता, एक दिन में गँवा देता। परिवार वाले उससे परेशान थे। सबने उससे कहा – इन्हें भेंट देना चाहते हो तो जुआ खेलना छोड़ दो। दो मिनट सोचकर उसने खड़े होकर कहा–अच्छा, तो लो मैं भेंट देता हूं। और उसने जुआ खेलना छोड़ दिया। सुबह जैसे ही विहार करने लगे, वह अपनी पत्नी को साथ लेकर साध्वियों के पास पहुंचा और कहा – "मैं तो इतने दिन आया ही नहीं, कल ही आया था और आज आप जा रहे हैं।" साध्वियों ने उसको समझाया कि दूर नहीं जा रहे हैं, तीन नम्बर कैम्प में ही गोपी दादी के घर में ठहरेंगे। वह तुम्हारे नजदीक है, रोज प्रवचन सुनना।

हम गोपी दादी के पहुँचे तो वे लोग भी नहीं जानते थे कि साधु कौन होते हैं और डरने लगे। गोपी दादी तो जानती थी, उसने अपना मकान दे दिया। साध्वियां वहां ठहर गईं। उसके एकदम सटा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हुआ, उसके भाई का घर था। उसकी दो बेटियाँ थीं, वो दूर से ही खिड़की में से देखकर भागने लगी। फिर, उनके बम्बई कोई शादी थी वे सब वहाँ चले गए। तीसरे दिन आए तब वे खिड़की में से देखने लगी। साध्वियाँ उनके पास गईं और जाकर समझाया। धीरे-धीरे आसपास के लोग आने लगे।

माँसाहार से मुक्ति का अभियान

खेमचन्द भाई, जिसने जुआ का त्याग किया, वह भी प्रवचन में आता था। उसने निवेदन किया हमारे घर भी प्रवचन करो। साध्वीश्री ने कहा – "ऐसे नहीं आएंगे, भेंट देनी पड़ेगी।" उसने कहा – "आप मांगोगे, दे दूंगा।" साध्वियां उसके घर गई। आसपास के लोग भी सम्पर्क में आए। उसका परिवार और घर तो शुद्ध हो ही गया था, साथ ही सम्पर्क में आने वाले आसपास के लगभग बीस लोगों ने भी मांसाहार का त्याग कर दिया। कुछ दिनों बाद उस भाई ने कहा कि मेरा घर तो शुद्ध हो ही गया है, अब हमारे गुरु भी बन जाओ। साध्वीश्री ने कहा – गुरु बनने में हमें कोई आपत्ति नहीं है। तुम्हें दान-दक्षिणा तो कुछ देनी नहीं है, किन्तु पांच नियम स्वीकार करने होंगे। साध्वीश्री ने पांच व्रत समझाए और गुरुधारणा करवाई।

तीन नम्बर में साध्वियां जिस घर में ठहरी हुई थीं उनके भाई की लड़कियां बम्बई से आई। वे पहले तो डरती थी। धीरे-धीरे साध्वियाँ उनके पास गई और बतलाया कि हम साधु हैं। तुम्हारी बुआ ने कहा, इसलिए यहां आई हैं। धीरे-धीरे सम्पर्क बढ़ता गया। दो-तीन दिनों में इतनी घुल मिल गईं कि दो-दो घंटे बैठी चर्चा करती। हम साध्वियां उन्हें साधुओं की विधि, अणुव्रत, प्रचार-प्रसार आदि सब बताते। उस बेरक की 10-12 लड़कियां भी आने लगीं। सबसे परिचय बढ़ने के बाद उन्होंने कहा कि आप हमारे यहां भी भोजन के लिए आएं। साध्वीश्री ने कहा – आएं कैसे? तुम सब तो मांस-मच्छी खाती हो। जिस घर में मांसाहार होता है, उस घर का आहार हम नहीं लेते। उन्होंने कहा, कल से बंद कर देंगे, फिर तो आप हमारे घर आएंगे? साध्वीश्री ने कहा, "तुम्हारे घर से भोजन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तो नहीं लेंगे, क्योंकि वह अभी तक शुद्ध नहीं हुआ है। बाजार से आई हुई चीज की भावना भा सकती हो।" उन्होंने कहा, हमारा दूध का बरतन तो अलग ही है। वो तो आप ले सकते हैं। जब आप यहां हैं, तब तक हमारे घर में मांस नहीं पकेगा। साध्वीश्री ने कहा, "यदि ऐसा है तो हम तुम्हारे घर से दूध और बाहर की वस्तु ले लेंगे।" उसकी मां को पता चला तो साध्वीश्री के पास आई और बोली, "महाराज पुष्पा (बड़ी वाली बहिन) को त्याग मत कराना, यह तो मच्छी के बिना भोजन करती ही नहीं है। पहले ही दुबली पतली है, और दुबली हो जाएगी।" साध्वीश्री ने कहा, "हमने तो नियम नहीं दिलाया है। हमने तो इनसे कहा कि जहां ये सब पकता है, वहां हम नहीं जाते। इन्होंने स्वयं ही नहीं खाने की बात कही।" उसका पिता अण्डे खाता था। बेटियों ने कहा कि आप अण्डा खाएंगे तो महाराज हमारे घर नहीं आएंगे। पिता ने कहा, "मैं तो अण्डा खाए बिना नहीं रह सकता।" यह सुनकर उन दोनों बहिनों ने फ्रिज से अण्डे निकालकर फेंक दिए। इसी प्रकार एक दूसरे घर में एक लड़की थी, जिसका पिता अत्यधिक माँस खाता था। उसका नाम माया था। उसने साध्वियों से प्रभावित हो अपने पिता को माँस नहीं खाने को कहा। पिता ने जब बात नहीं मानी तो उसने स्टोव आदि बाहर फेंक दिए और कहा कि यदि मांस वगैरह खाना है तो अपनी दुकान पर जाकर खाओ, यहाँ पर यह सब नहीं पकेगा।

वे सभी लड़कियाँ इतनी निकट आ गयी कि प्रायः विभिन्न विषयों पर वार्तालाप करती रहती थीं। उन्होंने सब सुन समझकर सचित्त का त्याग भी कर दिया और प्रतिदिन गोचरी की भावना भाने लगीं। दो नंबर से भी जो पहले परिचित थे, उन्होंने भी भावना भाई कि हमारे यहाँ भी पधारो। साध्वियाँ दो नंबर भी जाने लगे। यहां जिस घर में ठहरे थे, उसके दो गाएं थीं। उसने कहा, आप कहां जाएंगे, जहां जाएंगे, वहीं आपको दूध पहुंचा देंगे, क्योंकि आपके पधारने से मेरी गायों के एक सेर दूध बढ़ गया है। मैं इतने दूध का क्या करूंगी? साध्वियों ने समझाया – "हमारे लिए दूध आदि ऐसे भेजा नहीं जाता। इस तरह भेजी हुई चीज लेना हमारे लिए कल्पनीय नहीं है।"

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एक और नारायण भाई

साध्वियाँ दो नम्बर में गई। वहाँ जो स्थान देखा, उसके नीचे गंदी नाली थी। उसमें इतने मच्छर थे कि साध्वियों ने कहा – यहाँ रहना है। नारायण भाई ने कहा – "मैने स्थान के लिए बहुत तलाश की, पर स्थान नहीं मिला।" साध्वियों ने कहा, हम कोशिश करते हैं। उधर पास में बहुत घर थे, वहां गए। एक घर में भाई नीचे बैठा हजामत बना रहा था। उस भाई के मकान में ऊपर दो कमरे थे। उस भाई से पूछा – "हम तुम्हारे घर में ठहर सकते हैं क्या?" उसने कहा, "ठहर जाइए।" उसका नाम था तिलोकचन्द। साध्वियाँ वहाँ ठहर गईं। आसपास के सब लोग आने लगे। सबने नियम ले लिया कि जब तक साध्वियाँ वहाँ रहेगी, तब तक उनके घरों में माँस-मच्छी नहीं पकेगा। जो मच्छी बेचने आता, उसे भी आने के लिए मना कर दिया कि यहाँ मत आना। यहाँ संत रहते हैं। रात को प्रवचन में नैतिकता का उपदेश चलता। सबको समझाते कि माँस आदि का सेवन नहीं करना है। एक भाई जो पहले सम्पर्क में आया था, मुर्गियों को मार–मार कर खाता था, किन्तु उसके परिवार में कोई नहीं खाता था। उसकी बड़ी लड़की जब प्रवचन चल रहा था, प्रवचन में खड़ी होकर रोने लगी। बम्बई से आए हुए नारायण भाई को बुलाकर पूछा कि वह लड़की क्यों रो रही है? लड़की को निकट बुलाकर पूछा। उस लड़की ने कहा – "हम कोई माँस वगैरह नहीं खाते हैं। मेरे पिता मुर्गियों को मारकर खाते हैं। जब वे मुर्गियों को मारते हैं और पीड़ा से वे ऊपर उछलती हैं तो मन में ग्लानि होती है। हमसे यह दृश्य देखा नहीं जाता। आप उन्हें समझाइए।"

साध्वीश्री उनके घर गए। परिवार के सारे लोग व्याख्यान में थे। वह घर में अकेला बैठा था। साध्वियों ने जाते ही उससे उसका नाम पूछा। उसने कहा मेरा नाम नारायण है। साध्वियों ने कहा – कितना बड़ा और अच्छा नाम है तुम्हारा। भगवान का नाम है और पशुओं जैसे काम करते हो! उसको समझाया तो उसने कहा – मुझे एक महीने का नियम दिला दो। फिर वह लड़की बहुत भावुक हुई और साध्वियों के साथ आ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गई। साध्वियाँ चार नम्बर में ठहरी हुई थी। उसकी माँ भी पीछे–पीछे आई। लोगों ने सोचा, लड़की को महाराज ले गए। बड़ी मुश्किल से समझाबुझाकर उसको वापस घर भेजा। एक महीने तक तो उसके पिता ने पूरा नियम निभाया; किन्तु फिर खाने लग गया। साध्वियाँ फिर दो नम्बर में गए। वह व्याख्यान में आया तो उससे पूछा, उसे फिर समझाया। अब उसने सदैव के लिए संकल्प कर लिया। वह इतना प्रभावित हुआ कि खुद ने तो छोड़ा ही, लोगों को भी समझाया। जिस घर में ठहरे थे, उसका सारा परिवार भी शुद्ध हो गया। वह तेरापंथी बन गया। वहां कुछ दिन ठहरे। आहार-पानी की समस्या थी, पर ऊनोदरी के कार्य चलता रहा।

फिर एक नम्बर में गए। वहां भी एक वृद्धा ने गुरुधारणा की। वहाँ दो दिन ठहर कर बम्बई की ओर विहार किया।

साध्वियां वहां से चलते–चलते ठाणा पहुँची। ठाणा में गुण्डों की धरपकड़ हो रही थी। वहां 'चिन्ना' को भी पकड़ लिया गया। वहाँ से बम्बई गए तो नेम भाई ने कहा कि आप सिन्धियों के बीच में कहाँ चातुर्मास करेंगे। वहाँ कोई अपना घर नहीं है, दवाई–पानी का योग नहीं है। चातुर्मास का मौसम है। मैं अभी गुरुदेव से कहकर आपका चौमासा बदलवा दूँ। साध्वीश्री ने कहा, "आचार्यश्री की दृष्टि है। उपकार की भी संभावना है। चाहे कितनी कठिनाई हो, चातुर्मास वहीं करने का भाव है।

सं. 2025 : उल्लासनगर

कुछ दिन बम्बई रुककर पुनः उल्लासनगर चातुर्मास करने के लिए गए और चन्दर भाई के घर चातुर्मास किया। चन्दर भाई के घर में सफाई बहुत रहती थी। उनकी माँ, बेटी आदि सवेरे-सवेरे उठकर ही सफाई में लग जाते। उनका घर इतना साफ-सुथरा रहता था कि अगर दरवाजे पर भी कोई चीज गिर जाती अथवा कपड़ा गिर जाता तो भी उस पर एक भी दाग नहीं लगता। साध्वियाँ उनसे कहतीं कि आप लोग इतनी सफाई रखते हैं। हम यहाँ पर रहेंगे तो दिन भर लोगों का आना जाना रहेगा। बच्चे भी आएँगे। आप लोग कितनी सफाई करेंगे? आप लोगों के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

इतनी मेहनत हो जाती है। इस पर उन लोगों ने कहा – महाराज! आपकी सेवा करने का मौका हमें मिला है, यह हमारा सौभाग्य है। हम आपके साथ यहाँ आने वालों की भी सेवा कर लेंगे। परिवार के सदस्यों में अत्यन्त श्रद्धा का भाव था।

वहाँ रात्रि के समय में प्रतिदिन प्रवचन होता। लोग दिन में जैसे समय मिलता, आते रहते। चन्दर भाई के परिवार के सभी लोग – भाई, बेटा, माँ, बहिन, आदि सामायिक करते। रात के प्रवचन के बाद बैठे रहते। कोई जिज्ञासा होती तो पूछते। यदि शरीर में कहीं कोई दर्द होता तो साध्वियों के पास आते और पैरों में सर रगड़ते। इस तरह सभी लोग सेवा का अच्छा लाभ उठाते। दो नम्बर से एक भाई सूरदास, श्याम भाई और उसका चाचा, जो संत बना हुआ था तथा सूरदास के साथ रहता था, रात के प्रवचन में आता। दशवैकालिक, उत्तराध्ययन की पुस्तकें साध्वियों से ले चाचा से पढ़वाकर सुनता और जो कुछ समझ में नहीं आता, साध्वियों से पूछता।

चिन्ना ने अनाचार सेवन न करने का नियम ले लिया, पर उसे कहीं भी नौकरी नहीं मिल पाई। रोटी के भी लाले पड़ने लगे तो उसने फिर से जुए के अड्डे पर नौकरी शुरू कर दी। दूसरी बार फिर उसके नियम टूट गए। अब दूसरी बार नियम तोड़कर साध्वियों के पास आने की उसकी हिम्मत नहीं होती थी। बाहर आता और बाहर से ही चला जाता। एक दिन साध्वियों के साथ वाले काशीद ने उसे देख लिया तो उससे पूछा, "नारायण भाई (चिन्ना) ! आजकल आता क्यों नहीं है? चल, महाराज के पास।"

नारायण भाई आया। धरती पर लेट गया और जोर-जोर से रोने लगा। रोते–रोते करुण आवाज में कहा – ''माँ ! मुझे क्षमा कर दो। मैं पापी हूँ। मैने नियम तोड़ दिए हैं। मुझे प्रायश्चित्त देकर शुद्ध कर दो, माँ! वापस नियम करवा दो।" सूरजकंवरजी ने कहा – नियम बार–बार नहीं दिलाए जाते। पहले जो तुमने नियम तोड़े हैं, उनका प्रायश्चित्त लो। प्रायश्चित्त स्वरूप साध्वीश्री ने उससे कहा पाँच व्यक्तियों को जो तुम्हारे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जैसे हैं, उन्हें सुधारो। उसके बाद 'चिन्ना' अनेक बार नए व्यक्तियों को लाता, उन्हें नियम दिलाकर शुद्ध करवाता।

नारायण के हृदय में त्याग की चेतना जाग गई । इसलिए अब वह उल्लासनगर में नहीं रहना चाहता था। वहाँ संगत खराब थी। इसलिए उल्लासनगर छोड़कर अब वह रायपुर चला गया जहाँ उसका मौसा रहता था। रायपुर में राकेश मुनि विराज रहे थे, उसने उनकी सेवा की। उल्लासनगर का चातुर्मास सफल रहा। काफी गुरु–धारणाएँ हुईं। बहुत लोग सामायिक करने लग गए। सचित्त के भी त्याग किए। अच्छा प्रचार-प्रसार होने लगा। एक दिन उत्तमचन्द ने कहा कि मेरे गुरु शांतिप्रकाशजी हैं। आप सबका साथ में प्रवचन हो सकता है क्या? साध्वीश्री ने कहा – हाँ हो सकता है।

तीन नम्बर में सिनेमा हॉल में प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। शांतिप्रकाशजी आदि आ गए। साध्वियाँ भी पहुँच गईं। सूरदासजी और उसके चाचा भी आए। बहुत लोग आए। हाल खचाखच भर गया। प्रवचन चल रहा था। जब रायकँवरजी खड़े हुए और अणुव्रत के विषय में बोलने लगे तो शांतिप्रकाशजी ने गुस्से में आकर कहा कि यह अणुव्रत क्या है? यह तो लेबल है। ये लोग दूसरों को जैन बनाना चाहते हैं। श्याम का चाचा उठकर शांतिप्रकाशजी का मुँह बंद करने लगा। एक बार लोगों में हलचल–सी हो गई। फिर थोड़ी शान्ति हुई, प्रवचन चला। फिर उनको समझाया, प्रवचन सम्पन्न कर साध्वियाँ अपने स्थान पर आ गईं।

संवत्सरी के बाद लोगों को आचार्यश्री के दर्शनों की प्रेरणा दी। इक्कीस लोग तैयार हो गए। बम्बई वालों ने उनकी व्यवस्था की और साथ लेकर गए। आचार्यश्री के दर्शन किये और वहाँ भी सामायिक आदि की। चादर ओढ़कर बैठते, पूंजनी हाथ में लेकर तो साधु जैसे लगते। आचार्यश्री ने चन्दर के बेटे से कहा – "क्या साधु बनेगा? तू तो पूरा साधु जैसा लगता है।" वहाँ जो लड़कियाँ सम्पर्क में आई थी, कईयों ने जैन विद्या की परीक्षा दी। चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर तीन नम्बर में आए। वहाँ पुष्पा, मुन्ना, चम्पा, दया – इन चारों ने गुरु धारणा कर ली।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पुष्पा और मुन्ना बहिनें थीं। पुष्पा ने साध्वीश्री के सम्पर्क में आकर माँसाहार बिल्कुल छोड़ दिया था। वह मच्छी बहुत खाती थी, पर नहीं खाने का नियम ले लिया और पक्का निभाया। एक बार मुन्ना अपने पिता से किसी बात को लेकर बहुत गुस्से में आ गई, भोजन आदि नहीं किया। फिर साध्वीश्री के समझाने पर शान्त हुई। उसकी माँ को विश्वास हो गया कि लड़कियाँ साध्वियों के पास जाएँगी तो कुछ अच्छा ही सीखेंगी। वह उन्हें कभी नहीं रोकती। एक एक परीक्षा उन्होंने दी। अच्छी सेवा की। प्रश्न पूछती रहती थी। सब तरह से जानकारी हो गई। उन चारों लड़कियों ने आजीवन माँसाहार का त्याग कर लिया। शादी होने के बाद अपने पतियों को भी माँस खाना छुड़वा दिया और अपने बच्चों को बचपन से ही कभी माँस-मच्छी चखाई ही नहीं। उन लोगों ने अपने पूरे परिवार को शुद्ध बना लिया। अभी भी वो चारों बहिनें हर साल अपने परिवार के साथ साध्वीश्री के दर्शन करने आती हैं।

सं. 2026 : कुर्ला (बम्बई)

कई जगह रुकते, विचरते तथा प्रचार-प्रसार करते हुए साध्वियों ने बम्बई की तरफ विहार किया। अगला वि.सं. 2026 का चातुर्मास सूरजकंवरजी का 'कुर्ला' फरमाया गया। 'कुर्ला' में पहला चातुर्मास था। लोगों में अच्छा उत्साह था, क्योंकि वहाँ साधु-साध्वियों का प्रवास कम होता था। स्थान का अभाव था, इसलिए साधु-संत एक-दो रात से ज्यादा नहीं ठहरते थे। आचार्यश्री का मुम्बई में मर्यादा महोत्सव था। उस समय उन लोगों ने एक मकान की तीसरी मंजिल पर दो ब्लॉक लिए। एक तेरापंथी परिवार पहले वहाँ रहता था। लोगों ने चातुर्मास की अर्ज की तो आचार्यश्री ने साध्वीश्री सूरजकंवरजी का चातुर्मास वहाँ फरमाया दिया।

युवकों में अच्छा उत्साह था। संवत्सरी के बाद वहाँ शिविर लगाया। साध्वीश्री के स्थान से तीन किलोमीटर दूर 'बारवाड़ी बाड़ी' में शिविर आयोजित हुआ। युवकों की संख्या अधिक थी और जोधपुर से मेहताजी आदि शिविर में ध्यान आदि करवाने आए हुए थे। रात को फादर विलियम का भाषण होता था। आचार्यश्री के मुम्बई चातुर्मास में फादर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरुदेव के सम्पर्क में आकर अणुव्रती बन गये थे। उनकी भाषण देने की शैली अच्छी थी। ईसाई धर्म के धर्मगुरु थे। उससे पहले प्रेक्षाध्यान प्रचलित नहीं था। कई डॉक्टर आदि भी आते। शिविर की प्रतिक्रिया अच्छी रही। मैं तत्त्वज्ञान पर चर्चा करती और सूरजकंवरजी का व्याख्यान व्यावहारिक विषयों पर होता था।

'चिन्ना' की सेवा-भक्ति

'चिन्ना' रायपुर से आ गया था क्योंकि उस पर 18 हत्याओं के आरोप थे और कोर्ट में उसके विरुद्ध केस चल रहे थे। कोर्ट में पेश होने से पहले वह रोज साध्वीश्री के पास आता और मंगलपाठ सुनने के बाद ही कोर्ट में जाता। संयोगवश वह सभी आरोपों से बरी हो गया। कोर्ट में उसके विरुद्ध अब कोई केस नहीं रहा। 'चिन्ना' ने मन में यह सोच रखा था कि यदि वह सभी आरोपों से बरी हो जाएगा तो गुरुदेव के दर्शन करने जाएगा। संयोगवश गुरुदेव का उस वर्ष चातुर्मास रायपुर में ही था। वह सारा दिन गुरुदेव की सेवा में रहता। गुरुदेव के साथ झंडा लेकर चलता। लोगों ने उसकी अनेक फोटो खींची। चिन्ना उन फोटो को अपने संबंधी जनों को दिखाकर आत्मानन्द की अनुभूति करता। उसके मन में आता – पहले लोग मुझे देखकर कितनी घृणा करते थे। कोई मुझे देखना तक नहीं चाहते थे। पर आज मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ कि ऐसी महान् आत्माओं का सान्निध्य मुझे प्राप्त हुआ है।

'चिन्ना' के सुधरने की बात उल्लासनगर में पानी में तेल-बिन्दु की तरह फैल गई। महिलाएँ अपने पतियों को लेकर आतीं और उनकी बुरी आदतें छुड़ाने को कहतीं। साध्वीश्री उन्हें नमस्कार महामंत्र सिखाते और मंगलपाठ सुनाते। इनका चमत्कारिक प्रभाव होता। चिन्ना का गुरुदेव की सेवा में रहने से कायाकल्प हो गया। चातुर्मास में लोगों ने उसे रात का पहरा देने के लिए आमंत्रित किया, उस काम को बड़ी ही सजगता से कर उसने गुरुदेव का विश्वास प्राप्त कर लिया। उसने पूरे चातुर्मास में गुरुदेव की सेवा की। कभी–कभी उल्लासनगर भी आता था। दो तीन वर्ष बाद वह मरीन लाईन में सुमेरमलजी स्वामी के दर्शन के लिए भी गया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उसके पास कुछ काजू थे, उसने मुनिश्री से भावना भायी। सुमेरमलजी स्वामी ने संतों से व्रत निपजाने को कहा। संतों ने कुछ काजू लिए और कुछ उसके पास ही रहे। उसके हाथ में काजू देखकर सुमेरमलजी स्वामी ने सोचा – शायद व्रत निपजा नहीं है, तो उन्होंने उससे कहा, "ले तेरा व्रत मैं निजपाऊँ।" वो बड़ा खुश हुआ और बचे हुए काजू बहरा दिए। दर्शन कर जैसे ही वह बाहर निकला, सड़क पर गिर गया और उसके प्राण पखेरू उड़ गए। इतनी सहज मौत उसे प्राप्त हुई। साथ में कुछ सिन्धी भाई थे। उसके परिवार का कोई नहीं था। पर उन सिन्धी भाइयों ने उसका अंतिम संस्कार बड़े धूमधाम से किया।

इधर उल्लासनगर के लोगों की भक्ति वैसी ही थी। वे भी दर्शनार्थ आते और पुनः चातुर्मास करने की अर्ज करते। इस तरह 'कुर्ला' में चातुर्मास उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। मरीन ड्राइव में मुनि नगराजजी का चातुर्मास था। उन्होंने साध्वीश्री से कहा – "तुम मरीन लाइन आ जाओ।" साध्वियाँ वहाँ चली गईं।

एक दिन एक भाई जो पूना का था और वह चौपाटी में रहता था, उसने गोचरी की भावना भायी। साध्वीश्री वहाँ गए। जिस बिल्डिंग में वह रहता था, वह सीता बाई नामक एक मराठी बहिन की थी। उसकी शादी नहीं हुई थी। उस बिल्डिंग में 'चम्पा' नाम की एक और बहिन रहती थी। वे दोनों सहेलियाँ थीं। उनसे सम्पर्क हुआ। वे इतनी खुश हुई और कहा कि एक दिन हमारे घर पर रहो। तब एक रात साध्वियाँ वहाँ रहीं। उनको धर्मकथाएं सुनाईं। वे बड़ी प्रसन्न हुई। उन्होंने कहा – हमारे एक मंदिर में सत्संग होता है, वहाँ आप भी सत्संग करें। उनका मंदिर मराठवाडे में था। वहाँ सब मराठी लोग रहते थे। वहाँ नित्य सत्संग होती 200 बहिनें सत्संग में आतीं। साध्वीश्री ने वहाँ प्रवचन दिया। वहाँ भी सीता बहिन की छः मंजिल की बिल्डिंग थी। उसने साध्वीश्री को वहाँ रहने के लिए भी अर्ज की पर पंचमी समिति के लिए उपयुक्त स्थान न होने के कारण साध्वियाँ वहाँ पर एक रात से ज्यादा नहीं ठहर सकीं, अन्यथा वहाँ बहुत उपकार होता।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पुनः उल्लास नगर में

सीता बहिन और चम्पा बहिन दोनों ही, बम्बई के उपनगरों में दर्शन के लिए आतीं। गंगाशहर में उन्होंने गुरुदेव के भी दर्शन किए। बम्बई से विहार कर साध्वियाँ पुनः उल्लासनगर आए और शेष काल में वहीं विचरण किया। लोगों ने चातुर्मास के लिए अर्ज की। किन्तु चार नम्बर में चातुर्मास करना कल्पता नहीं था। चार नम्बर ओटी की तरफ साध्वियाँ पंचमी समिति के लिए जाती थीं। साध्वीश्री सूरजकंवरजी ने देखा, वहाँ पर एक बड़ा-सा घर था। साध्वीश्री उस घर में गए। वहाँ के लोगों ने साध्वियों के दर्शन किए। साध्वीश्री ने उस घर के मालिक से पूछा, "आपका नाम क्या है?" उसने अपना नाम गिरधारमल बताया। साध्वीश्री ने कहा – तुम्हारा घर तो बहुत बड़ा है। तब उसने बताया कि घर के बाहर एक कमरा और एक बड़ा हाल है, जिसे वो शादी-ब्याह के समय देते हैं। तब साध्वीश्री ने पूछा – "हमें चार महीने रहना है, यह जगह दे सकते हो क्या?" उसका उत्तर सुनकर साध्वीश्री को आश्चर्य हुआ। उसने सहज ही हाँ भर दी। उसने कहा, "यह तो हमारा अहोभाग्य है। जब तक आप यहाँ रहेंगे तब तक हम यह जगह और किसी को नहीं देंगे।" एक व्यक्ति जो बिल्कुल परिचित नहीं था और जिसने पहली बार जैन साधुओं को देखा था, जानता तक नहीं था, फिर भी इतनी सहजता से तुरन्त हाँ भर ली। यह गुरुदेव का ही आशीर्वाद था। साध्वीश्री के वचनों में भी कोई ऐसा प्रभाव था कि लोग आकृष्ट हुए बिना नहीं रह पाते, अन्यथा अनजान लोगों को कौन अपने घर में चार महीनों के लिए रहने दे सकता है? वहाँ पर गुरुदेव का एक पत्र भी आया था। जो इस प्रकार था –

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

दंदरेवा

11.2.94

शिष्या सूरजकंवरजी आदि, सुखपृच्छा। थे उल्लासनगर में चौमासो कियो, घणो उपकार कियो। कष्ट पण पडियो, पर कोई परवाह नहीं राखी। अबकी बार भी फेर पूरी चेष्टा करणी है।

म्हारी मंगल कामना थारै साथ है।

– आचार्य तुलसी

यह पत्र सोनांजी महासतीजी लेकर आए। गुरुदेव की मंगलकामना ही थी कि जहाँ भी साध्वीश्री जाती वहीं अपना यशोध्वज फहरा आतीं। गुरुदेव की ही प्रबल पुण्याई और मंगल आशीर्वाद था कि जहाँ जाते वहीं धर्म की खूब प्रभावना होती।

सं. 2027 : उल्लासनगर

साध्वियाँ वहाँ दूसरा चातुर्मास चार नं. ओटी में करने गए। वहाँ रात्रि का प्रवचन होता था। दो नम्बर, तीन नम्बर से भी लोग आते थे। रात्रि में तो प्रवचन होता ही था, दिन में भी लोग आते। प्रवचन में जो कुछ भी बताते, उसे उत्तमचन्द भाई सिन्धी भाषा में अनुदित कर लोगों को समझाते। एक दिन एक भाई धूलिया से आया। वह भी सिन्धी था और उसके भी गुरु-धारणा की हुई थी। रात्रि में प्रवचन के समय उसने कुछ समय माँगा और भाषण में उसने कहा कि हमारे साधु तो अपने पास पैसा रखते हैं, कोई त्याग का उपदेश नहीं देते हैं, पर जैन साधु पैसा नहीं रखते और त्याग की बात करते हैं। ऐसा सुनकर उत्तमचन्द भाई को बहुत गुस्सा आया। प्रवचन में तो कुछ नहीं बोला पर वह जितना अनुकूल था, भाषण सुनकर साध्वियों के प्रति उतना ही प्रतिकूल हो गया। उसने प्रवचन में खुद तो आना छोड़ ही दिया, अन्य भी जो आते थे उन्हें भी आने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

के लिए मना कर जाने नहीं देता। साध्वीश्री को इस बात का पता लगा। वे उसके घर गए और पूछा, "आते क्यों नहीं?" उसने कहा, "हम आपका प्रवचन सुनने आते हैं, अपने साधुओं की निन्दा सुनने नहीं आते। उस दिन भाई ने भाषण दिया, आपने उसे रोका नहीं। मैं तो आपके लिहाज से चुप रहा अन्यथा रायपुर वाला कांड कर बैठता।" साध्वीश्री सूजरकंवरजी ने उसे समझाया–बुझाया। वह फिर से आने लगा।

दर्शनों का संकल्प

गुरुदेव के प्रताप से उस भाई की उग्रता नहीं बढ़ी। वहाँ से विहार कर साध्वियाँ घाटकोपर गए। उन्हें गुरुदेव के दर्शनों का आदेश हो गया। उल्लासनगर से लोग घाटकोपर तक कोई न कोई आते ही रहे। फिर साध्वीश्री ने कहा कि गुरुदेव के दर्शन करने हम राजस्थान जाएँगे। लोगों ने पूछा – "रविवार को आप कहाँ मिलेंगे, हम दर्शन करने आएँगे।" साध्वीश्री ने मंजिलें गिनी और उन्हें बताया कि रविवार को हम बसई में मिलेंगे। साध्वीश्री वहाँ से विहार कर बसई पहुँचे। बसई में मेवाड़ के लोग आए और कहने लगे कि यहाँ से दो–तीन किमी दूर हमारा गाँव है, वहाँ चलिए। साध्वियों ने कहा, "हमने सिन्धी भाइयों को यहाँ आने के लिए कहा है। हम नहीं जा सकते। पर उन्होंने इतनी हठ की कि साध्वियों को जाना पड़ा किन्तु उन्हें फिर से लोगों को अच्छी तरह सूचना देने के लिए कहा। उन्होंने हाँ तो भर ली पर वहां रुकता कौन? साध्वियाँ उनके गाँव चले गए।

वहाँ से वे सिन्धी लोग बसई पहुँचे। उन लोगों के यह नियम था कि जब वे दर्शन के लिए घर से निकलते तो जब तक दर्शन नहीं होता, अन्न-जल मुँह में नहीं डालते। वहाँ उन्होंने देखा, पर साध्वियाँ नहीं मिलीं। किसी से पूछा तो उसने कह दिया कि बसई गाँव की ओर गए होंगे, तो उन्होंने बस पकड़ी और वहाँ पहुँचे। वहाँ भी साध्वियाँ नहीं मिलीं। फिर उन्होंने सोचा कि भाईन्दर गाँव का एक भाई जान-पहचान का है, उससे पूछ लेंगे। वे ट्रेन में चढ़े, भाईन्दर का वह भाई भी उसी ट्रेन में था। स्टेशन पर ट्रेन रुकी, वह भाई उतरा। 20–22 लोग थे। उस भाई ने उन्हें

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्टेशन पर देखा और पूछा कि आप लोग यहाँ कैसे? उन्होंने सारी बात बताई। उस भाई ने उनसे कुछ खाने-पीने को कहा, घर ले गया, पर उन लोगों में इतनी श्रद्धा थी कि उन्होंने कहा – "हमें तो कुछ नहीं चाहिए, महाराज के दर्शन करवा दो।'' उस भाई ने कहा, महाराज भाईन्दर के बाद वाले स्टेशन पर होंगे, फिर वे लोग वहाँ गए। वे तो ट्रेन से जल्दी पहुँच गए, पर साध्वियाँ तो पैदल चल रही थीं, समय तो लगना ही था। उन लोगों से दर्शन के लिए प्रतीक्षा नहीं हो रही थी। ट्रॉली में सारे लोग बैठे, रास्ते में साध्वीश्री को मिल गए।

शाम को विहार किया था। सूर्यास्त होने को था, फिर भी उन लोगों ने आग्रह किया कि कुछ तो व्रत निपजाएँ, तब ही हम लेंगे। साध्वियों ने प्रतिक्रमण करने के बाद थोड़ी देर उनसे बात की। उनकी गाड़ी का समय हो गया और वे चले गए। ऐसा श्रद्धापूर्ण माहौल अनेक बार हुआ ।

परमेश्वरी बहिन की भक्ति

ऐसी ही एक विचित्र और आश्चर्यकारी घटना है, परमेश्वरी बहिन की। सेक्टर नं. चार में रहने वाली, उल्लासनगर में सबसे पहले गुरु धारणा करने वाली बहिन की कहानी बताती है कि श्रद्धा में विलक्षण बल होता है।

परमेश्वरी बहिन घर वालों को नाराज कर बड़ी मुश्किल से अपनी सास व पति की इच्छा के बिना लाडनूँ गुरुदेव के दर्शनार्थ चली गईं। कुछ दिन गुरुदेव के पावन सान्निध्य में आनन्द से बिताए। घर आकर देखा तो पता चला कि पतिदेव कई दिनों से बीमार है। उसके लाडनूँ जाने के बाद ही बीमार हुए थे। तबीयत इतनी खराब हो गई थी कि कभी–कभी ऐसा लगता कि शायद बचेंगे ही नहीं। जैसे ही वह घर पहुँची, सासूजी ने क्रोधित हो कहा – "तू बाहर भटक रही है गुरु के दर्शन करने के लिए और यहाँ मेरा बेटा बीमारी से जूझ रहा है। तुझे क्या, जो चिंता करे।" पति बेहोशी की हालत में बहुत कमजोर लग रहे थे। वह

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भीतर तक काँप गई। मन ही मन चिन्तन करने लगी – "हे गुरुदेव! यह कैसी मुसीबत आई है? गुरुदेव आपके दर्शनों पर यह कलंक ! प्रभु ! मेरा उद्धार करो। मुझे इस संकट से उबारो।" कमरे में जाकर रोने लगी। पूरे दिन एक ही चिन्तन, एक ही ध्यान । बस गुरुदेव! आपका ही आधार है, आपकी ही शरण है। जब तक यह कलंक दूर नहीं होगा, मैं तब तक कैसे जीऊँगी ?

सायंकाल सब सो गए। परमेश्वरी बहिन भी सो गई। आधी रात को आवाज सुनाई दी – "परमेश्वरी दरवाजा खोलो।" "परमेश्वरी दरवाजा खोलो, देखो, गुरुदेव तुम्हारे घर पधारे हैं।" कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उठकर दरवाजा खोला। आकाश नारों से गूंज उठा – 'गुरुदेव तुलसी की जय हो!' तत्काल दरवाजा खोलते ही गुरुदेव ने फरमाया – "परमेश्वरी, तुम्हारे घर आ गए हैं। बताओ, कहाँ है, तुम्हारे पति ? उन्हें दर्शन दे दें, मंगल पाठ सुना दें।" गुरुदेव के साथ अनेक संत भी थे। लोग सभी बाहर खड़े थे। परमेश्वरी चित्रवत् देखती रही। गुरुदेव आगे आगे और वह पीछे–पीछे। गुरुदेव कृपा कर घर के भीतर पधारे। उनको जगाया। गुरुदेव ने उच्च स्वर में मंगलपाठ सुनाया और कंधे पर हाथ रखकर कहा – "चिंता की कोई बात नहीं है, धर्म में आस्था के साथ आगे बढ़ो।" मुझसे गुरुदेव ने कहा – "परमेश्वरी! घबराने की आवश्यकता नहीं। धर्म का रास्ता सुखकारी है। आगे बढ़ती रहना।" इस प्रकार आशीर्वाद दे गुरुदेव पधार गए। परमेश्वरी ने दरवाजा पुनः बंद कर लिया। 'जय-जय' के नारों से नभ धरती गूंज रहे थे।"

प्रातःकाल परमेश्वरी के पति अपने आप उठ गए। परमेश्वरी को जगाकर कहा – "परमेश्वरी, मैं बिल्कुल ठीक हूं। मुझे ऐसा लग रहा है कि मेरे बिल्कुल बीमारी है ही नहीं।" दो दिन बाद काम पर जाने लगे। यह सारा काम सपने में नहीं देखा, साक्षात् देखा। तब से परमेश्वरी के पति भी पक्के गुरु भक्त बन गए। आज पूरा परिवार पक्का जैन तेरापंथी है। प्रतिवर्ष गुरु कुल वास में उपासना के लिए उपस्थित होता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनेक चमत्कारिक घटनाएँ उल्लासनगर में हुईं। विहार कर साध्वियाँ अहमदाबाद पहुँची। वहाँ बम्बई चातुर्मास वाले और भी सिंघाडे थे। चार सिंघाड़े साथ–साथ उदयपुर तक आए। बीदासर में गुरुदेव के दर्शन किये। आचार्यश्री को उल्लासनगर के चातुर्मास का सारा निवेदन किया। आचार्यश्री ने आशीष दी – बहुत उपकार किया।

■■■

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

: 5 :

पंजाब से दिल्ली तक

सं. 2028 : लुधियाना (पंजाब)

2028 का चातुर्मास लुधियाना घोषित हुआ। हजार मील से आए और लगभग पांच सौ मील दूर वापिस भेज दिया। लुधियाना चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ। धर्म–प्रभावना अच्छी रही। चातुर्मास सम्पन्न होने के पश्चात् गुरु दर्शन का आदेश प्राप्त हुआ। इधर बांगलादेश की लड़ाई छिड़ गयी। जगह–जगह पुलिस तैनात थी।

हवाई अड्डे पर बक–झक : (बांग्लादेश की लड़ाई)

रास्ते में नहरों के पुलों पर तैनात पुलिस ने पूछा – आप कौन हो, कहाँ जा रहे हो? ऐसे पूछताछ करके कई जगह तो छोड़ देते किन्तु एक जगह जहाँ हवाई अड्डा था। पुलिसकर्मी आया और बोला – चलो, हमारा अफसर बुला रहा हैं। वहां सुरक्षा सैनिकों का बड़ा काफिला तैनात था। हम सड़क के उस तरफ गये तो अफसर ने कहा – यहीं बैठ जाओ, तुम्हारी तलाशी लेंगे। हमने कहा – हम साधु हैं, रोज सड़क से ही गुजरते हैं। पर, उस समय कौन कहे कि हम जानते हैं। उसने कहा कि हमारा अफसर आएगा तब तलाशी लेगा। हमने कहा – तुम्हारा अफसर कब आएगा, हमें छह मील जाना है। प्यास भी लग गई है। उसने कहा – हम पानी यहीं मंगा देंगे। हमने कहा–हम यह पानी नहीं पीते, गरम पानी लेते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

फिर सामने होटल से थोड़ा पानी लेकर आए। हम तीन सतियाँ आगे थे और दो सतियाँ पीछे चल रही थीं। हमें तो रोका नहीं, उनको रोक लिया और उनके नांगले में हाथ डालने लगे। साध्वी पानकंवरजी ने कहा – हमारे हाथ न लगाएं ! बात करनी है तो दूर से और तमीज से करें ! काफी बकझक किया तो सतियों ने कहा – जो पहले गए उन्हें क्यों नहीं रोका? उन्हें बुलाओ या फिर हमें जाने दो। हम तो साधु हैं। उसने कहा – साधु हो तो क्या सर्टिफिकेट है तुम्हारे पास? दो सतियाँ ही थीं, कोई साथ में भाई नहीं था। निर्भयता से उन्होंने हर प्रश्न को उत्तरित किया।

वे हमारे पास पहुँच गईं। हम वहां बैठे ही थे। उन्होंने कहा – महाराज ! आपको यहाँ रोका, हमें तो वहीं रोक लिया। फिर हमने कहा – "भाई, हम कब तक यहां रुकेंगे? तुम्हें विश्वास नहीं है तो हमारे साथ अपने दो साथी भेज दो। हम बरनाला जा रहे हैं और अभी भक्त लोग सामने आ जाएंगे।" जब हम जाने लगे तो काशीद को रोक लिया और कहा – तुम्हारा झोला दिखाओ। काशीद ने कहा – "मैं तो इनके साथ–साथ हूँ।" पुलिस ने जोर से कहा – पठान-सा लगता है, और कहता है इनके साथ हूँ। वह पुलिस से डर गया। पुलिस वाले ने हमसे पूछा कि क्या यह तुम्हारे साथ है? हमने कहा – "हाँ, यह हमारे साथ है।" तब उसे जाने दिया और कहा – हमारा अफसर तुम्हें रास्ते में मिल जाएगा। हमने कहा, "कोई बात नहीं, हम तलाशी दे देंगे।" हम बरनाला मेड़ी पहुँच गए, किन्तु कोई सेवार्थी नहीं पहुँचा।

सिरसा में नया संकट

बरनाला मेड़ी में तेरापंथी घर थे। हमने उनसे सामने नहीं आने का कारण पूछा तो लोगों ने बताया कि महाराज, यहां संत पधारे हुए थे, इसलिए हम नहीं आए। फिर उनको रास्ते की सारी घटना बताई और कहा कि कोई सर्टिफिकेट बनता है तो बनवा दो। उस दिन रविवार था। कोई अधिकारी नहीं मिला। कालांवाली चातुर्मास वाली सतियाँ सुखदेवांजी हमें मिल गए। हम दो सिंघाड़े साथ में हो गए। वहाँ से सिरसा एक मंजिल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ही थी। सिरसा के भाई सामने आ गए थे। वे वहीं रातभर रुके। हमने सुबह विहार किया।

सिरसा जाने के दो रास्ते थे। एक रेलवे लाइन होते हुए दूसरा सीधा सड़क से। साध्वी सुखदेवांजी ने कहा – आप पंचमी समिति से निवृत्त हो कुछ समय रेलवे लाइन पर चलना फिर फाटक से सड़क पकड़ लेना। वह रास्ता सीधा जाता है। हमने फाटक से रेलवे लाइन ही ले ली। सड़क नहीं पकड़ी। सुखदेवांजी और सिरसा से आए हुए भाई, सब पीछे ही रह गए।

साध्वी सूरजकंवरजी और एक छोटी साध्वी दोनों रेलवे लाइन पर चल रहे थे। बीच में एक पुल आ गया। पुल के दोनों ओर पुलिस का जबरदस्त पहरा था। पुलिस का मुख्य अधिकारी वहाँ नहीं था। हमने मन ही मन सोचा पुल से उतर कर पीछे रही सतियों का इन्तजार कर लेंगी। जैसे ही पुल पर पहुंचे, पुलिसकर्मियों ने हमें रोक लिया। मैंने पीछे मुड़कर देखा कि सतियाँ आ रही हैं या नहीं तो उनको और शक हो गया। कड़क कर धरती पर डण्डा मारते हुए क्रोध में कहा – तुम कौन हो? साध्वीश्री ने कहा, "हम साधु हैं।" पुलिसकर्मी ने कहा – 'आए हो साधु! ढोंगी कहीं के! अभी दो दिन में हमने साधु के वेश में कई जासूसों को पकड़ा है। बैठ जाओ यहीं ! हमने कहा हम नहीं बैठेंगे क्योंकि यहाँ कोयले का चूरा बिखरा पड़ा है। थोड़ी देर में ही दो-चार पुलिसकर्मी और आ गए। लाठी को धरती पर पीटते हुए कहा – "चलो थाने में।" उसी समय हमारे सामने ही एक पुलिसकर्मी ने थाने में फोन भी कर दिया। अपने अफसर से कहा – हमने अभी-अभी दो महिला जासूसों को साधु वेश में पकड़ा है। प्रत्युत्तर में कहा गया – उन्हें यहाँ ले आओ, पूछताछ करेंगे। हमें फिर कहा – बैठ जाओ, तलाशी लेंगे। वो लोग हमें बार–बार परेशान कर रहे थे। इधर दूर से साध्वियाँ दिखाई दीं। वे सड़क के रास्ते से जा रही थीं।

साध्वियों को देख कहा – हम उधर जाएँगी, क्योंकि हमारी साध्वियाँ उधर से जा रही हैं। पुलिसकर्मी बड़े–बड़े लट्ठ ले हमारे चारों तरफ खड़े हो गए और कठोर शब्दों में कहा – कहीं नहीं जा सकते। यहीं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रहो। पहले तलाशी दो। मैंने कहा – तलाशी वहीं दे दूंगी जहाँ हमारी साध्वियाँ हैं। पुलिस ने कहा – हम उन्हें भी यहीं ले आते हैं। मेरे मना करने पर भी वे साध्वियों को बुलाने के लिए दौड़ पड़े।

उन्हें ऐसा करते देख तलाशी देना ही उचित समझा। तत्काल नांगला (जिसमें हम अपना सामान रखते हैं) तथा झोली खोल दी। पुठ्ठे में एक अणुव्रत की पुस्तक थी। मैने अणुव्रत की जानकारी दी, फोटो दिखाए और बताया – आचार्यश्री तुलसी हमारे गुरु हैं।

उधर कई लोग साध्वियों को लाने चले गए। साध्वियों ने सोचा – सिरसा के श्रावक आए हैं, इसलिए वे वहीं रुक गईं। एकदम पास आने पर ज्ञात हुआ कि पुलिसकर्मी हैं। साध्वियों से कहा – उधर पुल पर चलो। साध्वियों ने कहा – क्यों चलें? पुलिसकर्मियों ने कहा – क्यों की ही तो लड़ाई है। चलो, नहीं तो तुम्हारे दो साथी उधर हैं, उनको हम नहीं छोड़ेंगे। साध्वियाँ हमारे पास पहुँचीं। इतने में सिरसा के भाई देवराज जैन भी पहुँच गए। उन्होंने अपना परिचय दिया। वे सरकारी महकमे में कार्यरत थे। वस्तुस्थिति सामने आ गई। सभी लोग शर्मिन्दगी महसूस करने लगे। अपनी गलती के लिए माफी माँगने लगे। हमने कहा – यह तो आपकी ड्यूटी है। इसमें नाराजगी कैसी।

हमने वहाँ से प्रस्थान किया। रास्ते में एक सरकारी अफसर गाड़ी में घूम रहा था। उसी के पास कुछ समय पूर्व हमारे विषय में उन पुलिसकर्मियों ने फोन किया था। उसने हम बहुत सारी साध्वियों को देखा, सोचा, फोन में दो साध्वियों को पकड़ने की बात कही थी पर ये तो दस हैं। दो साध्वियाँ थोड़े पीछे थीं। उनसे पूछा – उन्होंने हमारी तरफ इशारा करके कहा – आगे जो साध्वियां जा रही हैं, उनसे पूछो। संयोगवश मेरे हाथ में नांगला अभी भी खुला हुआ था। मैंने कहा – हम अभी तलाशी देकर आई हैं। पुनः अफसर ने हमसे पूछा – सिरसा में आप कहाँ रहेंगी? भाइयों ने प्रवास स्थल की जानकारी दी । रात्रि में भजन–संध्या के कार्यक्रम के समय वह अफसर भी पहुँच गया। उसके साथ वे पुलिसकर्मी भी थे, जिन्होंने हमें रोका था।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सिरसा श्रावक समाज ने उन्हें सम्मानित किया। गणाधिपति गुरुदेव की पुस्तकें भेंट कीं। उन्होंने हमसे कहा – "महाराज, यह समय ऐसा ही है। एक गाँव से दूसरे गाँव जाते समय जानकार आदमी साथ हो तो ठीक रहता है।" सबने पुनः क्षमायाचना की।

हम सानन्द गंगाशहर मर्यादा महोत्सव पर पहुँचे। गुरुदेव को सारी घटना निवेदित की। आचार्यश्री ने फरमाया – तुम डरी नहीं? हमने कहा – गुरुदेव ! आप जब हमारे साथ हैं तो डर कैसा? आपका नाम ले कहीं भी चले जाते हैं। फिर मर्यादा महोत्सव में परिषद् में फरमाया– साध्वियों को कितनी कठिनाई होती है। स्थान–स्थान पर पुलिस तलाशी लेती है।

सं. 2043 : नोखामण्डी

साध्वीश्री कालू से बीकानेर गए। वहाँ ऑपरेशन करवाया। 6–7 महीने रुके। सानन्द नोखामण्डी चातुर्मास कर आचार्यश्री के दर्शन किए। आगामी चातुर्मास पंजाब फरमाया । आचार्यश्री दिल्ली के लिए विहार कर रहे थे। रास्ते में हजारों सैनिक तम्बू तानकर अभ्यास करने आए हुए थे। मैंने उनसे पूछा, "जंगल में पानी कहाँ से लाते हो?" हमारे पास है – उन्होंने कहा। उन्होंने कहा कि हम फिल्टर किया हुआ पानी रखते हैं। साध्वियों को जरूरत थी तो साध्वियों ने उन लोगों का पानी लिया। चूरू पहुँचे। आचार्यश्री भी पधार गए। तीन-चार दिन विराजना हुआ। सुबह आचार्यश्री के दर्शन करने गए। आचार्यश्री विराज रहे थे। आचार्यश्री की दृष्टि पानकंवर जी पर पड़ी। उनके पैरों में दर्द था। गुरुदेव ने पूछा – "कितने किमी चलती है?" साध्वीश्री ने कहा – "दस किलोमीटर।" गुरुदेव ने कहा, "पानकँवरजी के बहुत दर्द है, सरदारशहर चातुर्मास कर लो।" साध्वीश्री सूरजकंवरजी ने गुरुदेव से निवेदन किया – "मैंने दिल्ली नहीं देखी, कृपा कर मुझे भी साथ ले जाएँ।" कुन्दनरेखाजी ने तो पहले ही अर्ज कर दी थी दिल्ली जाने के लिए, क्योंकि वहाँ उनका संसारपक्षीय ननिहाल था और साध्वीश्री की अर्ज पर गुरुदेव ने मुस्कराकर कहा – "आ जाओ।" रायकँवरजी का सिंघाड़ा बनाकर उनका चातुर्मास सरदारशहर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

घोषित कर दिया। साध्वी सुमतिश्रीजी और सुधाश्रीजी को भी साध्वीश्री के साथ कर दिया। सरदारशहर में कनकश्रीजी का चातुर्मास पहले फरमाया हुआ था।

दिल्ली यात्रा

साध्वीश्री व अन्य साध्वियाँ गुरुदेव के साथ दिल्ली पहुँचीं। गुरुदेव महरौली में अध्यात्म साधना-केन्द्र में विराजे और साध्वीप्रमुखाश्री साधना-केन्द्र के पास वाले नागपाल बाबा के मंदिर आद्या कात्यायनी में विराजीं। हमने सुना, नागपाल बाबा को स्वप्न में कुछ आभास हुआ था। इससे उनकी आचार्यश्री के प्रति बहुत अधिक श्रद्धा हो गई । साध्वियों ने तो इतना बड़ा आश्रम कभी देखा नहीं था। साध्वीप्रमुखाजी की कृपा से अनेक दर्शनीय स्थलों का अवलोकन किया। महरौली से गुरुदेव ने फरीदाबाद की ओर विहार किया। दस दिन वहाँ रुके और साध्वीश्री को वहीं छोड़ दिया। गुरुदेव ने कहा – "यहाँ के सभी श्रद्धा के घरों को परस लेना।" साध्वियाँ वहाँ एक महिने रुकीं। अच्छा धार्मिक वातावरण बना। वहाँ से साध्वियाँ अणुव्रत भवन गईं। वहाँ साध्वीप्रमुखाजी ने साध्वीश्री को कहा कि हम कमल मंदिर देखकर आए है। तब साध्वीश्री ने कहा – मुझे भी देखना है। महाराज ने बड़ी कृपा करके साध्वियों को साथ भेजा। अणुव्रत सभागार से वह मंदिर 10 किमी दूर है। अच्छी जगह है। वहाँ से गुरुदेव के साथ ही विहार कर हिसार पहुँचे।

वर्ष 2049 : इन्दौर

जींद से उज्जैन गए। उज्जैन में हर साल कुम्भ का मेला लगता है। उस साल भी मेला लगा था। हजारों साधु आए हुए थे। साध्वियों ने साधना करने के अलग-अलग तरीकों के दृश्य देखें। कोई खड़े–खड़े झूल रहे थे, कोई अग्नि को सर पर रखकर तपस्या कर रहे थे। इस तरह सभी तपस्यारत थे। उज्जैन के बाहर ही कुम्भ के मेले में साध्वियों को भी जगह मिल गई। वहाँ दो–तीन दिन ठहरे। वहां रामस्नेही नाम का सैकड़ों संतों का एक संघ था। उन्होंने साध्वियों को प्रवचन के लिए आमंत्रित किया,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वहाँ गए। फिर बड़नगर आदि गाँवों को परसते हुए इन्दौर पहुँचे। इन्दौर चातुर्मास में अच्छे कार्यक्रम हुए। वहाँ एक संगीत संध्या का आयोजन हुआ। उस प्रतियोगिता में तेरापंथ महिला मण्डल का प्रथम स्थान रहा। साध्वियों को बम्बई की ओर विहार करने का आदेश प्राप्त हो गया।

साध्वी सूरजकंवरजी के पैरों में दर्द हो गया। साध्वीश्री ने सोचा – इतनी दूर कैसे चला जाएगा। डॉक्टर की सलाह से इंजेक्शन लगवाए। जब पैर ठीक हो गए तब विहार किया। नीमच छावनी की पहाड़ी यात्रा करने से पैरों में फिर दर्द हो गया। कुछ दिन विश्राम कर वहाँ से विहार किया। रास्ते में जैनों का एक बड़ा गाँव आया। तेरापंथी दो-तीन घर थे। स्थानकवासियों की आबादी अधिक थी। वहाँ नौ दिन ठहरे। तेरापंथी परिवार थे, पर वे कुछ नहीं जानते थे, उनको भी समझाया। वहाँ से प्रस्थान कर पच्चीस वर्षों के बाद पुनः उल्लासनगर गए। पाँच मंजिला तेरापंथ भवन बनकर तैयार हो गया था। उसका उद्घाटन नहीं हुआ था। लोगों ने कहा, "सूरजकंवरजी महाराज 25 वर्षों के बाद आ रहे हैं। उनके सामने ही उद्घाटन करेंगे।" साध्वीश्री के उल्लासनगर पहुँचने के बाद कान्ति भाई से उद्घाटन करवाया गया। बम्बई से भी सैकड़ों की संख्या में लोग आए।

उल्लासनगर में लम्बे समय बाद हमारे प्रवास को ले श्रावकों में विशेष प्रसन्नता थी । अनेक नए लोग सम्पर्क में आए। वहाँ से डोम्बीवली, ठाणा आदि क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए अणुव्रत सभागार, मरीन लाइन पहुँचे। वहाँ से थोड़ी दूर पर खुशीलालजी (ब्यावर वाले) की बारह मंजिल की बिल्डिंग थी। उनकी अर्ज पर बारहवें माले में ठहरे। एक दिन रहे।

सं. 2050 : मलाड़ (मुम्बई)

मलाड़ चातुर्मास करने के लिए गए। उस दिन वर्षा बहुत थी। फिर भी काफी लोग आए। जुलूस लम्बा था। चातुर्मासिक प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ। चातुर्मास में अणुव्रत से जुड़े कार्यक्रम में अभिनेत्री भाग्यश्री और मनमोहन मिठाईवाला (एम.एम. मिठाईवाला) को विशेष अतिथि के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रूप में आमंत्रित किया गया। उस वर्ष को 'भिक्षु चेतना वर्ष' के रूप में मनाया गया । भारी वर्षा के बावजूद भी रैली बहुत विशाल थी। समय पर वर्षा रुक गई। बीच में रेल की पटरी है, जहाँ पर रेल एक मिनट भी नहीं रुकती थीं। वहाँ पर नगरपालिका के चेयरमैन ने बीस मिनट तक रेल रुकवाई। आचार्यश्री को जब समाचार मिला तब आचार्यश्री ने प्रसन्नता व्यक्त की, कहा – "बम्बई जैसे शहर में जुलूस के लिए रेलगाड़ी रोकना कोई सहज बात नहीं है।" रैली चली तब तक बारिश रुकी रही और जैसे ही साध्वियाँ स्थान पर पहुँची तो तेज वर्षा शुरू हो गई। प्रकृति का यह रूप किसी चमत्कार से कम नहीं था। सचमुच प्रकृति भी महापुरुषों के कर्तृत्व का अभिनन्दन करती है।

नवभारत टाइम्स के सम्पादक जगदीशजी अनेक बार चातुर्मासिक कार्यक्रमों में आए और उनके विस्तृत संवाद पत्र में प्रकाशित किए। इससे बम्बई में अच्छी संघीय प्रभावना हुई।

मनमोहन मिठाईवाला ने अर्ज की कि हमारी मिठाई की दुकान में पगलिया कराएँ। साध्वियों को ईस्ट से वेस्ट जाना था तो उसकी दुकान का रास्ता लिया। उसकी मिठाइयों की कई दुकानें थीं। जुलूस बहुत लम्बा था। उसने जुलूस में सहभागी सभी लोगों को लस्सी पिलाई। बम्बई की सड़क पर खड़े रहने को जगह कहां? दुकान के स्टॉफ ने चलते–चलते जुलूस में लोगों को लस्सी पिलाई। साध्वियों ने भी वहां थोड़ा व्रत निपजाया। ईस्ट से वेस्ट में गए। वहाँ कुछ दिन ठहरे। एम.एम. मिठाईवाले की अर्ज पर उसके मकान में रुके। नीचे ऑफिस थी। ऊपर कम्प्यूटर की क्लासें चलती थीं, बीच का तल्ला खाली था। साध्वियाँ उसमें ठहरीं। वहाँ एक चित्रकार को बुलवा अणुव्रत का चित्र बनवाया। बोरीवली में साधुओं के ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं था। उसने कहा – आप जब भी आओ, मेरे यहाँ ही ठहरना। सभी पारिवारिकजनों को दर्शन करवाए। अच्छी भक्ति की।

वहाँ से गोरेगाँव गए। उस दिन आचार्यश्री का दीक्षा दिवस था। इसके उपलक्ष्य में रैली निकाली गई। अच्छी संख्या में लोग प्रवचन सुनने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

के लिए आए। वहाँ दो दिन रुककर मरीन लाइन आए। महोत्सव का समय नजदीक था। साध्वियाँ घाटकोपर गईं। वहाँ मोच्छव की तैयारियाँ हो रही थीं। विनोदजी कछारा ने रामलीला मैदान में पण्डाल बनवाया। जगह-जगह टी.वी. की व्यवस्था थी । लगभग दस हजार लोग कार्यक्रम में सम्भागी थे। रेलवे लाइन तक आचार्यश्री के पोस्टर लगा दिए। दो बजे तक कार्यक्रम चला। कन्याओं ने अनेक भाषाओं में शब्द-चित्र प्रस्तुत किया। लोगों को बहुत पसन्द आया। अक्षय तृतीया का भी अच्छा कार्यक्रम हुआ। ठाणे में महावीर जयंती मनाई। प्रोग्राम बड़ा रोचक रहा। संपादक लालजी भाई आए। कार्यक्रम का विस्तृत कवरेज सबके लिए आश्चर्य का विषय बन गया।

सं. 2051 : पूना, सं. 2052 : औरंगाबाद

बम्बई से पूना चातुर्मास के लिए गए। चातुर्मास में प्रेक्षाध्यान का शिविर लगा। 90-95 लोगों ने भाग लिया। ध्यान कराने के लिए प्रशिक्षक बम्बई और मद्रास से आए। शिविर सफल रहा। तत्पश्चात् अनेक दिनों तक साध्वी कुन्दनरेखाजी ध्यान करवाती रहीं। अगला चातुर्मास साध्वीश्री का औरंगाबाद फरमाया। पूना के भाई सेवा में थे। वे हमारे प्रवास के लिए स्थान की खोज कर रहे थे। तभी एक भाई ने पूछा – "आप क्या देख रहे है ? " सेवार्थियों से जानकारी प्राप्त कर उसने कहा – "हमारे खेत में मकान है, वहाँ साध्वीश्री ठहर सकती हैं।" भाइयों ने जाकर देखा। दो कोठरियाँ थीं। उन्होंने सोचा, साध्वियाँ कैसे रहेंगी ? उस भाई ने कहा, "आप चिंता न करें। सब व्यवस्था हो जाएगी। मेरी बहुत इच्छा है।" वह भाई नगर में गया। एक ट्रक में पण्डाल का सामान, बिछाने के लिए दरियाँ, कुर्सी-टेबलें आदि लेकर आया। पण्डाल बनवाया और यात्रियों के भोजन की व्यवस्था भी अपनी ओर से की। गांव से बहुत लोग आए। नया खेत था। काशीद के पास धर्मचक्र की कैसेट थी। गाँव में लोगों को दिखाने के लिए वहाँ टीवी भी लगा दी। लोग उसे देख बहुत खुश हुए। प्रवचन भी यथासमय हुआ। अच्छी धर्म प्रभावना हुई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वहाँ से नगर के लिए विहार किया। यह श्रमण संघ के आचार्य आनन्द ऋषिजी का गाँव है। उनकी समाधि वहीं पर है। औरंगाबाद में स्थानकवासी लोगों का बाहुल्य था। तेरापंथियों का एक ही घर था। वहाँ से थोड़ी दूर पर आनन्द ऋषिजी की कॉलोनी है। वहाँ चातुर्मास किया, उस कॉलोनी में साध्वियाँ ठहरीं। वहाँ पाँच घर थे, और घर दूर थे। स्थानकवासियों का पक्का पण्डाल बनाया हुआ था, वहाँ रहे। वहाँ तेरापंथी साधु-साध्वियों का आगमन कम होता है, अतः लोगों में काफी उत्साह था। व्याख्यान दिया, लोगों को तेरापंथ की रीति–नीति के बारे में बतलाया । धर्मचक्र की कैसेट भी दिखाई गई। अच्छी प्रभावना हुई। वहाँ से नगर में गए। वहाँ आनन्द ऋषिजी के साधु-साध्वियाँ भी थे। दो साधु–महेन्द्र मुनि तथा आदर्श मुनि थे। उन्होंने तेरापंथ के साधु-साध्वियों को कभी देखा नहीं था, उनकी बड़ी इच्छा थी। चार साध्वियाँ सामने आईं और उनके स्थान में उतरे। दो के तो स्थिरवास था। चार साध्वियाँ ऊपर की मंजिल में थीं। साध्वियाँ बीच वाली मंजिल में उतरीं। साध्वियों में जिज्ञासा थी। उनको तेरापंथ की मर्यादा, अनुशासन संहिता आदि बतलाई। हस्तकला दिखाई। सबके आग्रह पर तीन दिन का प्रवास वहाँ किया । आनन्द ऋषिजी की समाधि देखी। व्याख्यान देते, उस हाल में उनके आभामण्डल को सुरक्षित रखने के लिए वे जिस पट्ट पर विराजते थे, उसके चारों तरफ कांच जड़े हुए थे। फिर संतों से मिले। आदर्श मुनि ने पुस्तकालय दिखाया। तत्पश्चात् अन्यत्र प्रवास किया। लोग आते रहे। प्रेक्षाध्यान शिविर लगा। विहार करने लगे तो लोगों ने निवेदन किया कि आनन्द ऋषिजी की पुण्यतिथि तक आप यहीं विराजिए। पुण्यतिथि पर साध्वियाँ वहीं रहीं। काफी संख्या में लोग आए। एक महीने का वह प्रवास अनेक दृष्टियों से स्मरणीय रहा।

सं. 2053 : हिसार, सं. 2054 : सरसा, सं. 2055-56 : जयपुर शहर व सी-स्कीम, सं. 2057 : अजमेर

औरंगाबाद में अच्छा उपकार हुआ। अन्य लोग भी सम्पर्क में आए। शिविर में कई लोगों ने भाग लिया व अच्छी संख्या में गुरुधारणाएं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हुईं। तत्पश्चात् हिसार चातुर्मास किया। वहाँ से सरसा की ओर अगला चातुर्मास करने के लिए विहार किया। बीच में मण्डियों में रहे। वहाँ भी अच्छा उपकार हुआ। आदमपुर मण्डी में दस घरों ने गुरुधारणा की। कई व्यक्तिगत गुरुधारणाएँ हुईं। लोगों का उत्साह बढ़ता गया। महावीर जयन्ती के कार्यक्रम में दो हजार लोगों की उपस्थिति रही। लोगों ने चातुर्मास के लिए स्थान का प्रस्ताव रखा तो हिसार के एक भाई ने चातुर्मास हेतु अपना फ्लैट समाज को दे दिया। अब वहाँ चातुर्मास होते हैं। सरसा के बाद दो साल जयपुर में रहे। जयपुर से विहार कर तारानगर में गुरुदेव के दर्शन किए। वहाँ से आदेश मिलने पर अगला चातुर्मास अजमेर में किया।

■■■

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

: 6 :

आचार्यश्री महाश्रमणजी का मंगल सान्निध्य

सन् 2010 में पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण का आचार्य रूप में प्रथम बार बीदासर में पदार्पण हुआ। 29 दिसम्बर, 2010 को आचार्यश्री पधारे। नववर्ष का शुभारम्भ गुरुदेव के पावन पाथेय व मंगल वचनों से हुआ। नए सूर्योदय के साथ समस्त बीदासरवासियों का भाग्योदय हुआ।

गुरुदेव के तीन दिनों के बीदासर प्रवास में तीनों ही दिन साध्वीश्री को गुरु दर्शन प्राप्त हुए। प्रथम दिन तो ग्रास बख्शाया। साध्वीश्री विशेष कृपा पा हर्ष विभोर हो गईं। मन का आह्लाद शब्दों का रूप नहीं ले पा रहा था, कुछ बोल ही नहीं पा रही थीं। दूसरे दिन गुरुदेव के पुनः दर्शन हुए तब साध्वीश्री ने निवेदन किया – "गुरुदेव! मुझे तो थोड़ा समय दिराओ, सेवा करवाओ।" गुरुदेव ने महती कृपा कर तीसरे दिन लगभग 15-20 मिनट तक सेवा करवाई। गुरु की ऐसी कृपा से कभी उऋण नहीं हुआ जा सकता।

उस दिन साध्वीश्री ने अपनी भावनाओं को शब्दों में समेटा और कहा – "गुरुदेव! आपकी मुझ पर बहुत कृपा रही। पता नहीं, मैंने कौनसे पुण्य-कर्म किए हैं जो आप की कृपादृष्टि मिलती रही है।" आपने आगे कहा– "गुरुदेव! यहाँ मेरी बहुत अच्छी सेवा हो रही है। मैं तो गणगौर हूँ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

खिलाते हैं तो खा लेती हूँ, पहनाते हैं तो पहन लेती हूँ। तीनों साध्वियाँ मेरी बहुत सेवा करती हैं। आप इन तीनों को कुछ बक्शीश करावे।'' गुरुदेव ने कहा – "कर्मों की निर्जरा हो रही है, फिर क्या बक्शीश करावें?" साध्वीश्री ने कहा, "गुरुदेव! आप दयालु है, करुणा के सागर हैं। कृपा कर इन्हें कुछ बक्शीश करावें।" तब पूज्य गुरुदेव ने साध्वीश्री पानकँवरजी, साध्वीश्री रायकँवरजी व साध्वी मनीषाप्रभाजी तीनों को छह महीने तक विगय बक्शीश करवाई।

साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने भी खूब सेवा कराई। स्वयं दर्शन देने पधारते। जितने दिन वहां प्रवास हुआ उतने दिन प्रायः प्रतिदिन सेवा करवाते रहे। ऐसी मातृहृदया साध्वीप्रमुखाश्रीजी की स्नहेयुक्त छत्रछाया पा साध्वीश्री स्वयं को धन्य अनुभव करती।

जिस दिन गुरुदेव का विहार हो रहा था उस दिन साध्वीश्री अपने साधन से कमरे के बाहर आ गईं। गुरुदेव सब कमरों के बाहर दर्शन देते हुए पधार रहे थे। बाहर आवाज बहुत हो रही थी। साध्वीश्री कुछ कह रहे थे, पर गुरुदेव को सुनाई नहीं दे रहा था। फिर बालमुनि 'गणेश' ने ध्यान से सुना और गुरुदेव से निवेदित किया कि साध्वीश्री कुछ निवेदन कर रहे हैं। तब गुरुदेव ने फरमाया, "चित्त समाधि में रहो, चित्त समाधि में रहो।" और दोनों हाथों से जीकारा प्रदान किया। साध्वीश्री का जीवन धन्य हो गया।

साध्वीश्री को चार आचार्यों के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पूज्य आचार्य श्री कालूगणी के हाथों दीक्षा प्राप्त हुई। उनके साथ तीन अंचलों मेवाड़, मारवाड़ तथा मालवा की यात्राएँ की। आचार्यश्री तुलसीगणी के साथ भी कई यात्राएँ की और गुरुदेव का इन पर बहुत विश्वास था। इन्हें पृथक् से भी कई यात्राएँ कराईं। इस प्रकार पूज्य तुलसीगणी के आचार्यकाल में विभिन्न प्रान्तों की यात्राएँ की तथा धर्म का खूब प्रचार–प्रसार किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की भी कृपादृष्टि बनी रही। वृद्धावस्था में इनकी चित्त-समाधि बनी रहे, इस हेतु गुरुदेव ने बहुत ध्यान दिराया। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी की भी महती कृपा सतत् आपको प्राप्त

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

होती रही। आपने महती कृपा कर साध्वीश्री को सन् 2012 के बालोतरा प्रवास के समय वैशाख शुक्ला दशमी – तृतीय पट्टोत्सव के दिन फरमाया – साध्वीश्री सूरजकुमारीजी ने बंबई के उपनगरों व अन्य क्षेत्रों में बहुत उपकार किया है, संघ की प्रभावना की है। मैं इन्हें 'शासनश्री' के रूप में स्वीकार करता हूं।

सन् 2013 में तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर जब आचार्यश्री महाश्रमणजी का बीदासर में प्रवास हुआ तब भी उनको उपासना का विशेष अवसर प्राप्त हुआ। साध्वीश्री ने अपनी तीन मनोकामनाएं पूज्य चरणों मं प्रस्तुत की। वे सौभग्यशालिनी थीं कि दो इच्छाएं गुरुकृपा से जीवन काल में ही पूर्ण हो गईं।

इसी तरह साध्वीश्री को चार मातृस्वरूपा साध्वीप्रमुखाओं की छत्रछाया प्राप्त हुई। साध्वीश्री कानकँवरजी, साध्वीश्री झमकूजी, साध्वीश्री लाडाजी एवं वर्तमान साध्वीश्री कनकप्रभाजी की विशेष कृपा प्राप्त हुई । साध्वीप्रमुखा झमकूजी का तो विशेष वात्सल्य आप पर रहा। इनका बहुत ध्यान रखवाते। इसी तरह वर्तमान साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी भी विशेष कृपा करते रहे हैं। इस तरह चार आचार्यों व चार ही साध्वीप्रमुखाओं के दर्शन व छत्रछाया इन्हें प्राप्त हुए। इतने सौभाग्यशाली व पुण्य के भागी बहुत ही विरले लोग होते हैं। इन्हें अपने जीवन में कभी उलाहना भी नहीं मिला।

साध्वीश्री अपना भाग्य सराहती और कहती – "पता नहीं, कौनसे पूर्वजन्म के पुण्य कर्मों का उदय हुआ, जो मुझे इतना अच्छा धर्मसंघ, ऐसे महान् गुरु मिले हैं। इनकी कृपा से कभी उऋण नहीं हुआ जा सकता। सभी की मुझ पर कृपा रही है।" इस तरह आप अपने आपको पुनः-पुनः संघ के प्रति समर्पित कर आत्मतोष का अनुभव करती।

इतनी लंबी उम्र में भी वे प्रायः स्वस्थ रहीं। अवस्था के प्रभाव के कारण धीरे–धीरे उनका शरीर क्षीण होने लगा। पूर्ण सजगता के साथ उचित समय देखकर वि. सं. 2071, अश्विनशुक्ला तृतीया की रात्रि 2.5 मिनट पर उन्होंने तिविहार अनशन स्वीकार किया। प्रायः आधा घंटे के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पश्चात् वे चौविहार अनशन में अवस्थित हो गई। सवा तीन बजे अंतिम श्वास के साथ चिरविदाई ले ली।

उस पवित्र आत्मा का अष्टवर्षीय प्रवास बीदासर में अत्यंत साताकारी रहा। समाधिकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी सत्यप्रभाजी, साध्वी शिवमालाजी आदि वहां प्रवासित सभी साध्वियों ने मनोयोग से उनकी सेवा–शुश्रुषा की। बीदासर श्रावक समाज ने पूर्णनिष्ठा से अपने दायित्व का निर्वहन किया। उनके संसारपक्षीय भाई धनराजजी सेठिया आदि परिजनों ने पार्थिव शरीर को मुखाग्नि दी। स्थानीय सभी संस्थाओं ने उन्हें स्मृति सभा में भावभीनी श्रद्धांजली समर्पित की। अध्यात्म जगत के पुरोधा आचार्यश्री महाश्रमणजी ने उनके जीवन वृत्त की स्मृति करते हुए बांठिया परिवार को विशेष आशीर्वाद प्रदान किया। पूरा परिवार गुरुदेव की कृपा से कृतकृत्य हो गया।

परिवार के संस्कार

साध्वीश्री का पूरा परिवार ही धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत रहा है। पिता मोतीलालजी बांठिया तथा माता मनसुखी बाई दोनों ने धार्मिक संस्कारों की ऐसी नींव डाली कि उनका पूरा परिवार ही धर्म से हराभरा है। पिताजी के स्वर्गवास के बाद माता मनसुखी बाई का पूरा समय सेवा में ही बीतता। संघ की बहुत सेवा की। वे जब अस्वस्थ रहने लगी तो सेवा में कठिनाई आने लगी। फिर भी मन हमेशा गुरुदेव की सेवा, संत-सतियों की सेवा के लिए छटपटाता रहता। उनके स्वर्गवास के पश्चात् जब पूरा परिवार दर्शनार्थ उपस्थित हुआ तब गणाधिपति पूज्य गुरुदेव ने एक दोहा फरमाया –

"जयपुरवासिनी सजग श्राविका सुखी मनसुखी बाई,
संतसत्यां की सेवा कर जीवन भर करी कमाई।
कमला आदि चार साध्वियों की जननी कहलाई,
पन्नजी, धनजी की मां सुखे-सुखे शिवपुर की राह सिधाई।।"

इसी तरह संसारपक्षीय भाई शासनसेवी पन्नालालजी बांठिया की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सेवाएँ अद्वितीय रहीं । उन्होंने 14 वर्ष की आयु से ही सेवा का मार्ग चुन लिया। साधुत्व तो ग्रहण नहीं कर पाए पर श्रावक धर्म का पालन इस प्रकार किया जो कि कुछ विरले लोग ही कर पाते हैं। विश्व भारती में जो 'योगक्षेम वर्ष' मनाया गया, उस पूरे वर्ष वे वहीं लाड़नूं में रहे और सेवा साधी। उनका संघ के प्रति समर्पण तथा सेवाएं अविस्मरणीय रहीं। 85 वर्ष की अवस्था में जब विवशता व अस्वस्थता सेवा में बाधक बन रही थी तब भी उनका मन सेवा से जुड़ा रहता था। गणाधिपति के वे पूरे विश्वासपात्र थे। गणाधिपति फरमाते, "पन्नालाल धुन का पक्का है।" इस तरह पूज्य गुरुदेव की उन पर बहुत मर्जी थी और सभी आचार्यों की कृपा दृष्टि बनी रही।

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव का जब जयपुर सी-स्कीम में चातुर्मास था तब उनकी बेटी विमला, पुत्र महेन्द्र आदि ने संयोजन का दायित्व कुशलतापूर्वक संभाला । कोई नहीं होता तो दरियाँ तक उठा लेते। इस प्रकार पूरा परिवार दिनभर सेवा में लगा रहता। उनका छोटा पुत्र राजेन्द्र संघीय एवं सामाजिक कार्यों के लिए विशेष रूप से समय का नियोजन करता है। पन्नालालजी की धर्मपत्नी और उनकी बड़ी बहन भंवरी बाई भी सदैव संघीय कार्यों व उपासना के लिए तत्पर रहीं।

पूरे परिवार पर सभी आचार्यों की विशेष कृपा रही । वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी की पूरी–पूरी कृपा है। बीदासर में अस्वस्थता की स्थिति में पन्नालालजी गुरुदेव के दर्शन करने आए। उस समय गुरुदेव विश्राम कर रहे थे, पर पन्नालाल जी के आने की सूचना मिलते ही तुरन्त विराजमान हुए और 15-20 मिनट तक सेवा करवाई। इस कृपा भाव के प्रति पूरा बांठिया परिवार नतमस्तक है।

■■■

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

: 7 :

पूज्यवरों व साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रेरक संदेश

शिष्या साध्वी सूरजकुमारी (जयपुर) आदि साध्वियों!

इस बार वृहद् मर्यादा महोत्सव का समयोजन हुआ। लगभग चार सौ साधु-साध्वियां और सत्तर समण-समणियाँ महोत्सव में सम्मिलित हुए। क्षेत्रीय दूरी आदि कारणों से आप लोग नहीं आ सकीं, पर मन तो अवश्य ही छटपटाया है। सबके लिए सुख-पृच्छा और शुभकामना।

साध्वियों! जिस किसी क्षेत्र में रहना हो, संघीय, मर्यादा और अनुशासन का पूरा ध्यान रखना। पग-पग पर सजग रहना। अप्रमाद की साधना में अपना जीवन समर्पित रखना। पारस्परिक सौहार्द को वृद्धिंगत रखना, जिससे अपनी चित्त समाधि के साथ समाज पर भी संघीय गौरव का प्रभाव बढ़ता रहे।

आप लोग तन से दूर हैं, मन और आत्मा से बिल्कुल सन्निकट हैं, ऐसा अनुभव करें। यहां मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में हुए कार्यक्रमों और संगोष्ठियों के पूरे संवाद उधर आने वाली साध्वियों से सुने, लोगों से सुने और विज्ञप्तियों के माध्यम से पढ़ें।

शेष शुभम्,

सुजानगढ़

– गणाधिपति तुलसी
– आचार्य महाप्रज्ञ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकुमारीजी इगतपुरी से बम्बई आ रहे हैं तो उल्लास नगर का रास्ता लें। उल्लासनगर में ठहरें, वहाँ काम करें। पुराने लोगों की संभाल और नये लोगों का निर्माण करें, बाद में बम्बई की ओर जाना है। सिन्धी लोग नारायण भाई के साथ सरदारशहर पहुँचे हैं, उनकी प्रार्थना को हमने सुना है और मंजूर किया है। नया तेरापंथ भवन बना है, उसके बारे में नया कार्यक्रम होने वाला है, उसको ध्यान में रखना है। सूरजकुमारी ने बम्बई पहुँचने पर उत्साह दिखाया है, साहस किया है। अच्छा काम करना है। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए शासन की प्रभावना करनी है।

समय : सायं 6 बजे — आचार्य तुलसी
दिनांक : 06.03.1993, (शनिवार)

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकुमारीजी, साध्वी सोहनांजी दोनों वहां हैं। दोनों सिंघाड़े वहाँ सकुशल पहुँच गए। दोनों को पहुँचने में कुछ कठिनाई तो अवश्य हुई, लेकिन पहुँच गये। मेरिन ड्राइव और मलाड, दो क्षेत्रों में दो चातुर्मास होंगे। एक समणी केन्द्र जंगम रहेगा। तीनों को मिलकर बम्बई में जमकर काम करना है। बम्बई में जागृति रहे, सुषुप्ति न आए, उसका पूरा प्रयत्न करना है।

दोनों सिंघाड़े समणियों को भी समय-समय पर विचार देते रहें। पूरी सावधानी, सजगता रखें। अप्रमत्त रहना बहुत आवश्यक है। पिछले वर्ष साध्वी गौरांजी आदि ने बम्बई की अच्छी सार-संभाल की। इस वर्ष भी सभी साध्वियां अच्छी सार-संभाल करती हुई सानन्द सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहें। हमारे संघ की अच्छी प्रभावना करें।

सरदारशहर, — आचार्य तुलसी
दिनांक : 02.04.1993

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

बम्बई महानगर में साध्वीद्वय और एक समणीवर्ग तीनों का प्रवास है। यह प्रवास परिणामकारी साबित हो रहा है। फलस्वरूप इस बार का बम्बई युवा-दम्पत्ति-संघ राजलदेसर में उपस्थित हुआ, प्रभावकारी रहा। केवल आगमन नहीं, रहन-सहन, सामायिक-साधना यह सब जनता को बरबस प्रभावित कर रहे थे। सामायिक मंजूषा भी बहुत सूझबूझ भरी लगी। प्रत्येक भाई-बहिन के हाथ में हस्ताभूषण की तरह शोभित हो रही थी। वह भी केवल दिखाऊ नहीं, कार्यकारी बन रही थी। युवा दम्पत्तियों के मन में यह भावना घर कर गई है कि वे बहुत कम समय लेकर आए, इस बार आएँगें तो कम से कम एक सप्ताह का समय लेकर आएंगें।

खैर, अब ऐसा प्रयत्न होना चाहिए, जिससे बम्बई प्रवासी, श्रावक-श्राविकाओं का जीवन जैन जीवन-शैली के अनुरूप बन जाये। यह भिक्षु-चेतना-वर्ष की अनूठी उपलब्धि बन जाएगी।

मलाड चातुर्मास करने वाली साध्वी सूरजकुमारीजी ने उल्लास नगर आदि क्षेत्रों में काफी अच्छा प्रयास किया है। वहाँ के लोगों को भी श्रुतोत्सव में सम्मिलित होने की प्रेरणा दें।

राजलदेसर — **आचार्य तुलसी**
31 अगस्त 93

।। अर्हम् ।।

शिष्या सूरजकंवरजी आदि स्यूंसुखपृच्छा ! थे उल्लासनगर में चौमासो कियो। घणो उपकार कियो। कष्ट पण पड़ियो, पर कोई परवाह नहीं राखी। अब की बार भी फिर पूरी चेष्टा करणी है।

म्हारी मंगलकामना थारे साथ है।

ददरेवा, — **आचार्य तुलसी**
दिनांक 11.02.1994

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकुमारीजी आदि साध्वियाँ हमारे धर्मसंघ की अभिन्न अंग हैं। उनके द्वारा जो शासन की सेवा हो रही है, विवेचन नहीं किया जा सकता। दूर बैठे हम सुनते हैं, सात्विक गर्व होता है। अपनी मौलिक वृत्तियों में, समाचारी में कहीं श्लथता नहीं आये, इस बात का पूरा ध्यान रहे। जहाँ कहीं भी क्षेत्रों में संस्थागत द्वैत है उसको बड़ी गहराई से तटस्थ, दृष्टि से शांत करने का प्रयत्न करना चाहिए। साहित्य और पत्र-पत्रिकाएँ पहुँचती हैं, उनका पठन-पाठन अधिक से अधिक हो, प्रयत्न रहना चाहिए। सभी लोग स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें और क्षेत्रों में जमकर कार्य करें। आने की जल्दबाजी नहीं करें।

राजलदेसर, — **आचार्य तुलसी**
13.08.1993

शिष्या सूरज (जयपुर) तुमने चाहा कि मैं तुम्हें कुछ लिखित संदेश दूँ। तुमने यह भी कहा कि अब तक कभी नहीं मिला। तो लो, मैं तुम्हें तीन बातें सुझाना चाहता हूं :

1. अपने आप में हीनता को कभी प्रश्रय मत दो; क्योंकि इस दुनिया में कोई पूर्ण नहीं है। पुरुषार्थ करने में तुम भी पीछे नहीं हो, फिर निराशा किसलिए?
2. कषाय-मुक्त जीवन ही जीवन है। अतः, जब तक कषाय- मुक्त न हो जाये तब तक पीछा नहीं छोड़ना है। प्रयत्न करते ही रहना है।
3. मन को संदिग्ध या कुंठित मत रखो। कोई भी बात मन में आती है, उसे स्पष्ट कर लो। वहम से अपनी मानसिक शक्ति को क्षीण मत करो। अपनी साधना अपने ही द्वारा होगी। प्रामाणिकता से अपने आपको साधती रहो।

लाडनूँ, 1 अप्रैल, 1994 — **आचार्य तुलसी**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकुमारीजी अपनी सहयोगिनी साध्वियों के साथ अपने क्षेत्र बम्बई में धर्म प्रभावना और भैक्षव गण की श्री वृद्धि में लगी हुई हैं। यह संघीय एकात्मकता हमारे गौरव को बढ़ा रही है। लम्बी-लम्बी यात्रा और हजारों-हजारों लोगों से सम्पर्क और उनका सम्बोधन यह सब कार्यक्रम को गरिमा देने वाले हैं। योग-क्षेम वर्ष का प्रभाव भी परिलक्षित हो रहा है। जो भी लोग आते हैं, कार्यक्रम की व्यवस्था, विषय प्रतिपादन की शैली, ध्यान कराने की पद्धति, आदि के बारे में काफी कुछ कहते हैं। विकास हुआ है, और अधिक करना है। अपने-अपने सहवर्ती के प्रति भी ध्यान देते रहें, यह अपेक्षित है। सबके प्रति मंगलभावना !

राजलदेसर — **युवाचार्य महाप्रज्ञ**

13.08.1993

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकुमारी (जयपुर), मलाड़-बम्बई में अच्छा कार्य कर रही हैं। उन्होंने अपने अच्छे कार्यों से वहां के व्यक्तियों को संतोष दिया है। कार्य के साथ-साथ आज की ऐसी अपेक्षा है कि वहाँ कुछ ऐसे कार्यकर्ता तैयार हो सकें जिनसे आगे की गतिविधि सुचारूरूप से चालू रह सके। यदि ऐसा होता है तो चातुर्मास के पश्चात् भी सप्ताह या महीने में एक बार सभी भाई-बहिन इकट्ठे होकर धर्म की आराधना कर सकते हैं, सामायिक आदि सामूहिक अनुष्ठान चल सकते हैं। यदि ऐसी प्रेरणा साध्वियों के द्वारा निरंतर मिलती रहे तो यह काम यथासंभव हो सकता है।

राजलदेसर — **युवाचार्य महाप्रज्ञ**

27.09.1993

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकुमारी आदि से सुखपृच्छा। प्रसन्न रहना, स्वास्थ्य ठीक होगा। शांतिपूर्ण सहवास के लिए ध्यान, स्वाध्याय, अनुप्रेक्षा का सम्यक् प्रयोग करना। सिरदर्द न हो, उसके लिए तनाव-विसर्जन भी करना जरूरी है। दिन में दो बार पन्द्रह-पन्द्रह मिनट कायोत्सर्ग का प्रयोग करें।

ज्योति-केन्द्र पर तथा पूरे ललाट पर सफेद रंग का ध्यान 10 मिनट, धीरे-धीरे बढ़ाएँ।

आपस में पारस्परिक सौहार्द और अनाग्रह का भाव बढ़े, यह सब के लिए जरूरी है।

2038, फाल्गुन कृ. 10 — **युवाचार्य महाप्रज्ञ**
श्रीडूंगरगढ़

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकुमारीजी ने यहाँ से विहार करते समय उल्लासनगर जाने की भावना व्यक्त की थी, अब वहां पहुंच रही हैं। उल्लासनगर के श्रावक नारायण भाई आदि आए हैं, उनकी भावना को ध्यान में रखकर आचार्यवर ने वहां रहने का निर्देश दिया है। वहीं रहकर अच्छा काम करें, सब श्रावकों को संभालें, अधिक प्रेरणा दें, नये लोगों को भी मार्ग दिखाएं, जिससे उल्लासनगर का और वातावरण अच्छा बने।

दिनांक : 06.03.1993 — **युवाचार्य महाप्रज्ञ**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी सूरजकुमारीजी (जयपुर) !

1. समय का सम्यक् नियोजन हो, पथ का विकास करों।
2. चित्त की निर्मलता के लिए बार-बार 'चंदेसुनिम्मलयरा' इस गाथा का ध्यान करो।
3. अंतर्दृष्टि को विकसित करने के लिए 'ऊँ अर्हम्' तथा 'सिद्धा', इस मंत्र का जप करो।

जै.वि.भा., — **युवाचार्य महाप्रज्ञ**
लाडनूँ

साध्वी सूरजकुमारीजी (जयपुर)

शासन-विकास के लिए सोचने और कार्य करने में तुम्हारी शक्ति लगती रही है। वह अब भी लगनी चाहिए। उसके साथ-साथ आत्मनिरीक्षण का अभ्यास बढ़ना चाहिए।

हमारा विश्वास है, निरीक्षण करने वाला अध्यात्म की ऊँचाई पर पहुंच सकता है। दृढ़-संकल्प और मनोबल के साथ इस दिशा में प्रस्थान हो, यह बहुत कल्याणकारी होगा।

जै.वि.भा., — **युवाचार्य महाप्रज्ञ**
लाडनूँ

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकंवरजी आदि साध्वियाँ बम्बई में कार्य कर रही हैं। बम्बई विशाल नगर है। आधुनिकतम नगर है। वहाँ कार्य भी आधुनिक ढंग से करना है। बच्चों में संस्कार आए। बड़ों में धर्म की सम्यक् आराधना चले, इस दिशा में कार्य चलाती रहें। वहाँ और अधिक व्यवस्थित रूप से कार्य चले। अणुव्रत का कार्य नियोजित रूप से चलना चाहिए। समणी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अक्षयप्रज्ञा आदि चार समणियाँ वहाँ आ रही हैं, उनका ठीक उपयोग हो, ऐसी योजना बनानी है। बम्बई के प्रत्येक क्षेत्र, उपनगर में जहां समाज के परिवार हैं, वहां स्पर्श हो जाए। केवल-दो-चार दस घण्टे का स्पर्श नहीं, कुछ दिन रहकर संस्कार दिया जाए, ऐसी योजना बननी चाहिए। साध्वियां प्रत्येक क्षेत्र में, सुदूर कोनों में एक वर्ष में शायद नहीं जा सकतीं, वहाँ समणियों की यात्रा अवश्य हो, ऐसी प्रक्रिया हो, जिससे सबको इस वर्ष संभाल लिया जाए। सब खूब प्रसन्नता से कार्य करें।

श्रीडूंगरगढ़ — **आचार्य महाप्रज्ञ**
01.04.1993

साध्वी सूरजकुमारीजी !

बम्बई में अच्छा कार्य करना। सुना है, कुछ अग्रवाल परिवार निकट आ रहे हैं। उन्हें प्रेरित करना। कर्मणा जैन का कार्यक्रम आगे बढ़े, इस दिशा में सजग रहना है।

ग्रीन हाऊस, — **आचार्य महाप्रज्ञ**
जयपुर

साध्वी सूरजकुमारी जी!

सिवांची-मालाणी का संघ आया। वहाँ चातुर्मास की काफी प्रार्थना की। सबमें बड़ा उत्साह है। सभी सिंघाड़ों ने अच्छे वातावरण का निर्माण किया है। ध्रुवयोग की साधना चले और सभी साध्वियाँ सौहार्दपूर्ण वातावरण में चित्त-समाधि का अनुभव करें।

सूरत — **आचार्य महाप्रज्ञ**
दिनांक : 20.01.2003

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी सूरजकुमारीजी (जयपुर) का ऑपरेशन हो गया होगा। अच्छी तरह पूरा उपचार हो जाए। खूब मनोबल रखें। जप का प्रयोग करते रहें। साध्वी कमलप्रभाजी का सिंघाड़ा और उनकी सहवर्ती साध्वियों का योग उनकी चित्त-समाधि में सहयोगी बन सकेगा।

सरनाबड़ा — **युवाचार्य महाश्रमण**
दिनांक : 19.04.2002

साध्वी सूरजकुमारीजी (जयपुर) वेदना को निर्जरा मानकर सहन करें। जितना सम्भव हो उतना उपचार करा लें। जप का प्रयोग करती रहें।

सरदारशहर — **युवाचार्य महाश्रमण**

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी इन्दौर चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर बम्बई पहुँच गई हैं। अभी शायद उल्लासनगर प्रवास कर रही हैं। आपका चातुर्मास मलाड घोषित हुआ है। बम्बई के कई उपनगर चातुर्मास की दृष्टि से अच्छे उपयोगी हैं। उल्लासनगर के लोग तो वैसे ही आपको याद करते रहते हैं। आपके मन में भी उन लोगों को संभालने की तीव्र भावना थी। गुरुदेव ने कृपा कराई है तो अब पूरा काम करें। किन-किन क्षेत्रों में कैसा काम करना है, दोनों सिंघाड़े मिलकर अच्छे ढंग से योजना बना ले।

इस बार परमाराध्य आचार्य प्रवर ने साध्वीश्री कमलूजी को 'शासनगौरव' सम्बोधन से सम्बोधित किया, यह साध्वी-समाज के लिए गौरव की बात है। आपके लिए तो विशेष गौरव की बात है। साध्वी कमलूजी का स्वास्थ्य ठीक है। साध्वीश्री रायकुमारीजी, जयकंवरजी, कुन्दनरेखाजी, ध्यानप्रभाजी, सभी साध्वियाँ स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें, परम समाधि में रहें, विकास के नए रास्ते खोलते रहें।

सरदारशहर — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
दिनांक : 02.04.1993

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

आदरास्पद साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (जयपुर)

परमाराध्य आचार्यवर के सक्षम, कुशल और जागरूक नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ और विशेष रूप से साध्वी समाज जो गति-प्रगति कर रहा है, वह समाज के लिए गौरव की बात है। जैन मुनि की चर्या और यात्रा वर्तमान परिस्थितियों में काफी कठिन हो रही है, फिर भी हमारी साध्वियाँ सहजता और प्रसन्नता के साथ सब कठिनाइयों को पार कर अपने गंतव्य तक पहुंचती हैं। अपने संघ के कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पूरा परिश्रम करती हैं। अपनी साधना और अध्ययन में काफी समय लगाती हैं। इन सबके बावजूद आचार्य प्रवर की आकाँक्षाओं के अनुरूप कार्य करने के लिए हमें और अधिक सुनियोजित ढंग से काम करना होगा।

यह वर्ष भिक्षु-चेतना-वर्ष है। हमारे अपने जीवन में और समाज में आचार्य भिक्षु की चेतना को जगाना है। इस संबंध में समणी मधुरप्रज्ञाजी से विस्तार से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। 20वीं सदी के केवल सात वर्ष बाकी रहे हैं। हम परमाराध्य आचार्यवर के मंगलमय नेतृत्व में नए दर्शन, नई क्रान्ति और नई चेतना के साथ 21वीं सदी में प्रवेश करना चाहते हैं। इस संदर्भ में हम सब सोचें, चिन्तन करें और आवश्यक लगे तो अपने चिन्तन को केन्द्र तक पहुँचायें।

सब साध्वियाँ अपनी साधना और ज्ञानाराधना के प्रति सतत जागरूक रहें।

राजलदेसर — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

दिनांक : 13.08.1993

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

:: संदेश ::

साध्वी सूरजकुमारी (जयपुर) मलाड (बम्बई) में अच्छा कार्य किया है। उन्होंने अपने अथक परिश्रम से निष्ठापूर्वक कार्य किया है। आज के परिवेश को देखते हुये बम्बई में जैन-जीवनशैली की अत्यधिक आवश्यकता है। आज का तेरापंथ समाज जैन जीवन को छोड़कर दूसरे प्रभाव में बह रहा है। उसका कुछ भी कारण हो सकता है पर, हमारा चिंतन है कि हम तेरापंथ के सदस्यों को जैन-जीवन-शैली के प्रति आकर्षण पैदा करें। उसके लिए अपेक्षा है कि साध्वियों के द्वारा समय-समय पर आज के युवकों को जैन-जीवन-शैली से परिचित-अवगत कराया जाए, यदि साध्वियाँ इस दिशा में कुछ कार्य करें तो यह काम और अधिक सरल हो सकता है।

राजलदेसर — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
दिनांक : 28.09.1993

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकुमारीजी (जयपुर) घुटनों में दर्द व अनेक परेशानियों के बावजूद साहस कर पूना से चली और औरंगाबाद पहुंचीं। साध्वी कुन्दनरेखा के भी काफी गड़बड रही। खैर, अब तो लक्ष्य तक पहुँच गई हैं। साधना, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता रखें। औरंगाबाद अच्छा क्षेत्र है, जमकर ठोस काम करें। जैन शासन, तेरापंथ की प्रभावना करें। एक चातुर्मास में इतनी खुराक दें कि वापिस चातुर्मास न हो तब तक खुराक चलती रहे। जैसे तत्त्व ज्ञान, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि के कार्यक्रमों को व्यवस्थित रूप से बना लें। औरंगाबाद में नई चेतना की लहर आए ऐसा प्रयत्न करना है। शेष सारे संवाद समणी परमप्रज्ञा आदि से सुन ही लेंगी।

लाडनूँ — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
दिनांक : 26.05.1995

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकुमारीजी (जयपुर),

सपने देखना, योजना बनाना और पुरुषार्थ करना, यह कला जीवन का रेखाचित्र है। आशा, उत्साह और नियमितता उसके आकर्षक रंग हैं। जीवन के गुलाब को सदा खिला हुआ रखो। उसकी सौरभ का अनुभव करो और निरन्तर धर्मसंघ की सेवा करने का गौरव अनुभव करो।

लाडनूँ — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
दिनांक : 15.01.1990

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकुमारीजी (जयपुर),

जयपुर में लम्बा प्रवास करके भी पाँव को अभी तक ठीक नहीं किया है। एक्सरसाइज और संकल्प का प्रयोग करके स्वस्थ बनें। चातुर्मास के बाद उपनगरों में अच्छा काम हो रहा है। शिविर भी कार्यकारी रहे हैं। जहाँ-जहाँ रहना हो, परिवारों की विशेष संभाल की जाए। उनमें संघीय संस्कार भरने और तत्त्वज्ञान सिखाने का लक्ष्य रखा जाए। सब साध्वियां समाधिस्थ रहें।

जै.वि.भारती — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
दिनांक : 04.02.1999

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

साध्वी सूरजकुमारीजी (जयपुर)

आपमें उत्साह है और काम करने की लगन है। नई स्फुरणा से आप्लावित रहो। साधना, संघ–प्रभावना और अन्तर्मुखता में सदा गतिशील रहो। आत्मविश्वास के दीवट पर विकास का दीया प्रज्ज्वलित कर पथ का तिमिर दूर करती रहो।

लाडनूँ — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
दिनांक : 18.02.1996

आदरास्पद साध्वीश्री सूरजकुमारीजी !

सादर वन्दना व सुखपृच्छा! आपको अचानक रुकना पड़ा। साध्वी लावण्ययशा का ऑपरेशन हुआ। आप तीनों साध्वियों ने विवेक व साहस का परिचय दिया। आचार्यवर ने कृपा करके कुछ समय के लिए यहाँ साध्वियों को रखाया, फिर भी आपकी अवस्था और अस्वस्थता देखते हुए काफी संकड़ाई रही। वैसे आचार्यवर आपको जल्दी ही बुलाना चाहते है, पर अंजल-पाणी का जैसा योग होता है...

अब आचार्य प्रवर के निर्देशानुसार साध्वी चित्रलेखाजी व श्रुतयशाजी यहां से विहार कर मेड़ता पहुँच रही हैं। दोनों साध्वियाँ उत्साह से आ रही हैं। आप इन्हें साथ लेकर जल्दी से जल्दी गुरुदेव के दर्शन कर लें।

साध्वी रायकुमारीजी, सूरजप्रभाजी व लावण्ययशाजी से यथायोग्य वन्दना व सुखपृच्छा! साध्वी लावण्ययशाजी का स्वास्थ्य ठीक है, जानकर प्रसन्नता हुई। मनोबल बनाए रखें और गुरुदर्शन की उमंगों में जल्दी से जल्दी विहार करें। मर्यादा महोत्सव के सारे संवाद साध्वीद्वय से सुनें। शेष शुभम्।

जोरावरपुरा — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
21 फरवरी, 2001

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

आदरास्पद साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (जयपुर)

आप 'शासनगौरव' साध्वीश्री कमलूजी की सहोदरी हैं। आपने अब तक अच्छा काम किया है। आप पर, अब अवस्था अपना प्रभाव दिखा रही है। चिन्ता की अपेक्षा नहीं है। अपने दिमाग को निर्भर रखकर, आत्मस्थ बनने का प्रयास करें। अन्तर्मुखता की स्थिति में छोटी-छोटी बातें मन को प्रभावित नहीं कर पातीं। पूर्ण चित्त-समाधि के लिए मंगल भावना!

टापरा — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

दिनांक : 16.03.2002

।। अर्हम् ।।

आदरास्पद साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (जयपुर)

सादर वन्दना व सुखपृच्छा,

अभी तो सुजानगढ़ में काफी साध्वियाँ हैं। चहल–पहल अच्छी है। आपका मन लग गया होगा। स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि अनुष्ठान नियमित रूप से करती रहें। छोटी साध्वियों के संस्कार निर्माण और जीवन-निर्माण का लक्ष्य रहे। सब साध्वियों से यथायोग्य वन्दना व सुखपृच्छा !

साध्वी निर्वाणश्री व पीयूषप्रभाजी के साथ जो पन्नियाँ भेजी गई थीं, उन्हें साध्वी संगीतश्री जी के साथ लाडनूँ भेज दें। शेष शुभम्।

श्रीडूंगरगढ़ — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

16.03.2005

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

आदरास्पद साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (जयपुर)

विक्रम संवत् के अनुसार आज नया वर्ष है। नए वर्ष के उपलक्ष्य में आध्यात्मिक विकास के लिए विशेष संकल्प करें। ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना में सतत जागरूकता बनी रहे। शरीर पर अवस्था का प्रभाव होने पर भी मनोबल, संकल्पबल और धृतिबल कमजोर न हो। स्वाध्याय एवं जप का विशेष प्रयोग करें। आत्मस्थ एवं समाधिस्थ रहें।

बीदासर — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
चैत्र शुक्ला वि.सं. 2066

।। अर्हम् ।।

साध्वीश्री रायकुमारीजी,

आपके पैरों में वेदना थी ही, अब ज्ञात हुआ है कि पित्ताशय में पथरी हो गयी है। साध्वीश्री कमलूजी के भी यही समस्या हुई थी। इस समस्या से निजात पाने के लिए आपको भिन्न समाचारी में जयपुर ले जाने और चिकित्सा कराने की व्यवस्था सोची गई है। समणी निर्मलप्रज्ञाजी आदि बीदासर पहुँच रही हैं। गुरु कृपा से सब ठीक होगा, ऐसा संकल्प करें। साध्वीश्री सूरजकुमारीजी किसी प्रकार की चिंता न करें। जप, संकल्प और अनुप्रेक्षा का प्रयोग चलता रहे।

देसूरी — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
दिनांक : 09.04.2007

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

आदरास्पद साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (जयपुर)

आप भगिनीत्रयी समाधिकेन्द्र, बीदासर में साधनारत हैं। साध्वी मनीषाप्रभा सेवा में हैं। समाधि-केन्द्र में सेवा देने वाली साध्वियों का सुयोग है। आप निश्चिन्तता के साथ अपनी साधना में लीन रहें। संघ हमारे लिए त्राण है, शरण है। आपके लिए यह समय अन्तर्मुखी बनने का है। आगम-स्वाध्याय ऐसा उपाय है, जो साधक को अन्तर्मुखता की दिशा दे सकता है। आप सब स्वस्थ, प्रसन्न और समाधिस्थ रहें।

आसीन्द — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
दिनांक : 13.02.2008

।। अर्हम् ।।

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (जयपुर)

सादर वन्दना व सुखपृच्छा,

आप पंख लगाकर उड़ना चाहती हैं, गुरु चरणों में पहुँचना चाहती हैं। आप अपने अन्तःकरण में गुरु की प्रतिमा स्थापित करें और अपने आपको गुरु की मंगल सन्निधि में अनुभव करें। आत्मस्थ बनें, समाधि में रहें।

छापर
दिनांक : 21.11.2009 — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

आदरास्पद साध्वीश्री सूरजकुमारीजी, पानकुमारीजी, रायकुमारीजी, मनीषाप्रभाजी!

यथायोग्य वन्दना व सुखपृच्छा! आपकी साधना अच्छे ढंग से चलती रहे। जप, ध्यान, स्वाध्याय आदि अनुष्ठानों में समय का समुचित नियोजन करें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। चित्त समाधि बनी रहे। यही मंगल कामना है।

श्री डूंगरगढ़ — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

दिनांक : 25.01.2010

।। अर्हम् ।।

शासनश्री साध्वीश्री सूरजकुमारीजी !

समयं गोयम मा पमायए – इस सूक्त को स्मृति में रखकर आपने अपने जीवन में बहुत वर्षों तक उत्साह के साथ काम किया। आपका उत्साह जीवन के दसवें दशक में भी मन्द नहीं है, पर शरीरबल क्षीण हो रहा है। ऐसे समय में आप अपनी चेतना को अन्तर्मुखी बनाने के लिए जागरूक रहें। आगम–स्वाध्याय, जप, ध्यान, कायोत्सर्ग आदि के माध्यम से आत्मा को भावित करती रहे। आत्मा और शरीर की भिन्नता का अनुचिन्तन एवं अनुभव आत्मरमण का श्रेष्ठ उपाय है। निरन्तर चित्तसमाध का अनुभव करती रहें, यही कामना है।

बिदासर — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

दिनांक : 28.11.2013

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

।। अर्हम् ।।

आदरणीय साध्वीश्री पानकुमारीजी, रायकुमारीजी, तथा साध्वी मनीषाप्रभाजी,

आप लोगों ने शासनश्री साध्वीश्री सूरजकुमारीजी की समाधि का ध्यान रखते हुए बहुत सेवा की। उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने का प्रयास किया। उनकी मनोभावना को पूरा करने के लिए जागरूक रहे। आखिर उन्हांने अनशन पूर्वक पार्थिवदेह का त्याग कर दिया। यह साधु जीवन की साधना की सफलता का प्रतीक है। गुरुकृपा से समय–समय पर अन्य साध्वियों की सेवा का भी अच्छा योग मिला। अब आप लोग धैर्य और मनोबल के साथ साधना को आगे बढाएं। साध्वी मनीषाप्रभाजी ने सेवा का लाभ उठाकर अच्छी निर्जरा की। सबकी समाधि की मंगल कामना।

दिल्ली — **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

दिनांक : 29.09.2014

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परिशिष्ट तालिका

साध्वी सूरजकुमारीजी की चातुर्मास तालिका

अंक	वि. सं.	चातुर्मास
1	1990	सुजानगढ
2	1991	जोधपुर
3	1992	उदयपुर
4	1993	बरवतगढ़
5	1994	बाव
6	1995	ब्यावर
7	1996	जोधपुर
8	1997	जयपुर
9	1998	सरसा
10	1999	लाडनूं
11	2000	सदारशहर
12	2001	गंगापुर
13	2002	सरसा
14	2003	जगरावा
15	2004	बीकानेर
16	2005	दोंडाईचा
17	2006	शहादा
18	2007	सूरत

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

19	2008	जयसिंहपुर
20	2009	गंगाशहर
21	2010	उदयपुर
22	2011	नोहर
23	2012	सार्दुलपुर
24	2013	थामला
25	2014	पुर
26	2015	भगवतगढ
27	2016	आदर्शनगर
28	2017	भिवानी
29	2018	कांकरोली
30	2019	देवगढ
31	2020	जयपुर
32	2021	बाव
33	2022	गोगुंदा
34	2023	थामला
35	2024	पेटलावाद
36	2025	उल्लासनगर नं. 4 में विशेष प्रार्थना
37	2026	कुर्ला (मुम्बई)
38	2027	उल्लासनगर नं. 4 में केवल सिंधी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

39	2028	लुधियाना
40	2029	सूरत
41	2030	लाडनूं सेवा केन्द्र
42	2031	जयपुर शहर
43	2032	भीलवाड़ा
44	2033	हिसार
45	2034	बोरावड़
46	2035	ब्यावर
47	2036	जयपुर सी–स्कीम
48	2037	हिसार
49	2038	भिवानी
50	2039	सरसा
51	2040	जोजावर
52	2041	राजलदेसर सेवा केन्द्र
53	2042	कालु
54	2043	नोखामण्डी
55	2044	दिल्ली
56	2045	तोषाम
57	2046	लाडनूं योगक्षेम वर्ष
58	2047	हांसी
59	2048	जिन्द

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

60	2049	इन्दौर
61	2050	मालाड (मुम्बई)
62	2051	पुणे सिटी
63	2052	औरंगाबाद
64	2053	हिसार
65	2054	सरसा
66	2055	जयपुर शहर
67	2056	जयपुर सी–स्कीम
68	2057	अजमेर
69	2058	बीदासर आचार्यश्री के साथ
70	2059	जोधपुर
71	2060	आसोतरा
72	2061	सिरीयारी
73	2062	सुजानगढ
74	2063	सुजानगढ
75	2064 से 2071	बीदासर स्थिरवास

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शासनश्री साध्वी सूरजकुमारीजी 'जयपुर'

जीवन वृत

जन्म	:	वि.सं. 1977 फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा कोलकाता (होली)
दीक्षा	:	वि.सं. 1990 आषाढ़ शुक्ला एकम लाडनूं (चंदेरी) अष्टमाचार्यश्री कालूगणिराज के करकमलों से
गुरूकुलवास	:	तीन वर्ष
पिता	:	श्रीमान् मोतीलालजी बांठिया
माता	:	'प्रियधर्मिणी' श्रीमती मनसुखीदेवी बांठिया
भ्राता	:	'शासनसेवी' पन्नालालजी बांठिया, धनराजजी बांठिया
भगिनी	:	'शासनगौरव' साध्वी कमलूजी (निष्काम सेवी), साध्वी पानकुमारीजी, 'शासनश्री' साध्वी रायकुमारीजी, 'श्रद्धानिष्ठ श्राविका' भंवरीदेवी।
अग्रगण्या	:	वि.सं. 2010 राणावास मर्यादा महोत्सव के शुभ अवसर पर आचार्यश्री तुलसी द्वारा निर्युक्ति।
'शासनश्री' अलंकरण	:	महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा प्रदत वैशाख शुक्ला दशमी 2012, तृतीय पट्टोत्सव बालोतरा।
शासनकाल	:	अष्टमाचार्यश्री कालूगणिराज, नवमाचार्यश्री तुलसी दसमाचार्यश्री महाप्रज्ञ, ग्यारमाचार्यश्री महाश्रमण। साध्वीप्रमुखा कानकुमारीजी, साध्वीप्रमुखा झमकूजी साध्वीप्रमुखा लाडांजी, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी।
विशेष	:	1) 90 वर्ष की उम्र में हजार गाथाओं, आगम स्वाध्याय। 2) 82 वर्ष का संयम पर्याय। 3) उल्लासनगर बम्बई को आदर्शनगर नवीन क्षेत्रों को बनाने का अथक प्रयास।
यात्रा	:	राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश।
स्वर्गवास	:	वि.सं. 2071, आसोज शुक्ला तृतीय (नवरात्र) बीदासर, आधा घंटा निविहार अनशन, आधाघंटा चौविहार अनशन में समाधिमरण।

ISBN - 81-7195-287-9

₹ 80.00

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org